Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविंद रजनीश

रैदास रचनावली

R
0८१
गोवि-रै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

141341

रैदास रचनावली

संत कवि रविदास की रचनावली पाठ-भेद के विवरण के साथ समग्र रूप से अभी तक नहीं छपी थी। व्रजलाल वर्मा ने पहल जरूर की थी, वैसे बहुत पहले उनकी रचनाओं का संग्रह छपा था। डॉक्टर गोविंद रजनीश ने बड़े परिश्रम से बाद में प्राप्त पाठ-ग्रंथों का अनुशीलन करके रैदास रचनावली का पाठ तैयार किया। इसके साथ ही उन्होंने रैदास के पूर्ववर्ती संत कवियों की रचनाओं के साथ तुलनात्मक अनुशीलन भी प्रस्तुत किया। डॉक्टर रजनीश ने कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिए हैं जिससे इस संतवाणी को समझने में कठिनाई न हो।

मैं रजनीश जी को उनके परिश्रम के लिए साधुवाद देता हूँ। इन्होंने ज्ञात पदों का ही संकलन नहीं किया वरन् अब तक अप्राप्त पदों को भी सम्मिलित किया। इस प्रकार उनकी भूमिका बड़ी विशद है और उसमें न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से पूरी जानकारी दी गई है अपितु उसके साथ नामदेव व कबीर के साथ संत रैदास की तुलना भी उपपत्तिपूर्वक की गई है। इसके प्रकाशन से संत-साहित्य के अध्येताओं का बड़ा उपकार होगा।

—विद्यानिवास मिश्र

ISBN—81-88466-28-X

मूल्य : रु० 200.00

141341
विद्यालय
त नं०
नीश
नावली
दिनांक
सदस्य संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 052 ...गायि-2 आगत संख्या 141341

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

141341

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास रचनावली

141341

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरसत्य प्रकाशन
प्रीत विहार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास रचनावली

संपादन

डॉ० गोविंद रजनीश

141341

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ISBN—81-88466-28-X

R
0-c9
गोवि- रै

© डॉ० गोविंद रजनीश

प्रकाशक
अमरसत्य प्रकाशन
109, ब्लाक बी, प्रीत विहार
दिल्ली-110092

संस्करण
2006

आवरण
रवि शर्मा

मूल्य
दो सौ रुपये

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

RAIDAS RACHANAVALI (Hindi)
Ed. by Dr. Govind Rajneesh
Price : Rs. 200.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदावली की प्रस्तावना

प्रारंभ में रैदास की रचनाएँ दो ग्रंथों में संकलित एवं प्रकाशित थीं—1. गुरु ग्रंथ साहिब, 2. रैदास की बानी। 'रैदास की बानी' का प्रकाशन सन् 1930 में वेलवीडियर प्रेस, प्रयाग से हुआ था। इसका बारहवाँ संस्करण सन् 1997 में प्रकाशित हुआ। इसके पाठ न तो प्रामाणिक थे और न विश्वसनीय। हस्तलिखित काव्य-संग्रहों और 'गुरु ग्रंथ साहिब' के अनेक छंद इसमें बदली हुई भाषा और भ्रष्ट पाठ के साथ संकलित हुए थे। संत-काव्य के मुद्रित संग्रहों तथा अन्य ग्रंथों में 'रैदास की बानी' से ही पाठ दिए जाते रहे थे।

इसमें रैदास या रविदास-रचित कुल 86 छंद दिए गए हैं, जिनमें छंद-संख्या 38 व 87 एक हैं और 31 छंद ऐसे हैं जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' में मिलते हैं। 43 छंद हस्तलिखित संत-काव्य-संग्रहों तथा रज्जब की 'सर्वंगी' में द्रष्टव्य हैं।

'आदि ग्रंथ' या 'गुरु ग्रंथ साहिब' में रैदास के 40 पद दिए गए थे। 'गुरु ग्रंथ साहिब' का संकलन संवत् 1661 (सन् 1604) में सिक्खों के पंचम गुरु अर्जुनदेव ने श्रमपूर्वक किया था। सिक्ख गुरुओं की वाणी के अतिरिक्त अन्य प्रसिद्ध भक्तों की ऐसी वाणियाँ भी इसमें संकलित कर ली गई थीं जो सिक्ख धर्म की मान्यताओं, सिद्धांतों और दार्शनिक प्रतिपत्तियों के अनुकूल पड़ती थीं। गुरु अर्जुनदेव ने इन संतों के अनुयायियों को बुलाकर इनकी श्रेष्ठ रचनाओं को सुना और उनमें से उन रचनाओं को चुना जो सिक्ख धर्म की तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक भावनाओं से साम्य रखती थीं। इसलिए रैदास की समग्र रचनाओं में से कुल 40 रचनाएँ चुनी गईं। इन पदों का संकलन स्मृतियों के सहारे हुआ। वाचिक-परंपरा के कारण इनकी भाषा और चरण-क्रम परिवर्तित हो गए थे। इन छंदों में अनेक पंजाबी-लहजे और उच्चारण-विकार भी आ गए थे।

यह सुनिश्चित है कि सन् 1604 के पश्चात् इस संग्रह में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था; क्योंकि संग्रह के पश्चात् भाई बुड्ढा और भाई गुरुदास के परामर्श से 'गुरु ग्रंथ साहिब' की प्रति को अमृतसर के हरमंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया गया था। गुरु अर्जुनदेव के निर्देश पर इसे गुरुओं के समान आदरणीय और पूज्य माना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। इसलिए 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित छंद अन्य संग्रहों की अपेक्षा प्राचीन एवं विश्वसनीय माने जाते हैं।

प्रस्तुत 'रैदास रचनावली' से पूर्व रैदास के पदों के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनका विवरण आगे दिया गया है। इन संग्रहों की निम्न सीमाएँ थीं—

1. इनमें राजस्थानी व 'पंजाबी परंपरा की प्राचीनतम पांडुलिपियों को आधार नहीं बनाया गया था।
2. पाठ-विज्ञान के आधार पर प्रामाणिक पाठ-निर्धारण की अपेक्षा मात्र संग्रह या संकलन करना संपादकों का ध्येय रहा था।
3. इनमें दिए गए पाठ भ्रष्ट, विकारयुक्त, तत्समीकृत तथा आधुनिक खड़ी बोली की संरचना के समीप थे। फलतः रैदास की भाषा का मूल व यथार्थ रूप सामने नहीं आ सका था।
4. 'गुरु ग्रंथ साहिब' के छंदों में क्रम-विपर्यय था। 'रहाउ' के चरण शीर्ष पर आने चाहिए थे जबकि पद के अन्य चरण बाद में। वाचिक-परंपरा के कारण कुछ अंश छूट भी गए थे। कुछ के शब्द व वाक्य बदल गए थे ।
5. रचनाकार की मूल रचना तक पहुँचने के लिए रैदास के पदों का पुनर्संपादन अनिवार्य था।

इन्हीं कारणों से शुद्ध तथा विश्वसनीय पाठ से युक्त 'रैदास रचनावली' की आवश्यकता का अनुभव किया गया।

इस संपादन के लिए 42 पांडुलिपियाँ एकत्र की गईं, जिनमें से 7 श्रेष्ठ व प्राचीन पांडुलिपियों का चयन करके उन्हें संपादन का आधार बनाया गया। इन प्रतियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

1. पांडुलिपि सं० 992—इसमें दादूदयाल, नामदेव, कबीर, रैदास, हरदास, धन्ना, पीपा, सेन, गरीबदास, बखना और बनवारीदास की वाणियाँ संकलित हैं। यह वाणी-संग्रह संवत् 1762 का है। इस संग्रह के पाठ अन्य प्रतियों की अपेक्षा शुद्ध और प्रामाणिक हैं। इसमें रैदास के 70 पद (ग्रंथ में यह संख्या 71 दी हुई है) और दो साखियाँ दी हुई हैं। इस संग्रह के प्रामाणिक होने की पुष्टि इस बात से भी होती है कि इसमें गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमर, दादूदयाल, गरीबदास और बनवारीदास की निर्वाण-तिथियाँ दी गई हैं जो कि परिशुद्ध हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबत ॥ 1596 ॥ असू बदी 10 श्री बाबा नानकदेव जी समांणें ॥
संबत ॥ 1609 ॥ चेत सुदी 4 ॥ श्री सतगुर अंगद जी समांणें ॥
संबत ॥ 1631 ॥ भादौ सुदी 15 श्री सतगुर अमर जी समांणें ॥
चलत जोती जोति समांण का लिखतं ॥
संबत ॥ 1660 ॥ मास जेठ बदी बार ॥ थावर दिन पहर 1 ॥ चढ़तै श्री स्वामी दादूदयाल जी समांणें ।
संबत ॥ 1693 ॥ मास पोस बदी सन ब्रिसपतिवार।
श्री स्वामी गरीबदास जी समांणें ॥ गरीबौं दुख पाया।
संबत ॥ 1700 ॥ साढ़ सुदी 6 ॥ वार सोमवार श्री गुरुदेव बनवारी दास जी समांणें। सिष अनाथ हुए। ज्यूं आग्या।

निर्वाण-तिथियों की तरह जन्म-तिथियों को इस प्रकार अंकित करने की परंपरा नहीं मिलती है। निर्वाण-तिथि को अंकित करने के दो कारण होते थे—एक तो यह कि वह सबको सुलभ होती थी, दिवंगत संत के सभी निकटवर्ती और शिष्य; जो उसके स्थान पर विद्यमान होते थे, उसके साक्षी होते थे; दूसरे, उस तिथि को संप्रदाय में गुरु का स्थान कोई शिष्य लेता था।

इस ग्रंथ की पुष्पिका है—"गुर बनवारी सुमरि नित ॥ दादू सतगुर गाइ ॥ परमेसुर भजि परम गुर ॥ आदू कू सुख थाइ ॥ पोथी संपूरण भवेतः संबत 1762 लिखतं सुथानिक कथौड़ा ब्रषे मास क्वार बदी 9 ॥ बार सुकरवार ॥ पोथी पढ़ै गुणैं तिसकौं रांम रांम डंडौत ॥"

"लिखतं बाबा गंगा राम जी को सिखि प्रेमदास उतराधा ॥"

बनवारीदास दादू जी के शिष्य थे और हिसार जिले के रतिया ग्राम में रहते थे, जहाँ पर इनकी समाधि भी है। ये दादू पंथ की उत्तराधा शाखा के महंत थे। प्रतिलिपिकार प्रेमदास ने भी अपने को 'उत्तराधा' कहा है।

बनवारीदास की निर्वाण-तिथि सं० 1700 है, जो उपर्युक्त सं० 1762 की प्रति के अंत में दी हुई है। इस प्रति की विशेषता यह है कि इसमें दादू और कबीर की वाणियाँ समान रूप से विभिन्न अंगों में विभाजित हैं और दादूदयाल का निर्वाण संवत् 1660 में हुआ था; अतः नामदेव, कबीर, रैदास और दादूदयाल की वाणियों का पाठ संवत् 1625-30 के आस-पास का रहा हो तो कोई आश्चर्य नहीं होगा।

प्रस्तुत रचनावली में इसी प्रति के पाठ को वरीयता देते हुए अन्य प्रतियों के पाठ से मिलान किया गया है। राजस्थानी और पंजाबी शाखाओं की समस्त प्रतियों से इसका पाठ सर्वाधिक प्रामाणिक और प्राचीन है। तुलनात्मक दृष्टि के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचनावली में वे पाठ भी दिए गए हैं जो 'गुरु ग्रंथ साहिब' में मिलते हैं।

2. पांडुलिपि सं० 1059—यह दादू पंथी प्राचीनतम संग्रह है जो वर्तमान में आगरा के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी विद्यापीठ में उपलब्ध है। इसके प्रारंभिक और अंतिम पृष्ठ नहीं हैं, लेकिन अक्षरों की प्राचीन बनावट और लेखन-पद्धति से यह 17वीं शती के प्रारंभ की रचना प्रतीत होती है जिसे रज्जब ने अपने किसी शिष्य से तैयार कराया था। इसमें रैदास के 43 छंद दिए गए हैं। इनमें से 42 छंद पांडुलिपि संख्या 992 में मिलते हैं। केवल एक छंद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में मिला है। इसे रचनावली में छंद संख्या 34 पर दिया गया है।

इसमें प्रारंभ का छंद-क्रम हस्तलेख सं० 992 से साम्य रखते हुए भी आगे चलकर भिन्न हो गया है। इस पांडुलिपि का प्रयोग पाठांतरों के लिए किया गया है।

3. सर्वंगी—संत रज्जब (संवत् 1624-1746) द्वारा संकलित संप्रदाय-निरपेक्ष इस हस्तलिखित ग्रंथ का प्रारंभ 'राम जी सति ॥ गुरदेव दादू प्रसादति। ग्रंथ सरबंगी' से हुआ है। प्रारंभ में गुरु के रूप में दादूदयाल की वंदना की गई है। गुरुदेव का अंग, गुरुमुखि कसौटी का अंग, सुमिरन का अंग, नाम महिमा का अंग, करुण विनती का अंग, ग्यान की आँधी, पतिब्रता का अंग, परचै का अंग, माया का अंग आदि 47 शीर्षकों के अंतर्गत अनेक संत कवियों की रचनाओं को संकलित किया गया है।

यह 71 पृष्ठों का ग्रंथ है जिसमें रैदास के 15 छंद दिए हुए हैं। इसका उपयोग पाठांतरों के लिए किया गया है। इसका केवल एक छंद—'सेई मन समझि समरथ सरनांगता' रचनावली में लिया गया है। यह छंद अन्य संग्रहों में नहीं मिलता है।

4. पांडुलिपि सं० 9693—वृंदावन शोध-संस्थान, वृंदावन से प्राप्त इस प्रति में 81 पद व 4 साखियाँ दी हुई हैं। प्रति अत्यंत जीर्ण-शीर्ण है। प्रारंभ और मध्य के कुछ पृष्ठ नहीं हैं। पाठांतरों के लिए इसका उपयोग किया गया है। पुष्पिका न होने से प्रतिलिपि-काल ज्ञात नहीं हो सका है।

5. नराणा (राजस्थान) के दादू-द्वारा से प्राप्त पांडुलिपि 'क' में रैदास के 82 पद व 4 साखियाँ दी हुई हैं। प्रति निर्विकार, स्वच्छ एवं शुद्ध है। इसमें कबीर, दादू, रज्जब, गरीबदास, हरदास तथा अन्य संतों की वाणी भी संगृहीत हैं। पाठांतरों के लिए इस प्रति का उपयोग किया गया है। इसकी पुष्पिका है—"इति श्री पोथी संपूरण भवेत्। संवत् 1831 ॥ बरसे असाढ मासे ॥ सुकल पक्षे तिथि ॥ 13 बार ॥ सुथाने चूरू मध्ये पोथी संपूरण भई ॥ लिखित बाबा जी हदै राम जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोखरै का तिनका सिष पृथीराम तिन पोथी लिखी ॥"

"बाबा जी हृदै रांम जी तिनका सिष पृथी रांम खांनेजाद गुलाम। पोथी बाचै तिनकौं प्रणाम ॥"

हस्तलिखित ग्रंथों में यह रैदास के सर्वाधिक छंदों वाली प्रति है।

6. बसना 16, पांडुलिपि 'ख'—इसकी प्रतिलिपि श्री रामदेव दास जी उत्तराधा द्वारा संवत् 1776 का० कृ० 2, रविवार को साँवली मंडी में पूरी की गई थी। इसमें नामदेव के अतिरिक्त दादूदयाल, कबीर, हरदास, गरीबदास, बखना, जनगोपाल, टीला आदि की रचनाएँ संगृहीत हैं। इसमें रैदास के 71 पद व 2 साखियाँ दी गई हैं। इसकी पुष्पिका है—'पोथी संपूरण भवेत् संबत् 1776 वर्षे कातिग मासे किश्न पक्षे तिथौ 2 बार अैतवार कै दिनि पुस्तक संपूरण भवेत् ॥ परम् परसिद्धि श्री बाबा परमानंद उतराधौ तिनके शिष्य बाबा खिमदास जी ताकै सिष रांमदेव जो बाचै पढै करै बिचार तिसकौं हमारे नमस्कार। भूल चूक छिमां करणी। पुस्तक लिख्या बरष दोइ दिन सात। सुभ स्थाने नगर सांमली मंडी में लिख्या अन्न की मंडी ॥'

7. पांडुलिपि 'ग'—इसके प्रतिलिपिकार कंवलदास हैं जिन्होंने 'संवत् 1924 बार तेरस बीसपतवार' को इस ग्रंथ को राजगढ़ नगर में पूरा किया था। इसकी पुष्पिका है—'संबत 1924 बार तेरस बीसपतवार जेठ बुद तेरस नै संपूरन करी ॥ नग्र राजगढ मधे कंवलदास पठना अरथ ॥'

यह मध्यकालीन संतों की वाणियों का संप्रदाय-निरपेक्ष संग्रह है, जिसमें सभी प्रमुख संतों की रचनाएँ संगृहीत हैं। कंवलदास स्वामी दादूदयाल के शिष्य बनवारीदास उत्तराधा की शिष्य-प्रशिष्य परंपरा में प्रभुदास का शिष्य था। प्रति स्वच्छ व शुद्ध है।

इसमें रैदास के 64 पद व 1 साखी मिली हैं।

प्रकाशित संग्रह

वेलवीडियर प्रेस की 'रैदास वाणी' और 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित पदों के अतिरिक्त रैदास की रचनाओं के निम्न संकलन और प्रकाशित हुए थे—

1. **संत सुधा-सार**—वियोगी हरि द्वारा संपादित इस संग्रह में रैदास के 31 पद व 5 साखियाँ दी हुई हैं। इनको 'गुरु ग्रंथ साहिब' और 'रैदास वाणी' से चुना गया है। इस संपादन का विशेष महत्त्व नहीं है।
2. **संत काव्य**—श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी द्वारा संपादित और परशुराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वेदी द्वारा संशोधित इस संग्रह में मात्र 22 पद दिए गए हैं। ये भी 'गुरु ग्रंथ साहिब' और 'रैदास-वाणी' से चुने गए हैं।

3. **संत रैदास और उनका काव्य**—रामानंद शास्त्री द्वारा संपादित इस संकलन और विवेचन के ग्रंथ में रैदास की कुछ वाणी दी गई है। यह ग्रंथ अब अप्राप्य है। इसके पाठ काफी दोषपूर्ण थे।
4. **संत रैदास : व्यक्तित्व और कृतित्व**—संगम लाल पांडेय द्वारा संपादित इस रचना में रैदास के 107 पद तथा 7 साखियाँ दी हुई हैं। पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए थे। यह रचना भी अप्राप्य हैं। पाठ काफी दोषपूर्ण और भ्रष्ट हैं।
5. **रविदास-दर्शन**—ऐसा उल्लेख मिलता है कि पृथ्वी सिंह आजाद ने 37 उपशीर्षकों के अंतर्गत रैदास की 198 साखियाँ दी थीं। इस संग्रह के लिए मौखिक और लिखित दोनों आधार लिए गए थे। प्रामाणिकता की दृष्टि से रविदास के नाम से संकलित साखियाँ संदिग्ध हैं।
6. **संत रैदास**—डॉ० योगेन्द्र सिंह द्वारा संपादित इस संग्रह में रैदास के 112 पद, 8 साखियाँ तथा 'प्रह्लाद चरित्र' नामक रचना दी गई थी। इस ग्रंथ में पाठालोचन के सिद्धांतों का पूरी तरह पालन नहीं हुआ है। पाठ भी अत्यंत भ्रष्ट हैं।
7. **संत रविदास**—रत्नचंद द्वारा इस संपादन में रविदास या रैदास के 52 पद व 3 साखियाँ दी गई हैं। इसका कोई महत्त्व नहीं है; क्योंकि इसके माध्यम से रविदास की समग्र रचनाएँ सामने नहीं आ सकी हैं।
8. **संत रैदास : विचारक और कवि**—डॉ० पद्म गुरु चरण सिंह द्वारा 'रविदास जयंती' पर प्रस्तुत इस रचना में केवल 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित रैदास वाणी को ही पूर्ण तथा प्रामाणिक मानकर उसे ही 'परिशिष्ट' में दिया है। यह भी सीमित उद्देश्य से किया गया कार्य है।
9. **संत गुरु रविदास वाणी**—डॉ० बेणी प्रसाद शर्मा ने स्थान-स्थान घूमकर तथा पांडुलिपियों के आधार पर इस ग्रंथ का बड़े परिश्रम से संपादन किया था। पांडुलिपियों में से कौन-सी प्राचीन प्रति संपादन का आधार रही है, इसका संकेत संपादकीय में नहीं दिया गया था। पाठ भी दोषपूर्ण हैं।
10. पूर्वोक्त संपादनों के अतिरिक्त डा० धर्मपाल मैनी ने भी रैदास के 74 पदों से हिंदी जगत् को परिचित कराया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संपादन में हस्तलेखों के पाठांतर पाद-टिप्पणी में दे दिए गए हैं। प्राचीन पांडुलिपियों में 'ख' के लिए प्रयुक्त 'ष' के स्थान पर रचनावली में 'ख' ही रखा गया है। इन संग्रहों में अनुनासिकता के निष्प्रयोज्य प्रयोग हुए हैं, उनको यथावत् रखा गया है ।

संपादन में रैदास के 116 पदों व 30 साखियों को स्थान दिया गया है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' के 40 छंदों में से 16 छंद ऐसे थे जो हस्तलिखित ग्रंथों में भी संकलित थे। इनमें से कुछ की भाषा-संरचना और छंद-क्रम हस्तलेखों से साम्य रखते थे। इसलिए हस्तलेखों के छंदों के साथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' के छंदों के पाठांतर दे दिए गए हैं। कुछ छंदों में पाठांतर अधिक थे। अतः हस्तलेखों के छंदों के साथ उन्हें यथावत् पाद-टिप्पणी में दे दिया गयां है ताकि 'गुरु ग्रंथ साहिब' से उपलब्ध छंदों की भाषा-संरचना, शिल्प-सौंदर्य और भाव-बोध से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। 'गुरु ग्रंथ साहिब' के शेष 24 छंदों को पुनर्संपादित करके सही क्रम दे दिया गया है, लेकिन रैदास के स्थान पर 'रविदास' की छाप को यथावत् रखा गया है।

'रचनावली' में सभी पाठों के तुलनात्मक अध्ययन एवं विवेचन के पश्चात् पाठ निर्धारित किए गए हैं। संपादन में प्रयुक्त पांडुलिपियाँ उपलब्ध कराने के लिए नराणा के दादू द्वारा, आगरा के कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी विद्यापीठ और वृंदावन के शोध संस्थान के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

पं० विद्यानिवास जी मिश्र ने विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखकर इस ग्रंथ का महत्त्व बढ़ाया है। उनकी अनुकंपा के लिए अत्यंत आभारी हूँ।

गोविंद रजनीश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

संत कवि रविदास की रचनावली पाठभेद के विवरण के साथ समग्र रूप से अभी तक नहीं छपी थी। ब्रजलाल वर्मा ने पहल जरूर की थी, वैसे बहुत पहले उनकी रचनाओं का संग्रह छपा था। डॉक्टर गोविंद रजनीश ने बड़े परिश्रम से बाद में प्राप्त पाठ-ग्रंथों का अनुशीलन करके रैदास रचनावली का पाठ तैयार किया। इसके साथ ही उन्होंने रैदास के पूर्ववर्ती संत कवियों की रचनाओं के साथ तुलनात्मक अनुशीलन भी प्रस्तुत किया। रैदास दो परंपराओं के उत्तराधिकारी थे—सगुण भक्ति-परंपरा और निर्गुण भक्ति-परंपरा। नामदेव भी इन्हीं दो परंपराओं के उत्तराधिकारी थे, परंतु सद्‌गुरु कबीर योग की परंपरा के और प्रेमानुगा निर्गुण भक्ति-परंपरा के उत्तराधिकारी थे। परंतु इन उत्तराधिकारों का काव्य पर वैसा प्रभाव नहीं पड़ता जैसा कि लोग मान लेते हैं। वस्तुतः काव्य-परंपरा का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कविता कविता में जन्म लेती है। इसके लिए चौरासी सिद्धों का विशेष अनुशीलन करना चाहिए, जैन मुनियों की अपभ्रंश में रची रचनाएँ, कृतियाँ भी इस प्रकार की काव्य-परंपरा के सोच के रूप में पहचानी जानी चाहिए।

सगुण-निर्गुण की भूमियाँ ऐसी अलग नहीं हैं, जैसा कि इतिहासकारों ने अंतिम सत्य के रूप में मान लिया है। तथाकथित दोनों की नींव में सदाचार पर बल है, परपीड़ा से द्रवित होने में ही भगवद्-उपस्थिति का प्रमाण माना गया है, दोनों में नाम-जप का विशेष माहात्म्य है। दोनों में भक्ति के लिए गुरु से दीक्षा प्राप्त करने पर बल है, और दोनों में भेदों के अतिक्रमण जाति, कुल, पद-प्रतिष्ठा, धन-वैभव की विषमताओं का अतिक्रमण करना भक्ति का प्रमुख लक्षण है। दोनों ही में जन सामान्य तक भगवद्-भक्ति के संदेश को पहुँचाना परम अभीष्ट है। दोनों में उल्लेखनीय यह है कि सहज होना भगवत्-कृपा की पात्रता के लिए सबसे अधिक आवश्यक है। सहज होने का अर्थ है—मन, कर्म, वचन में पारदर्शी होना, निश्छल होना और सबके लिए उनके प्रति इस दृष्टि से सहज-स्नेह भाव रखना कि उनमें परमात्मा की उपस्थिति उतनी ही है, जितनी मुझमें हो सकती है।

दोनों की क्रिया में अवश्य भेद है, इसीलिए भाषा में भी भेद है। निर्गुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवियों के काव्य-रस में कोई कमी नहीं है, उनकी बानी में अटपटापन है और भाषा के परिमार्जन की चिंता नहीं है। परंतु वे कवि-कर्म के प्रति ऐसे अचेत नहीं हैं, यदि होते तो उनमें रागों की बंदिश का ऐसा निखार न होता। संगीत में गूँज बनने की क्षमता अधिक गहरी होती है, और चाहे सगुण कहे जाने वाले कवि हों, या निर्गुण कहे जाने वाले कवि हों, इन सबने रचना बार-बार दुहराई जाने के लिए की है, इसलिए इनका ध्यान संगीत की बंदिश पर विशेष रहा है। आज इनके पद संगीतज्ञों के कंठ के हार बने हुए हैं। इसका कारण इनके भीतर भक्ति के संप्रेषण की बेकली ही है। निर्गुण कवियों में रैदास जैसे अनेक कवि सगुण लीला का भी वर्णन करते हैं, सगुण लीला में अनेक भक्तों के उद्धार का भी उदाहरण देते हैं, कुछ उदाहरण तो कबीर जैसे अधिक एकांतिक निर्गुण कवि ने भी दिए हैं, पर सभी संत कवि निर्गुण का निरूपण अधिक बल से करते हैं। एक बात इनमें और उल्लेखनीय है कि इन सभी कवियों ने अपने कर्म को, चाहे वह कर्म समाज की दृष्टि से बहुत निम्न क्यों न हो, भक्ति के साथ तादात्म्य करके किया है। कबीर ने जुलाहे के कार्य को अध्यात्म क्रिया बनाया है। सेन ने नाई के कर्म को, रैदास ने चर्मकार के कर्म को अध्यामक का पर्याय बनाया है। इन सबमें एक विशेष प्रकार की सजगता है। ये ऐसे अलौकिक अध्यात्म के साधक नहीं हैं कि लोक-व्यवहार को अनदेखा कर दें, ठीक उलटे इन्होंने लोक-व्यवहार को भी साथ-साथ साधा है, लोक-मान्य प्रतीकों का भरपूर उपयोग किया है और लोक तक पहुँचने के लिए ठेठ लोक-भाषा का प्रयोग किया है। संत कवियों ने तो बहुत व्यापक रूप से भक्ति के प्रचार के लिए ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जो एक क्षेत्र की नहीं हो सकती, वह अनेक क्षेत्रों की सधुक्कड़ी भाषा है, जिसे खिचड़ी न कहकर रमता साधुओं के मिलने-जुलने से विकसित स्वतंत्र भाषा ही माना जाना चाहिए। इन लोगों ने यद्यपि चौंकाने वाली उलट-बाँसी लिखी और अनेक रूपकातिशयोक्तियों का प्रयोग किया है, उतनी चौंकाने वाली रूपकातिशयोक्ति सूर जैसे कवियों ने लिखी, पर मात्रा में कम और अधिकतर रचनाकाल में प्रचलित परंपरा के अनुसार, जबकि निर्गुण भक्ति कवियों की उलट-बाँसी योग-परंपरा के प्रतीकों के रूप में है। एक तरह से निर्गुण योग-परंपरा के प्रतीक रहस्यमय और दीक्षागम्य हैं।

जहाँ तक छंदों और पदों के विन्यास का प्रश्न है, दोनों में समान रूप से पद-रचना के जयदेव कवि की परंपरा का ही अनुसरण किया गया है, जिसमें एक पद की 'टेक' होती है, उस 'टेक' की पुनरावृत्ति दूर-दूर तक चलती है। वह 'टेक' आरंभक भी है, समापक भी। संत कवियों ने एक नए छंद 'झूलना' का प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है। ये सभी कवि तुकांत रचना ही करते हैं। नंददास ने भ्रमरगीत में कुछ नया प्रयोग किया है, जिसके प्रत्येक पद के अंत में एक 'समाहार' है, 'समाहार' पंक्ति की मात्रा-संख्या शेष पंक्तियों की मात्रा-संख्या से नहीं मिलती है, न तुक ही मिलती है, पर यह प्रक्रिया वेदों के कुछ सूक्तों में आई है। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि सतही तौर पर छंदों, पदों के विन्यास में अंतर तो नहीं है पर जब उनके रचना-विधान पर ध्यान देते हैं तो स्पष्ट अंतर दिखाई पड़ता है। आंतरिक लय और तुक की योजना निर्गुण कवियों में कम सगुण कवियों में अधिक है। आलंकारिकता भी कुछ कम है, पर उसका ऐसा अभाव नहीं है, जैसा प्रचारित किया जाता है। रैदास के 'प्रभु जी, तुम चंदन हम पानी' वाले प्रसिद्ध पद में मालारूपक का ललित विन्यास है। संत कवियों में नकारात्मक स्वर भी बहुत हैं पर कुछ कवियों में यह स्वर दबा हुआ है। दादू, रैदास, सुन्दरदास में यह स्वर दबा हुआ है। कबीर में बड़ा प्रखर है। यह हो सकता है कि रैदास परंपरा में ही केवल स्वामी रामानंद के शिष्य माने जाते हैं, वास्तविकता इनके विपरीत हो; जैसा कि रजनीश जी ने सप्रमाण प्रतिपादित किया है, परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि रैदास राम भक्ति और कृष्ण भक्ति दोनों ही प्रकार की भक्ति करते रहे, मिट्टी की बनी राम-जानकी भी पूजते रहे। श्री रामभक्ति का प्रमाण उनके पद हैं। ये शालिग्राम की बटिया का भी अर्चन करते थे। उनकी भक्ति की विविधता का लोहा मानकर आचार-विचार वाले ब्राह्मणों ने उनका दंडवत् किया, इसका उल्लेख उन्होंने किया है। कृष्ण और उनके नामों का वर्णन और ध्यान का उल्लेख उन्होंने किया है। उन्होंने यह चुनौती भी दी है–

माधवे तुम न तोरहि तउ हम नहि तोरहि
तुम सिउ तोरि कउन सिउ जोरहि
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा
जउ तुम चंद तउ हम भये हैं चकोरा
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती
साची प्रीति हम तुव सिउ जोरी
अवर संग तोरी
तुम सिउ जोरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जह-जह जाऊ बहै तुहा तेरी सेवा
तुम सो ठाकुर और नहि देवा
तुमरे भजन कटै जम फांसा
भगति हेतु गावै रविदासा।

"माधव, तुम तोड़ते हो तोड़ो, हम नहीं तोड़ेंगे। तुमसे तोड़कर और किससे जोड़ेंगे ! हमारी-तुम्हारी प्रीति सच्ची है । तुमसे एक बार जुड़े हमने सबसे नाता तोड़ लिया।"

ऐसा लगता है कि उनके संस्कार स्वरूप-अर्चना के हैं पर देशव्यापी निर्गुण उपासना का प्रभाव उन पर पड़ा और इन दोनों के बीच में उन्होंने संतुलन स्थापित किया। पर जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि आराध्य से अधिक महत्त्व आराधना का है। आराधना में रची-पगी उस सहज भाव धारा का है, इस भाव धारा की अभिव्यक्ति भी रैदास में बहुत विनम्र और अधिकतर कातर भाषा में है। उन्हें अवश्य विरोध मिला होगा कि वे ओछी जाति के हैं, उनकी भक्ति नाटक है, प्रवंचना है, परंतु उन्होंने अपनी दृढ़ता से सिद्ध कर दिया है कि भक्ति उनकी इतनी गहरी है कि जैसी तथाकथित ऊँची जाति की भी नहीं है।

ऐसा विरोध तुलसीदास जी का भी हुआ कि उन्होंने भाषा में रचना की, पर उनकी रचना के सामर्थ्य का लोहा विरोधियों ने तब माना जब उनकी रचना का रामलीला के रूप में रूपायन हुआ और आत्मविश्वास खोए हुए लोग नए विश्वास, नए संबल के साथ उठ खड़े हुए। रैदास ने थोड़ा-बहुत इशारा अवश्य किया है पर उन्होंने कबीर की भाषा में फटकार नहीं सुनाई है, शायद दोनों एक-दूसरे की कार्य-पद्धतियों के पूरक थे, या शायद उन्हें फटकार सुनाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। यह काम उनके अग्रज कबीर द्वारा संभव हो गया था।

कबीर की काव्य-रचना का विस्तार अधिक है। रैदास के बारे में जनश्रुतियाँ इतनी अधिक नहीं हैं कि उनके आधार पर उनके सिद्धांत पक्ष की समीक्षा की जाए। पर जितनी हैं उतनी इतनी सघन सरस हैं कि वह उनके काव्य सामर्थ्य की, उनके भीतर की भगवत्प्राप्ति के विषय की बेचैनी की साखी भरती हैं। उदाहरण के लिए एक जनश्रुति है और मीराबाई की पदावली में उल्लेख है कि मीरा ने संत रैदास से दीक्षा ली थी, पर दूसरी जनश्रुति है कि मेवाड़ की एक दूसरी रानी झाला रानी ने उनसे दीक्षा ली थी। मीराबाई ने दीक्षा ली हो, न ली हो, पर रैदास की व्यक्त-अव्यक्त उभय-उपासना की गहरी छाप उन पर है। एक ओर सुन्नमहल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे दिया जलाती हैं, दूसरी ओर गिरिधारी के रूप पर अपने को न्योछावर करती हैं। यह भी कहा जा सकता है कि रैदास के नाम से प्रसिद्ध एक-दो पदों को छोड़ दें, तो सूफी रंग भी रैदास पर कम है। अपने को प्रिया के रूप में देखना तो भारतीय काव्य-परंपरा के अनुकूल है, सखी संप्रदाय में, सगुण-भक्ति में भी यह भावना है। रैदास के अधिसंख्य पदों में जहाँ स्मरण नामपदों की पुनरावृत्ति पर विशेष बल है। निर्गुण पंथ की ओर संक्रमण सगुण भक्ति के उपचारों के अयथेष्टता के कारण है। एक पद में उन्होंने इसी अयथेष्टता का वर्णन किया है और कहा है कि ऐसे व्यापक परमात्मा के लिए कहाँ तक उनके अनुरूप फूल मिलेगा, कहाँ वह गाय मिलेगी जिसका दूध उन्हें निवेदित किया जाए और कहाँ वह दिया मिलेगा जिससे उनकी आरती की जाए क्योंकि जो भी मिलेगा वह जूठा किया मिलेगा। इसलिए मन ही मन पूजा संभव है—

रामहि पूजा कहाँ चढ़ाऊँ।
फल अस फूल अनूप न पाऊँ।। टेक।।

थनहर दूध जु बछ जुठारयो, पहुप भवर जल मीन बिटारयौ।
मलियागिरी बेधियौ भवंगा, विष अंम्रित दोऊँ एकै संगा।।1।।

मन ही पूजा मन ही धूप, मन ही सेऊँ सहज सरूप।।2।।
पूजा अरचा न जांनूं रांम तेरी, कहै रैदास कवन गति मेरी ।।

ऐसा ही पद गुरु नानक देव का है, जिसमें गगन की थाल में रवि चंद दीपक जलाने का वर्णन है ।

'गगन की थाल रवि चंद दीपक जलै' वाले पद में तथा अन्य पदों में विशाल के आगे की अपनी लघुता की बात उन्होंने बार-बार कही है, यह दीनतावश नहीं, सहज विनम्रतावश। अपने एक पद में उन्होंने अपने को एरण्ड और प्रभु को चंदन कहा और यह अवश्य कहा कि तुम्हारा नित्य सत्संग है इसलिए एरंड में भी चंदन की सुगंध आ गई है। राम राजा के शरण में जाने से रैदास आश्वस्त हो जाता है, हरि का रंग लगने से वर्ण ही पलट जाता है, पूरा स्वभाव बदल जाता है या दूसरे शब्दों में कहें, स्वभाव के आवरण हट जाते हैं।

बहुत कम पदों में रैदास ने प्रेम की सुरा चखने का वर्णन किया है। इसका कारण यह है कि यह सौभाग्य उसी को मिलता है जो अपना सिर देने में समर्थ हो—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै कलाली प्याला देऊँ ।
पीवन हारे का सिर लेऊँ ।।

राम सर्वसुलभ हैं, किसी की भाड़ेदारी नहीं है। वे अबाध गति से प्रवाहित हो रहे हैं। सर्वसुलभता की रचना ही इनकी कविता की मूल प्रेरणा है। बार-बार उन्होंने यह प्रतिपादित किया है कि जाति-पाँति, ऊँच-नीच से कोई परम पद पर नहीं पहुँचता है। षट्कर्म से हरिभक्ति के प्रति दृढ़ता की योग्यता पैदा होती है। यदि श्वपच भी कोई हरिभक्ति करता है तो उसकी बराबरी षट्कर्म करने वाला भी नहीं कर सकता। वे अनन्य प्रेम पर विशेष बल देते हैं और दूसरी सारी प्रक्रियाओं से उन्हें परितुष्टि नहीं मिलती। उन्हें इससे भी बड़ा असंतोष मिलता है कि सब अपने कर्म का फल पाते हैं पर दोष हरि को लगाते हैं। यह नहीं समझते कि जब तक हरि से अनन्य प्रीति नहीं होती तब तक दुःख लगे रहेंगे। न चंचल मन स्थिर होगा न जीभ राम नाम को रटने में लगी रहेगी। वे इस राम की आसक्ति का द्वार अन्य संत कवियों के सत्संग और गुरु कृपा को ही मानते हैं पर इन सबके मिलने के बाद भी हरि नाम का अभ्यास आवश्यक है, उसके बिना संशय की गाँठ नहीं खुलती, तब तक मन के भीतर रहने वाले शत्रु काम, क्रोध, मद, लोभ लूटते ही रहते हैं। विशेष रूप से यह बुद्धि बनी रहती है कि हम बड़े कवि हैं, योगी-पंडित हैं, दानी हैं, वीर हैं, दाता हैं, शूर हैं। यह नहीं जानते कि केवल पोथी पढ़ने से कुछ समझ नहीं आती, केवल अनुभव से गुजरने से समझ में आती है। वही जीवन है, वही प्राणधन है—

राम बिन संसै गाँठि न छूटै।
काम क्रोध मद माया, इन पंचन मिलि लूटै।। टेक ।।
हम बड़ा कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संन्यासी।
ग्यानी गुनीं सूर हम दाता, यहु मति कदे न नासी।। 1 ।।
पढ़ें गुनें कुछ समझि न परई, जौ लौ अनभै भाव न दरसै ।
लोहा हरन होई धू कैसें, जो पारस नहीं परसै।। 2 ।।
कहै रैदास असमझसि, भूलि परै भ्रम भोरै।
एक अधार नाम नरहरि कौ, जीवनि प्रान धन मोरै।। 3 ।।

मधुर और सहज संत रविदास की वाणी का समग्र संकलन वस्तुतः ज्ञानश्रयी शाखा की रचना मानी जाकर भी सभी दृष्टियों से प्रेमाश्रयी और ज्ञानाश्रयी के बीच सेतु है। इसीलिए इसके लिए गहरा प्रभाव मीराबाई और सूरदास पर है, दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर दादू, गुरु नानक, रज्जब और गुरु अर्जुन देव पर भी है।

रजनीश जी ने कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिए हैं जिससे इस संतवाणी को समझने में कठिनाई न हो। मैं रजनीश जी को उनके परिश्रम के लिए साधुवाद देता हूँ। इन्होंने ज्ञात पदों का ही संकलन नहीं किया वरन् अब तक अप्राप्त पदों को भी सम्मिलित किया। इस प्रकार उनकी भूमिका बड़ी विशद है और उसमें न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से पूरी जानकारी दी गई है अपितु उसके साथ नामदेव, कबीर के साथ संत रैदास की तुलना भी उपपत्तिपूर्वक की गई है। इसके प्रकाशन से संत-साहित्य के अध्येताओं का बड़ा उपकार होगा।

वाराणसी

विद्यानिवास मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

141341

R
079
जोधि-रै

क्रम

जीवन-वृत्त ...	23
आध्यात्मिक अग्रज और समकालीन कवि ...	31
नामदेव : *जीवन-वृत्त • विचारधारा* ...	31
कबीर : *जीवन-वृत्त • मान्यताएँ* ...	36
तुलनात्मक विवेचन : *नामदेव, कबीर और रैदास* ...	42
समकालीन कवि : *सेन, पीपा, धन्ना* ...	59
कवि-समय और प्रासंगिकता ...	65
पदावली-क्रम ...	67
पदावली ...	73
साखी ...	137
परिशिष्ट 1 ...	140
शब्दकोश ...	140
परिशिष्ट 2 ...	149
कबीर-रैदास संवाद ...	149
परिशिष्ट 3 ...	158
भक्तमाल ...	158
परिशिष्ट 4 ...	160
रैदास परचई ...	160

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-वृत्त

मध्यकालीन संतों में रविदास या रैदास का अधिकांश जीवन-वृत्त अंधकार में है। इस संबंध में बहुत कम अंतःसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य मिलते हैं। अनंतदास की 'रैदास परचई' और नाभादास के 'भक्तकाल' में अन्य संतों की तरह उनके जीवन की चमत्कारपूर्ण घटनाओं का उल्लेख हुआ है। संत रैदास का जन्म कब हुआ, इसके बारे में अंतःसाक्ष्य नहीं मिलते हैं। लेकिन इस संबंध में कुछ अनुमान प्रस्तुत किए गए हैं–

1. रविदासी संतों के अनुसार इनका जन्म रविवार माघ पूर्णिमा को संवत् 1433 में हुआ।
2. डॉ० भण्डारकर के अनुसार इनका जन्म 1299 ई० में हुआ था।
3. ये कबीर के समसामयिक थे। अतः इनका समय सं० 1445 से 1575 (सन् 1388 से 1518) के आसपास रहा. होगा।[1]

पहली तिथि अनुमान व परंपरागत विश्वास पर आधारित है। इसके पुष्ट प्रमाण नहीं मिलते हैं। आजकल रविदास जयंती 19 फरवरी को मनाई जाती है। दूसरी व तीसरी तिथि भी अनुमानित हैं। कबीर के पट्ट शिष्य धर्मदास द्वारा संकेतित कबीर की निर्वाण-तिथि संवत् 1569 को विश्वसनीय माना जाए[2] तो उनका जन्म संवत् 1490 के आसपास माना जा सकता है।[3] रैदास का आविर्भाव भी उसी के आसपास हुआ होगा।

अनंतदास की 'रैदास परचई' और नाभादास के 'भक्तमाल' के अनुसार मेवाड़ की झाली रानी ने रैदास से दीक्षा ली थी।[4] झाली रानी महाराणा कुंभा की पत्नी थी जिसका समय सन् 1431 (संवत् 1488) से सन् 1469 (संवत् 1526) के मध्य रहा है। यदि यह दीक्षा सन् 1461-62 के आसपास ली गई तो रविदास का

---

1. हिंदी साहित्य कोश, भाग 2, पृ० 538
2. सुमंत पंद्रा सौ उनहत्तरा हाई। सतगुरु चले उठ हंसा ज्याई।। (धर्मदास, द्वादश पंथ)
3. कबीर ग्रंथावली (सं० डॉ० माताप्रसाद गुप्त), भूमिका, जीवनवृत्त, पृ० 3
4. देखें रचनावली का परिशिष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म सन् 1400 से 1410 के बीच में हुआ होगा।

रैदास कबीर के समकालीन थे। इसका प्रमाण रैदास के समकालीन कवि सेन की रचना 'कबीर-रैदास संवाद' से होता है। कबीर रैदास से कुछ बड़े रहे होंगे क्योंकि रैदास ने बड़े सम्मान से जिन दो आध्यात्मिक अग्रजों का उल्लेख किया है, वे हैं—नामदेव और कबीर।[1] इन दोनों के काव्य और विचारधारा से रैदास प्रभावित हुए थे।

कबीर और सेन का निधन रैदास से पूर्व हुआ था, रैदास के पदों से स्पष्ट होता है[2] किंतु रैदास की निर्वाण तिथि अज्ञात है। लेकिन यह सुनिश्चित है कि यह तिथि संवत् 1661 (सन् 1604) से पूर्व रही होगी क्योंकि 'गुरु ग्रंथ साहिब' के संकलनकर्ता सिक्खों के पंचम गुरु अर्जुन देव द्वारा संवत् 1661 में उस समय के प्रसिद्ध संत रैदास के 40 छंदों को उनके अनुयायियों से सुनकर 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संग्रह किया था। अनुमान है, कबीर के निर्वाण (संवत् 1569) के कुछ समय पश्चात् तक रैदास जीवित रहे थे।

पीपा उनके समकालीन थे, लेकिन आयु में कुछ छोटे थे। उनके जीवन-काल में ही रैदास का निधन हो गया था। उन्होंने ससम्मान रैदास का स्मरण किया था—

मन भजसि रे हरिचरण परम पूनीत।
विप्र डंडवत करै, प्रगट नीसांन रैदास दासा।।

---

1. नामदेव कहिए जाति कै ओछ, जाको जस गावै लोक।
भगति हेत भगता के चले, अंक माल ले बीठल मिले।
(रचनावली, 109)

× × × × ×

जाकै भागवतु लेखी ऐ अवरु नही पेखी ए तास जी जाति आछोप छीपा।।
बिआस महि लेखी ऐ सनक महि पेखी ऐ नाम की नामना सपत दीपा।।
जाके ईदि बकरीदि कुल गऊ रे वधु करहि मानी अहि सेख सहीद पीरा।।
जाके बाप बैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा।।
(रचनावली, 107)

2. हरि कै नाम कबीर उजागर, जनम-जनम के काटे कागर।
निमत नामदेउ दूधु पीआइया, तउ जग जनम संकट नहीं आइआ।। (रचनावली, 48)

× × × × ×

नामदेव कबीर तिलोचनु सधना सैनु तरे। (रचनावली, 104)

× × × × ×

निरगुन का गुन देखो आई, देही सहित कबीर सिधाई। (रचनावली, 109)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीनको जस पूरि रहयो तिह लोक में, कून मारगि गए, खोजे न पाऊँ ।
दास पीपौ कहै कठिन कलिकाल मैं, भगत भगवंत भजि पार पाऊँ।।

(सर्वंगी से उद्धृत)

दादूदयाल के शिष्य रज्जब (संवत् 1624-1746) ने सं० 1644 में दीक्षा ली थी। दादूदयाल का निधन संवत् 1660 में हुआ। उसी के आसपास रज्जब ने 'अंगवधू' और 'सरबंगी' का संपादन किया होगा। प्रतीत होता है, तब तक संत पीपा का निर्वाण हो चुका होगा और वे संत और रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध हो चुके होंगे। इनके कुछ छंद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी संकलित हैं, जो इसकी पुष्टि करते हैं।

धन्ना भी रैदास के परवर्ती कवि थे। उन्होंने रैदास को नामदेव, कबीर व सेन की तरह माया-त्यागी बताया है। यह भी संकेत दिया है कि उनकी भक्ति-गाथा को सुनकर ही वे भक्ति-मार्ग की ओर प्रवृत्त हुए थे—

रविदास ढुवंता ढोरनी, तितिनी तिआगी माइआ।
परगहु होआ साथ संनि हरिदरसन पाइआ।।
इति विधि सुन कै जाटरौ उठि भगती लागा।
मिले प्रतषि गुसाइया धन्ना बड़ भागा।।[1]

संवत् 1661 तक धन्ना भी संत-कवि के रूप में प्रसिद्ध हो चुके थे, तभी उनके पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित किए गए थे और धन्ना के समय तक रैदास काफी लोकप्रिय और किंवदंती पुरुष बन चुके थे।

निश्चित साक्ष्यों के अभाव में रैदास के आविर्भाव और निर्वाण की तिथियाँ सुनिश्चित नहीं की जा सकती हैं। लेकिन यह सुनिश्चित है कि उनका निधन संवत् 1600 से पूर्व हो चुका था। दादूदयाल (संवत् 1601-1660) ने अपने एक पद में नामदेव और कबीर के साथ रैदास के गोलोकवासी होने का संकेत दिया है—

नामदेव कबीर जूलाहौ, जन रैदास तिरै।
दादू बेगि बारही लागै, हरि सू सब सरै।।[2]

---

1. गुरु ग्रंथ साहिब, राग आसा, 2
2. सरबंगी, संत सहाईक अंग, 3, पृ० 17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिवारिक परिवेश— रैदास का जन्म वाराणसी के समीप मांडूर नामक गाँव में रघ्घू और घुरबिनिया नामक चर्मकार दंपती के यहाँ हुआ था। रैदास ने अपनी जाति का उल्लेख निस्संकोच और जीवटता के साथ बार-बार किया है—

1. कहै रैदास खलास चमारा।[1]
2. जाति भी वोंछी जनम भी वोछा।[2]
3. अैसी मेरी जाति मिख्यात चमारं।[3]
4. जाके कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस-पासा।[4]
5. प्रेम भगति कै कारणै, कहु रविदास चमार।[5]
6. मेरी जाति कमीनी पाँति कमीनी। ओछा जनमु हमारा।
तुम सरनागति राजा रामचंद्र। कहि रविदास चमारा।।[6]

जिस प्रकार कबीर ने अपने पदों में जुलाहे के उपकरणों को रूपक के रूप में प्रस्तुत किया था, उसी प्रकार रैदास ने अपने व्यावसायिक उपकरणों को एक सांगरूपक में साधनात्मक प्रतीक बनाया है—

चमरटा गाँठि न जनई।
लोग गठावै पनही।।
आर नहीं जिह तोपउ। नहीं रांबी ठाउ रोपउ।।
लोग गंठि गंठि खरा बिगूचा। हउ बिनु गाँठे जाइ पहूचा।।
रविदास जपै राम नामा। मोहि जम सिउ नाही कामा।।[7]

रज्जब की 'सरबंगी'[8], अनंतदास की 'रैदास परचई'[9] और नाभादास के 'भक्तमाल'[10] में रैदास को चर्मकार परिवार में उत्पन्न माना है।

---

1. रैदास रचनावली, छंद सं० 31
2. " " " " 43
3. " " " " 51
4. " " " " 107
5. " " " " 33
6. " " " " 68
7. " " " " 69
8. चमार ग्रीहे उतपनो रैदास दास। महाभूति उतिम ब्रह्म सूँमिरन नांम। तस्मातमक ख्याति कारणं। (सरबंगी, हस्तलिखित प्रति)
9. जाति चमार पिता अरु माई। साषित कै घरि जनम्यौ आई।।4।। (परचई, ह० प्रति)
10. गाँठै पग दीसी कहूँ बात न प्रकासी।
ल्यावै खाल करैं जूती साधु संत की संभारहीं।। (भक्तमाल, प्रियादास की टीका, ह० प्रति)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता मरे ढोर ढोने और चमड़ा उतारकर जूते-जूतियाँ बनाने का काम करते थे। ब्रिग्स के कथनानुसार रैदास 12 वर्ष की आयु से ही सत्संग करने लगे थे। उसी समय से मिट्टी से बनी राम जानकी की मूर्ति को पूजने लगे थे।[1]

शैशव से ही भक्ति-चेतना से संपन्न थे। ईश्वर-आराधना, पूजा और सत्संगति में ही अधिकांश समय व्यतीत होता था। पैतृक व्यवसाय में अधिक रुचि न लेने के कारण इन्हें परिवार से अलग कर दिया गया। बँटवारे में भी इन्हें कुछ नहीं मिला। घर के पिछवाड़े छप्पर डालकर जूता सीने और बनाने का कार्य करने लगे। इतने निस्पृह और निर्लोभी थे कि जूते बनाने और सिलाई से जो कुछ मिलता उसे साधु-संतों पर व्यय कर देते थे। अनंतदास की 'रैदास परचई' और नाभादास के 'भक्तमाल' की प्रियादास की टीका में आए पारस पत्थर के प्रसंग और ब्राह्मणों के विरोध पर मठ-मंदिर तथा अन्य संपत्ति के छोड़ने के प्रसंग से उनके माया-त्यागी और निर्लोभी होने की पुष्टि होती है।

रैदास को विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं हुई थी। जिस युग में रैदास हुए थे, शास्त्रीय शिक्षा-दीक्षा द्विजातियों, विशेषकर ब्राह्मणों तक सीमित थी। अंत्यजों को वेदों व शास्त्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं था। किंतु उन्हें वेदों, शास्त्रों, पुराणों व नामदेव तथा कबीर जैसे अग्रजों के काव्य का ज्ञान था। इसलिए संदेह ग्रंथ (विवादास्पद) के खंडन करने, वेदों और शास्त्रों के अनुकूल सदाचार का उपदेश देने से उनके बहुश्रुत और पठित होने का आभास होता है।[2] उनके विचार और अभिव्यक्ति-शैली से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने नामदेव व कबीर को सुना व पढ़ा होगा क्योंकि संतकाव्य में वाणी-संग्रह की परंपरा लंबे समय से चली आ रही थी।

रैदास के दीक्षा गुरु कौन थे, यह अज्ञात है। रामानंद को उनका गुरु मानने की परंपरा रही है। 'भक्ति सुधाविन्दु स्वाद'[3], अनंतदास की 'रैदास परचई'[4] और

---

1. जी० डब्ल्यू० ब्रिग्स, द चमार्स, रिलीजन लाइफ ऑफ इंडिया, पृ० 208
2. नाभादास ने लिखा है :
   संदेह ग्रंथ खंडन निपुन वानी विमल रैदास की।
   सदाचार श्रुति शास्त्र वचन अविरुद्ध उचार्‌यौ।।
   नीर खीर विवरन वरन परम हंस निडर धार्‌यौ।। (भक्तमाल, ह० प्रति)
3. राघवानन्द एतस्य रामानन्दस्ततोऽभवत्। सार्द्धद्वादश शिष्याः स्युः रामानंदस्य सदगुरोः। कबीरश्च रामादासः सेना पीपा धनास्तथा।। (भक्ति सुधाविन्दुस्वाद, पृ० 294)
4. कृपावंत है कै दक्षया देहू। बालिक मरत राखि हरि लेहू।।10।।
   अरध राति हुई आकासबांनी। तब रामानंदि मन मैं जानी।।
   चमरा के घर बेटा जाया। सो मेरा जन औतरि आया।।11।।
   × × × ×
   तब रामानंद बिलंब न कीनौं। माथे हाथ चमरा कै दीनौं।।13।। (रैदास परचई, ह० प्रति)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'भक्तमाल'[1] में उन्हें रामानंद का शिष्य बताया गया है। किंतु रैदास ने जहाँ नामदेव और कबीर का स्मरण किया है, वहाँ अपने दीक्षा-गुरु का भी स्मरण करते। गुरु-महिमा का वर्णन उन्होंने अनेक पदों में किया है किंतु गुरु का संकेत कहीं नहीं दिया है। कबीर, रैदास, धन्ना, सेन और पीपा को रामानंद का शिष्य बताने का आग्रह रामानंद-संप्रदाय के अनुयायियों, जैसे अनंतदास और नाभादास की ओर से गुरु और संप्रदाय को महिमामंडित करने के उद्देश्य से किया गया था।

नामदेव की तरह ये प्रारंभ में सगुणोपासक थे। 'परचई' के अनुसार सालिगराम (बटिया) की पूजा करते थे। बाद में कबीर के संसर्ग से इनका रुझान निर्गुणोपासना की ओर हुआ। सेन की रचना 'कबीर-रैदास संवाद' के अनुसार कबीर और रैदास में सगुण और निर्गुण को लेकर काफी विवाद हुआ था। अंत में रैदास ने कबीर के तर्क-वितर्क को स्वीकार करते हुए कबीर को अपना गुरु कहा तो कबीर ने उन्हें गुरुभाई के रूप में स्वीकार किया—

रैदास कहै जी।

माखन मथि रु तत दिखलाया, भरम करम सब जाई।
कहै रैदास पीर गुर मेरा, या मत तुम सूं पाई।। 65।।

कबीर कहै जी।

नृगुण ब्रह्म सकल कौ दाता, सो सुमरौ चित लाई।
को है लघु दीरघ को नांही, हम तुम दोन्यूँ गुर भाइ।। 66।।[2]

इसी तरह से मिलता-जुलता प्रसंग अनंतदास की 'परचई' में आया है। जब ब्राह्मणों ने दूसरी बार प्रबल विरोध किया, बांधवगढ़ नरेश बघेल और संत सेन के समझाने पर ब्राह्मण नहीं माने तब कबीर ने उन्हें सब कुछ सेन को सौंपने की सलाह दी थी। ब्राह्मणों को नीचा दिखाकर रात्रि को जब कबीर और रैदास मिले, उनमें निर्गुण और सगुण को लेकर काफी विवाद हुआ—

श्रुगुन थापै सेनिं रैदासा, कबीर के त्रिगुन की आसा।
पहर येक लग कथियौ ग्यांनूं, टीकै भयौ कबीर कौ ध्यांनूं।। 13।।

---

1. भई नभवांनी रामानंद मन जांनी वडौ दंड दियौ मांनी वेगि आये चले आप है।।
दुखी पित मात देखि धाय लपटाये पाइ कीजियै उपाइ किये सिष्य गयौ पाप है।।
(भक्तमाल की प्रियादास की टीका, ह० प्रति, 256)

2. देखें रचनावली का परिशिष्ट 4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरगुन कथा त भयौ मन थीरू, गुरु समांन करि थपे कवीरू।
करि बंदना सेनि रैदासू, पहुँचे अपनैं मंदिर पासू।।14।।[1]

रैदास का प्रारंभ में सगुणोपासक होना असंभव नहीं है। नामदेव भी प्रारंभ में विट्ठल के अनन्य भक्त थे, बाद में निर्गुणोपासना की ओर उन्मुख हुए थे। कबीर और रैदास का मिलना भी असंभव नहीं है। दोनों समकालीन थे और दोनों का अधिकांश समय वाराणसी में व्यतीत हुआ था।

उनके परिवारिक जीवन के संबंध में उल्लेख नहीं मिलते हैं। इनकी पत्नी का नाम लोना बताया गया है। अन्य संतों की तरह इन्होंने राजस्थान, गुजरात और पंजाब की यात्राएँ की थीं। 'परचई' के अनुसार झाली रानी के आमंत्रण पर ये चित्तौड़ भी गए थे।

अनंतदास की 'रैदास परचई' और नाभादास के 'भक्तभाल' और उस पर प्रियादास की टीका से यह ज्ञात होता है कि उन्हें जात्याभिमानी ब्राह्मणों से कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। इसके संकेत उनकी रचनाओं में भी मिलते हैं। अपनी निश्छल, उदात्त और अनन्य भक्ति के बल पर उन्होंने ब्राह्मणों का सफल प्रतिरोध किया था। अंततः उच्च कुलीन सवर्ण ब्राह्मणों ने उनकी उत्कट भक्ति को मान्यता दी और सम्मानपूर्वक दंडवत् किया था—

जाके कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस-पासा।
आचार सहित विप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासानुदासा।।[2]

'भक्तमाल' में नाभादास के कथन 'वरणाश्रम अभिमान तजि पद रज वंदहि जास की' से भी इसकी पुष्टि होती है।

इनका मोक्ष-स्थान काशी का गंगा घाट था।

मीराबाई ने एक पद में रैदास को अपना गुरु कहा है—

रैदास संत मिले मोहि संतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी।
मैं मिली जाय पाय पिय अपना, तब मेरी पीर बुझानी।।[3]

दूसरे एक पद में अपना दीक्षा-गुरु बताया है—

गुरु मिलया रैदास जी दीनी ग्यान की गुटकी।।[4]

---

1. देखें रचनावली का परिशिष्ट 3
2. रैदास रचनावली, 107
3. मीरांबाई की पदावली (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग), तृतीय संस्करण, पृ० 55
4. " " " पद 24, पृ० 10

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अनंतदास की 'परचई' में रैदास द्वारा झाली रानी को दीक्षा देने की बात कही गई है। झाली रानी भी मेवाड़ की थी। संभव है, मेवाड़ के राजघराने में किसी रैदास या रैदासी संत से दीक्षा लेने की परंपरा रही हो। मीरां ने ऐसे ही किसी रैदासी संत से दीक्षा ली हो क्योंकि रैदास और मीरां समकालीन नहीं थे। मीरांबाई काफी परवर्ती हैं। मीराबाई ने धन्ना भगत् को किसी प्राचीन पौराणिक संत की तरह स्मरण किया है जबकि धन्ना ने बड़ी श्रद्धा के साथ रैदास को अपनी भक्ति-चेतना के लिए प्रेरक माना है। अतः धन्ना का समय रैदास के बाद और मीराबाई का समय धन्ना के बाद ठहरता है। झाली रानी के संदर्भ में इतिहास मौन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आध्यात्मिक अग्रज और समकालीन कवि

रैदास ने अपने दो आध्यात्मिक अग्रजों का उल्लेख किया है, वे हैं—नामदेव और कबीर।

नामदेव

मराठी और हिंदी में समान रूप से रचना करने वाले उत्तर और दक्षिण के प्रसिद्ध संत हुए हैं। मराठी अभंगों और हिंदी के पदों की रचना करके अपने जीवन-काल में ही यशस्वी हो चुके थे।

इनका जन्म महाराष्ट्र के नरसी-ब्रह्मणी गाँव के यदु सेठ की छठी पीढ़ी में हुआ था। पिता का नाम दामसेठ और माता का नाम गोणाबाई था। पिता छीपी (दर्जी) का काम करते थे। पिता-माता दोनों ही विट्ठल के अनन्य उपासक थे। कुछ समय बाद वे नरसी-ब्रह्मणी छोड़कर पंढरपुर आ गए। यहीं नामदेव का जन्म हुआ।[1]

नामदेव द्वारा रचित एक अभंग के अनुसार उनका जन्म कार्तिक शुक्ल एकादशी, रविवार, 26 अक्टूबर, 1270 को हुआ। डॉ० भण्डारकर के अनुसार इनकी मराठी कविता संत ज्ञानेश्वर की कविता से अधिक परिष्कृत और परवर्ती है। अतः इनका जन्म 13वीं शती में न होकर बाद में होना चाहिए । उनका कहना

---

1. अपने एक मराठी अभंग में नामदेव ने अपने पिता के विवाह का इस प्रकार उल्लेख किया है—
कल्याणीचा शिंपी हरिभक्त गोमा। त्याची कांता उमा नरहरी भजनीं।।
सरिता सुकृताची त्या पोटीं उत्पन्न। झाली संबोधन गोणाबाई।।
गोणाई दामशेटी झालें पाणिग्रहण। संसारी असो न नरसी गांवीं।।
गोत्र संज्ञा ऐका पूर्व जांची सहज। गाधिज भारद्वाज दोन्हीं कूलें।।
आऊ बाई कन्या झाली गोणाइसी। पुढें देवा नवसी पुत्रासाठीं।।
नामा म्हाणे होते बिठोवाचे मनीं। तेची नित्य जननी नवस करी।।
(कल्याण का निवासी ईश्वर भक्त गोमा छीपी था, उसकी साध्वी पत्नी उमा के गर्भ से गोणाबाई का जन्म हुआ। गोणाबाई का विवाह नरसी बामनी के दामसेठ के साथ हुआ। दोनों के गोत्र गाधिज और भारद्वाज थे। उनके आऊ बाई नामक कन्या हुई। गोणाबाई ने पुत्र के लिए भगवान् से प्रार्थना की।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि 14वीं शती के प्रारंभ में मुसलमानों ने अपना राज्य दक्षिण में स्थापित किया था। नामदेव ने अपने एक अभंग में तुर्कों द्वारा मूर्ति तोड़े जाने की बात कही है। अतः नामदेव का समय 14वीं शती के लगभग या अंत रहा होगा।[1]

किंतु प्रो० रानाडे का मत है कि उनका जन्म सन् 1270 में ही हुआ होगा। वे ज्ञानेश्वर के समकालीन थे। उनके अभंग जनता में, मौखिक परंपरा में प्रचलित रहने के कारण उनकी भाषा बदल गई है। मूर्ति तोड़ने के संबंध में उनका मत था कि अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण पर सन् 1306 में आक्रमण किया था। उसके सेनानायक मलिक काफर ने देवगिरि, वारंगल, होयसल और पांड्य राज्यों को जीता और अनेक स्वर्ण मूर्तियों को तोड़ा तथा अमूल्य रत्नों को लूटा था।

नामदेव का विवाह राजाबाई से हुआ था। जिनसे इनके चार पुत्र—नारायण, महादेव, गोविंद और विट्ठल हुए। नामदेव धीरे-धीरे सांसारिक जीवन से विरक्त होते गए। उन्होंने संत ज्ञानेश्वर के साथ समूचे महाराष्ट्र, पंचवटी, त्र्यंबकेश्वर, द्वारिका, प्रयाग, अयोध्या, काशी, राजपूताना बीजापुर, ऋष्यमूक, किष्किंधा, कुमार तीर्थ, तिरुपति, और सेतुबंध रामेश्वर की यात्राएँ कीं। कई बार उत्तर की यात्राएँ कीं। विट्ठल या वारकरी[2] संप्रदाय का प्रचार-प्रसार उत्तर भारत में किया। वृंदावन में विष्णुस्वामी इनके शिष्य हो गए। घूमते-घूमते ये पंजाब के भट्टीपाल गाँव पहुँचे। कुछ समय वहाँ रहने के पश्चात् जिला गुरुदासपुर में घुमान नामक गाँव बसाया जहाँ उनका स्मृति-मंदिर भी है। इस दौरान उनके बारे में अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ तथा किंवदंतियाँ प्रचलित हो गईं। इनमें मूर्ति को दूध पिलाना, मंदिर का द्वार पश्चिम की ओर करना, मृत गाय को जीवित करना तथा छान छबाना प्रमुख हैं। अपनी जाति के कारण इनकी कई बार ब्राह्मणों से टकराहट हुई और उत्कट भक्ति से उन्हें पराजित किया।

80 वर्ष की आयु में ये पुनः पंढरपुर आ गए। 3 जुलाई, 1350 को उनका निधन हो गया।

विचारधारा

1. नामदेव ने अपने उपास्य को अनेक नामों से अभिहित किया है। इन

1. भण्डारकर, वैष्णविज्म, शैविज्म एण्ड माइनर रिलीजस सिस्टम्स, पृ० 92
2. भगवान् पांडुरंग या विट्ठल की आषाढ़ और कार्तिक की एकादशी को दो यात्राएँ होती थीं। इन यात्राओं को पंढरी की बारी और आने वाले यात्रियों और साधकों को वारकरी कहा जाता था। इन्हीं से वारकरी संप्रदाय का जन्म हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामों में सर्वप्रमुख राम और विट्ठल हैं। नामदेव के अनुसार उनके राम निर्गुण और अव्यक्त हैं। वे निरंजन और गुणों से परे हैं। वे अंत तक विट्ठल के उपासक रहे।[1]

इन राम की प्राप्ति का पहला उपाय आत्म-दर्शन या आत्मानुभूति है। दूसरा उपाय नाम-स्मरण का है। नामदेव ने दूसरे उपाय पर अधिक बल दिया है—

हरि नांउ हीरा हरि नांवं हीरा।
हरि नांवं लेत मिटै सब पीरा ।।
हरि नांवं सकल भुवन ततसार, हरि नांउं नांमदेव उतरै पारै।।[2]
× × ×
जन नामदेव पायौ नांवू हरी।
नाम लेत सनिकादिक तारे, पारन पायौ तास हरी।।[3]
× × ×
सुनि भाई महिमां नांम तनी।।[4]

उन्होंने सद्गति की ओर ले जाने वाले कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा है कि राम-नाम के समान उनमें एक भी नहीं है।[5] उन्होंने राम को समस्त जगत् में व्याप्त कहते हुए उन्हें आत्म-तत्त्व से अभिन्न बताया है।

2. नामदेव के अनुसार संसार के प्राणियों पर माया का व्यापक प्रभाव है। माया साधक को हरि से दूर करती है। विषयों में लिप्त होने पर प्राणी को सब कुछ गँवाना पड़ता है। दुनिया की हाट में सौदा करने के लिए जीव को माया ही लाती है और उसके भुलावे में पड़कर प्राणी आत्मा-राम को भूल जाता है। वह मनुष्य को उसी प्रकार भ्रम में डालती है जैसे मृग को बिजूका भ्रम में डालता है। इसी माया

---

1. मंझा प्रांन तू बीठला। पैड़ी अटकी हो बाबुला।। (ह० प्रति, सं० 1021/4)
× × × × ×
जत्र जाउं तत्र बीठुक भैला। बीठलै पौ राजा रामदेवा। (ह० प्रति, सं० 1021/65)
2. ह० प्रति 1021/1
3. " " 1021/10
4. " " 1021/68
5. शब बसुधा दहिणा दै आवै, कोटि-कोटि जगि करै करावै।
सकल तीरथ करै अस्नांन, नही नही रे हरि नांव समांन।।1।।
अनेक धूम मन तैं उपजावै, अगिली पिछली बात बतावै।
कंठ पाठ मुख वेद पुरांन, नही नहीं रे हरि नांव समांन।।2।।
काया पलटि बहुत दिन जीवै, यौ ही रैहै कुछ खाइ न पीवै।
गगन मंडल मैं जोगै ध्यानं नही नहीं रे हरि नांव समांन।।3।। (ह० प्रति, 1021/97)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आड़ में छिपा काल भी प्राणी पर आक्रमण करता रहता है। यह माया ही जीव को हरि से मिलने नहीं देती।[1] अतः इस संसार से मुक्त होने के लिए माया से अलग होना आवश्यक है।

माया से मुक्ति हरि-कृपा से ही संभव है। जो लोग दिन-रात हरि का भजन न कर विषय-लिप्त रहते हैं, पर धन और पर दारा के लोभ में पड़े रहते हैं। ऐसे माया-लिप्त मनुष्यों से दूर रहना चाहिए। उन्होंने विषयों की ओर ले जाने वाले मन को चेतावनी दी है।[2]

3. परमार्थ-साधना में अग्रसर होने के लिए नामदेव ने सत्संग का उपदेश दिया है। वे कहते हैं, भक्तों के आगमन से चारों प्रकार की मुक्तियाँ सहज ही सुलभ हो जाती हैं और गोविंद मिल जाते हैं। भक्तों को उन्होंने भगवान् का रूप माना है। भक्त और भगवान् में अंतर नहीं है। ममता (माया) के दूर होने पर ही साधु-संगति मिलती है–

भगवंत भगता नही अंतरा।
द्वै कर जांणै पसु बानरा।।
कहत नामदेव ममिता जाइ, तौ साध संगति मैं रहे स्माइ।। (ह०, 135)

4. नामदेव ने आत्मा और परमात्मा के संबंध को मेघ-बूँद तथा जल-तरंग आदि न्यायों से व्यक्त किया है। उन्होंने हरि से अपने संबंध को स्वामी-सेवक, माता-पिता-पुत्र, सरोवर-तरंग तथा तरुवर-पंखी के समान बताया है।

5. जीवन और जगत् की नश्वरता पर बल देते हुए काल की भीषणता की ओर मनुष्य का ध्यान आकर्षित किया है। उनके अनुसार काल-व्याल के पाश से मुक्ति के लिए राम-रसायन का पान आवश्यक है।

---

1. माधौ जी माया मिलण न देई।
जन जीवै त्यौं करौ हो सनेही।। (ह० प्रति, 1021/124)
2. काइ रे मन विषिया वन जाइ।
देखत ही ठग मूली खाइ।।
मधू मांखी संचियौ अपार, मधू लीन्हीं मुख दीन्हीं छार।
गऊ बछ कूं सांचै खीर, गलै बाँधि दुहिले अहीर।।1।।
× × × ×
माया काजि बहुत क्रम करै, सो माया लेउं उै धरै।
अति अयांन जानैं नहीं मूल, धन धरती अचला पर धूल।।3।। (ह० प्रति, 1021/66)
× × × ×
पर धन परदारा परिहरी।
ताके निकट बसहि नरहरी।। (ह० प्रति, 1021/66)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6. नामदेव अपने प्रारंभिक काल में विट्ठल के सगुणोपासक रहे हैं। बीच में हठ-योग और निर्गुणोपासना की ओर प्रवृत्त हुए। अपने अंतिम काल में हिंदी पदों में अधिकांशतः निर्गुणमार्गी दिखाई पड़ते हैं किंतु हिंदी-पदों में स्थान-स्थान पर विष्णु के अवतारों की पौराणिक गाथाओं पर पूरी आस्था व्यक्त की है। अपने दो पदों में विस्तार से नृसिंह अवतार की कथा कहकर ईश्वर के प्रणत-रक्षण धर्म का प्रतिपादन किया है और एक पद[1] में उन्होंने नारद-गीता कही है, जिसमें विस्तार से नारायण ने नारद से अपने भक्ति-धर्म का निरूपण किया है और कहा है कि भक्ति ही से उनके दर्शन होते हैं। अन्य साधन व्यर्थ हैं।

7. नामदेव ने कुछ बातों का निषेध भी किया है। अपनी हीन जाति का उल्लेख करते हुए जाति-व्यवस्था पर प्रहार किया है।[2] लोभ, मद, अहंकार, काम और क्रोध को अवधूत के लिए हानिकारक बताया है। अहंकारी व्यक्ति पशु के समान होता है। उसकी मुक्ति नहीं हो सकती है। साधन के लिए अहंकार के त्याग को अनिवार्य माना है—

काहे रे नर ग्रब करत हो, बिनसि जाइगी देही।।
उंडी खंणि खंणि नीव दिवाई, ऊँचे मंदिर छाये।
मारकडे थैं कौन बड़ो है, तिण दे दिवस बुलाये।। 1।।
मेरी मेरी कैरौं करते, जरजोधन से भाई।
बारह जोजन छत्र चलत सिरि, देही गीधिनि खाई।। 2।।
श्रब सोवनी लंका होती, रांवण से अहंकारी।
छाड़ि गए दरि बांधे हाथी, छिन मैं भये भिखारी।। 3।।
दुरबासा सौं करी ठगौरी, जादौं सबै खपाये।
गरब प्रहारी है प्रभू मेरौ, नांमदेव हरि गुण गाऐ।। 4।।[3]

1. हस्तलिखित प्रति, 1021/104
2. देवा मेरी हीन जाती हौ।
काहू पै सही न जाती हौ।। (ह०, 1021/56)
× × × ×
छीपी कै घरि जन्म भैला, गुरउ पदे सीला।
संत के प्रसादि नांमदेव, नरहरि भेटीला।। (ह०, 1021/126)
× × × ×
बाप जी एत लौं आतरौं कीधौं।
जनम नांव दरजी नौं दीधौं।।
ब्राह्मण औचरे वेद नै बांणी, जेत लौ अतरौं दूध नैं पांणी।। (ह०, 1021/131)
3. ह० प्रति, 1021/162

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामदेव ने बाह्य कर्मकांड जैसे तीर्थ-यात्रा, मूर्ति-पूजा, देवी-देवताओं की उपासना आदि का विरोध किया है, लेकिन कभी-कभी ऐसे कथनों में उनके अंतर्विरोध भी उभरकर आए हैं।

कबीर

रैदास ने कबीर का सम्मानपूर्वक उल्लेख किया है। वे रैदास के समकालीन और आयु में कुछ बड़े थे। उत्तर भारत में निर्गुण भक्ति के आंदोलन के सूत्रधार और प्रेरक कबीर ही थे। अनंतदास की 'कबीर परचई' में उनके बारे में निम्न संकेत मिलते हैं—

1. कबीर जुलाहे थे। पहले वे मगहर और बाद में काशी में रहे थे।
2. रामानंद के शिष्य थे। बघेल राजा वीरसिंह देव उनके समकालीन थे।
3. सिकंदर लोदी काशी आया था और उसने कबीर पर अत्याचार किए थे।
4. कबीर ने 120 वर्ष की आयु पाई थी।

इनमें से दो सूचनाएँ भ्रामक हैं। यह पहले ही संकेत किया जा चुका है कि कबीर रामानंद के शिष्य नहीं थे। 'कबीर चरित्र बोध' के अनुसार कबीर का जन्म सं० 1455, ज्येष्ठ पूर्णमासी, चंद्रवार को हुआ था। किंतु ज्योतिष की गणना से यह तिथि सही नहीं बैठती है। पीपा ने एक पद में कहा है—'जो कलि माँझ कबीर न होते तौ लोक बेद अरु कलिजुग मिलि करि, भगति रसातलि देते।'[1]

इससे ज्ञात होता है कि कबीर पीपा से पूर्व हो चुके थे या पीपा के समय तक कबीर अपनी लोकप्रियता की चरम सीमा पर थे। पीपा का जन्म संवत् 1482 माना जाता है। अतः कबीर का जन्म संवत् 1482 से पूर्व हुआ होगा।

कबीर की कई निर्वाण-तिथियाँ प्रचलित रही हैं—

1. सुमंत पंद्रा सौ उनहत्तर हाई। सतगुरु चले उठ हंसा जाई।[2]
2. पंद्रह सै उनचास में मगहर कीन्हों गौन।।
अगहन सुदि एकादशी मिले पौन में पौन।।[3]
3. संवत पंद्रह से पछतरा कियौ मगहर कौ गौन
माघ सुदी एकादशी रलो पौन में पौन।। *(जनश्रुति)*

---

1. सरबंगी, राग सारंग।
2. धर्मदास, द्वादश पंथ।
3. प्रियादास की भक्तमाल टीका (हस्तलिखित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनमें से किसी भी तिथि के साथ दिन नहीं है, जिससे तिथियों की शुद्धता की जाँच की जा सके। लेकिन कबीर के उत्तराधिकारी होने के नाते धर्मदास द्वारा इंगित निर्वाण संवत् शुद्ध प्रतीत होता है क्योंकि तभी धर्मदास को कबीर की गद्दी मिली होगी।

जिस प्रकार कबीर की जन्म और निर्वाण-तिथियाँ विवादास्पद एवं अनिर्णीत रही हैं, उसी प्रकार उनका जन्म स्थान भी अज्ञात रहा है। जनश्रुतियों के आधार पर उनका जन्म ब्राह्मणी विधवा से हुआ। अपवाद भय से उन्हें लहरतारा में बहा दिया। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपती ने उनका लालन-पालन किया। यह तो सुनिश्चित है कि उनका व्यवसाय कपड़ा बुनना था और उनका लालन-पालन मुसलमान (जुलाहा) परिवार में हुआ था। समकालीन एवं परवर्ती कवियों के कथन इसके साक्षी हैं। लेकिन उन्होंने अपने को न हिंदू माना और न मुसलमान। उन्होंने स्पष्ट कहा है—

कबीर हिंदू मूये राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, दुइ मैं कदे न जाइ।।[1]

उन्होंने दोनों के बाह्याचारों तथा भेद-भाव पर कठोर प्रहार किए थे। उनकी स्पष्टवादिता और खंडन-प्रियता से दोनों धर्मों के लोग उनसे अप्रसन्न थे। सुलतान सिकंदर लोदी का उन पर कोप इसी कारण से रहा होगा। उन्हें उत्पीड़ित किया गया हो, इसमें संदेह नहीं। दादू पंथी और गुरु ग्रंथी दोनों पाठों में दो पद ऐसे आए हैं जिनमें किसी काज़ी द्वारा कबीर के जलमग्न किए जाने और हाथी से कुचलवाने के असफल प्रयत्नों का उल्लेख हुआ है। संभव है, उनके खुलेपन से नाराज होकर किसी धर्मांध काज़ी ने उन्हें प्राणदंड की सजा दी हो और वे किसी प्रकार बच गए हों।

कबीर ने जीवन के उत्तरार्ध में साधना में बाधक समझकर जुलाहे का व्यवसाय छोड़ दिया था—

तननां बुननां तज्या कबीर। रांम नांम लिखि लिया सरीर।
जब लग भरौं नली का बेह। तब लग टूटै रांम सनेह।।[2]

---

1. कबीर ग्रंथावली (सं० माताप्रसाद गुप्त) 31.7.
2. " " गौ०, 21

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे मधुकरी से अपना उदर-पोषण करने लगे थे।[1] उनकी अधिकांश मान्यताएँ हिंदुओं की प्रचलित मान्यताओं के विरोध में थीं। इसलिए वे काशी को मुक्ति-लाभ का केंद्र नहीं मानते थे। इसी विश्वास को दृढ़ करने के लिए वे अंतिम समय में काशी छोड़कर मगहर चले गए थे।[2] अपने अंतिम समय में इतने अनासक्त और त्यागी हो गए कि अपनी योग-साधना और मठ को त्यागकर पूरी तरह ब्रह्मवादी बन गए।

उनके विचारों, अनुभूति, चिंतन और अभिव्यक्ति-शैली से स्पष्ट है कि उन्होंने हठयोगियों, विशेषकर गोरखनाथ के काव्य और पूर्ववर्ती संतों में नामदेव के हिंदी काव्य का अच्छी तरह पारायण किया था। इन कवियों से भाव-बोध और अभिव्यक्ति-शैली में अद्‌भुत साम्य है। अतः उनकी विधिवत् शिक्षा न हुई हो, किंतु वे बहुश्रुती और बहुपाठी थे, इसमें संदेह नहीं।

मान्यताएँ

कबीर का सर्जनात्मक व्यक्तित्व इतना विराट् था कि उनकी मान्यताओं के आधार पर संत-संप्रदाय खड़ा हो गया था।

1. नामदेव की तरह कबीर ने अपने उपास्य को कई नामों से अभिहित किया है। इनमें सर्वप्रमुख नाम-राम है लेकिन कबीर के राम दशरथ-सुत या अवतारी पुरुष न होकर निर्गुण, अव्यक्त, निरंजन और निराकार हैं। वह सृष्टि के समस्त पदार्थों और प्राणियों में व्याप्त हैं। शरीर के नाश होने पर प्राणी का मन और जीव इन्हीं ब्रह्म में समा जाते हैं।[3] वे प्रत्येक प्राणी के घट में आत्मा के रूप में स्थित हैं। उन्हें प्राप्त करने के लिए प्राणी को अन्यत्र भटकने की आवश्यकता नहीं है—

अब घटि प्रगट भये रांम राई। सोधि शरीर कनक की नांई।।
बाहरि खोजत जनम गंवाया। उनमनीं ध्यान घट भीतरि पाया।।[4]

---

1. कबीर मीठा खांण मधूकरी, भांति भांति कौ नाजु।
दावा किस ही का नहीं, बिन बिलाइत बड़ राजु।। (क० ग्रं०, 35. 13. पे० श्लोक 168)
2. चरन विरद कूं न दैहूं। कहै कबीर भल नरकहि जैहूं। (सो० 28)
3. सो कछु बिचारहु पंडित लोई। जाकैं रूप न रेख बरण नहीं कोई।।
उपजै प्यंड प्रान कहां थैं आवे। मूवा जीव जाइ कहां समावै।।
कहै कबीर मन मनहि समानां। तब आगम निगम झूठ करि जानां।।
(कबीर ग्रंथावली, सं० माताप्रसाद गुप्त, गौड़ी, 37)
4. क० ग्रं०, गौड़ी, 17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराकार ब्रह्म की उपासना भक्ति और योग से की जा सकती है। इनमें भी भक्ति श्रेष्ठ है।

2. कबीर ने ब्रह्म-प्राप्ति का उपाय नाम-स्मरण बताया। नाम-स्मरण ही भक्ति और भजन का पर्याय है—

भगति भजन हरि नांव है दूजा दुक्ख अपार।
मनसा वाचा क्रमनां, कबीर सुमिरण सार।।[1]

उनके अनुसार जीवन की सार्थकता राम के प्रेम और उनके नाम-स्मरण में है—

जिहि घटि प्रेम न प्रीति रस, फुनि रसना नांही रांम।
ते नर इस संसार में, उपजि खये बेकाम।।[2]

उनके अनुसार राम-नाम के स्मरण से राम-रत्न अनायास मिल जाता है। नाम-स्मरण करते-करते मन राम-मय ही नहीं, राम ही हो जाता है।

3. कबीर के अनुसार जो कुछ दृश्यमान है, वह माया है, मिथ्या है। माया कंचन व कामिनी के समान है, पथ-भ्रष्ट करने वाली है। राम की प्राप्ति में विषय-सुखों की तृष्णा यानी माया बाधक है। माया के विविध रूपों का उल्लेख करते हुए 'जन' के लिए उन सबका परित्याग अनिवार्य माना है—

माया तंजू तजी नहिं जाई। फिरि फिरि माया मोहि लपटाई।।
माया आदर माया मांन। माया नहीं तहं ब्रह्म गियांन।।
× × × ×
माया मारि करै ब्यौहार। कहै कबीर मेरे रांम अधार।।[3]

माया के विभिन्न रूपों में से तीन पर कबीर ने विशेष बल दिया है। पहला है काम[4], दूसरा मान-सम्मान का लोभ[5] और तीसरा है—जाति, कुल, रूप, यौवन,

---

1. कबीर ग्रंथावली, सं० माताप्रसाद गुप्त, गौड़ी, 2.4
2. " " साखी, 2.17
3. " " गौड़ी, 84
4. कांमणि काली नागणीं, तीन्यूं लोक मंझारि।
रांम सनेही ऊबरे, विषई खाये मारि।। (क० ग्रं०, 20. 1)
पर नारी पर सुंदरी, बिरला बंचै कोइ।
खातां मींठी खांड सी, अंति कालि विष होइ।। (क० ग्रं०, 20.4)
5. माया तजी तौ का भया, मानि तजी न जाइ।
मानि बड़े मुनियर गिले, मानि सबनि कौ खाइ।। (क० ग्रं०, 16.17)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति, पांडित्य और वैभव का गर्व।[1]

4. नामदेव की तरह कबीर ने परमार्थ-साधना के लिए सत्संग को अनिवार्य माना है। उनके अनुसार साधु की संगति कभी निष्फल नहीं होती है। चंदन के संसर्ग में आने पर नीम भी चंदन के समान हो जाता है।[2] सत्संग दुर्मति का नाश करके सुमति लाता है।[3] कोई कितना ही तीर्थाटन करे किंतु सत्संग के बिना सब निष्फल है।[4]

5. कबीर ने आत्मा और परमात्मा के मिलन को बिंब-प्रतिबिंब भाव, स्रोत-जल तथा घट-जल न्याय से व्यक्त किया है। जैसे स्रोतजल और घटजल मिलकर एकाकार हो जाते हैं वैसे ही ब्रह्म और जीव मिलकर एकाकार हो जाते हैं—*जामैं हम सोई हम हीं मैं नीरं मिलें जल एक हूवा*—इसे अनेक दृष्टांतों से व्यक्त किया है—

मन लागा उनमन सौं, उनमन मनहिं बिलग्ग।
लूण विलग्गा पाणिया पाणी लूण बिलग्ग।[5]
× × × ×
पांणी ही ते हिम भया, हिम है गया बिलाइ।
जो कुछ था सोई भया, अब कछू कह्या न जाइ।[6]

6. नामदेव की तरह कबीर अपने चिंतन में जब राम-दर्शन या हरि-दर्शन की बातें करते हैं तो उनका तात्पर्य आत्म दर्शन से और हरि-लीनता और राम-रमण से तात्पर्य आत्म-लीनता और आत्म-रमण से होता है।

---

1. कबीर कहा गरबियौ, इस जोवन की आस।
केसू फूले दिवस चारि, खंखर भए पलास।। (क० ग्रं०, 12.8)
× × ×
दुनिया के धोखे मुवा, चले जु कुल की कांणि।
तब कुल किसका लाजसी, जब ले धर्या मसांणि।। (क० ग्रं०, 12. 46)
2. कबीर संगति साध की, कदे न न्रिफल होइ।
चंदन होसी बावना, नींब न कहसी कोइ।। (क० ग्रं०, 28.1)
3. कबीर संगति साध की, बेगि करीजै जाइ।
दुरमति दूर गंवाइसी, देसी सुमति बताइ।। (क० ग्रं०, 28. 2)
4. कबीर मथुरा जावै द्वारिका, भावै जाउ जगनाथ।
साध संगति हरि भगति बिन, कछू न आवै हाथ।। (क० ग्रं०, 28. 3)
5. क० ग्रं०, 5. 16
6. " " 5. 17

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

7. कबीर ने उत्कट राम-प्रेम को व्यक्त किया है। इस प्रेम-तत्त्व से उनका काव्य सरस हो गया है। नामदेव की तरह यह राम-प्रेम कभी पिता-पुत्र[1] कभी जननी-बालक[2] और कभी स्वामी-दास के रूप में आया है। 'हरि मोरा पीव भाई हरि मोरा पीव। हरि बिन रहि न सकै मोरा जीव' के माध्यम से दांपत्य-प्रेम व्यक्त किया है। नामदेव ने भी बार-बार ब्रह्मरूपी खसम के साथ अपने संबंध को दुहराया है।

8. कबीर ने अपने चिंतन में जीवन और जगत् की असारता पर बल दिया है। नामदेव ने भी जीवन और जगत् की नश्वरता पर बल देते हुए राम-रसायन से मुक्ति का उपाय सुझाया था। कबीर के अनुसार मरण और दुःख जाल से मुक्ति ही अमरता है, जो राम-रसायन के पान से मिलती है। कबीर के अनुसार यह रसायन ऐसा है कि समस्त जीवन को कंचन कर देता है।[3] राम-रसायन और प्रेम-रस का पान वही कर सकता है जो विनिमय में अपना सिर दे सकता हो।[4]

9. कबीर का ब्रह्म निर्गुण, निराकार, निर्विकार और अरूप है किंतु उन्होंने कहीं-कहीं पौराणिक संदर्भों और लीलाओं पर भी आस्था व्यक्त की है

10. कबीर के अनुसार मानव-योनि दुर्लभ है। यह बार-बार नहीं मिलती है। अतः मनुष्य को ऐसे उपाय (भक्ति और नाम स्मरण आदि) करने चाहिए जिससे आवागमन से मुक्ति मिल जाए—

मनिषा जनम दुलंभ है, देह न बारंबार।
तरवर तैं फल झड़ि पड़्या, बहुरि न लागै डार।।[5]

11. कबीर ने भक्ति के लिए अहंकार को सबसे अधिक बाधक माना है। अहंकारी से ब्रह्म दूर रहता है। संत अहंकार से मुक्त होता है—

---

1. पूत पियारो पिता कौ, गौहनि लागा धाइ।
 लोभ मिठाई हाथ दे, आपण गया भुलाइ।। (क० ग्रं०, 3/31)
2. हरि जननी मैं बालिक तोरा। काहे न औगुण बकसहु मेरा।
 कहै कबीर एक बुधि बिचारी। बालक दुखी दुखी महतारी।। (क० ग्रं०, गौड़ी 110)
3. राम रसाइंण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
 तिल एक घट में संचरै, तौ सब तन कंचन होइ।। (क० ग्रं०, 6.8)
4. राम रसाइन प्रेम रस, पीवत अधिक रसाल।
 कबीर पावन दुलंभ है, मागै सीस कलाल।। (क० ग्रं०, 6.2)
 कबीर भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आइ।
 सिर सौंपे सोई पिवै, और पै पिया न जाइ।। (क० ग्रं०, 6.3)
5. क० ग्रं० , 12/34

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोडा ह्वै रहौ बाट का, तजि पाखंड अभिमान।
ऐसा जे जन ह्वै रहै, ताहि मिले भगवान्।।

(क०ग्रं० 41.14)

उनके अनुसार अहंकार छोड़ने पर ही साधक ब्रह्म से एकाकार हो सकता है।[1] अहंकार के विरोध में कबीर ने काफी-कुछ लिखा है।[2]

12. नामदेव के पदों में हठ योग साधना की क्रिया, नाड़ी और चक्रों का उल्लेख मिलता है। कबीर के काव्य में भी हठ-योग की क्रियाओं, नाड़ी व चक्रों का उल्लेख हुआ है। इन दोनों पर नाथ पंथियों का प्रभाव रहा है।

13. अपने अध्यात्मवाद को समझाने के लिए नामदेव और कबीर ने रूपकों और प्रतीकों के साथ उलटबाँसियों का प्रयोग किया है।

14. कबीर ने सिद्धांत-प्रतिपादन के साथ निषेध-कथन भी किए हैं। उनमें अन्य देवोपासना, पितृ-पूजा, मूर्ति-पूजा, कर्मकांड, जातिवाद, संप्रदायवाद, शास्त्र-ज्ञान, तीर्थ-यात्रा, जीव-हिंसा संबंधी निषेध उल्लेखनीय हैं।

तुलनात्मक विवेचन

नामदेव, कबीर और रैदास की मान्यताओं में काफी समानताएँ हैं। उनके कवि-व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं और मानसिकता में थोड़ा अंतर हो सकता है, लेकिन अधिकांश आध्यात्मिक मान्यताएँ मिलती-जुलती हैं।

1. नामदेव और कबीर के समान रैदास ने भी ब्रह्म को अनेक नामों से संबोधित किया है, जैसे कृष्ण, कान्हा, केशव, बीठल, हरि, नरहरि और राम। इनमें राम-नाम को प्रमुखता उसी प्रकार दी गई है जैसे कि नामदेव और कबीर ने दी थी—

---

1. कबीर तूं तूं करता तूं भया, मुझ में रही न हौं।
   वारी फेरी बलि गई, जित देखौं तित तूँ।।
2. कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास।
   काल्हि पर्यूं, भ्वैं लेटणां, ऊपरि जामैं घास।। (क० ग्रं०, 12.10)
   कबीर कहा गरबियौ, चाम लपेटे हड।
   हैवर ऊपरि छत्र सिरि, ते भी देवां खड।। (क० ग्रं०, 12.11)
   × × × ×
   हाड जलै ज्यूं लाकड़ी, केस जलै ज्यूं घास।
   सब तन जलता देखि करि, भया कबीर उदास।। (क० ग्रं०, 12.16)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परचै रांम रमै जै कोई।[1]

× × × ×

राम जन हूँ उंन भगत कहाऊँ।[2]

× × × ×

भाई रे राम कहाँ है मोहि बतावो, सति रांम ताकै निकट न आवो।[3]

× × × ×

राम कहत सब जगत भुलाना, सो यह रांम न होई।[4]

रैदास के राम नामदेव और कबीर की तरह निर्गुण,. निराकार, निश्चल, निर्भय, अनुपम, अगम, अगोचर, निर्विकार और अविनाशी हैं।[5] वे परम सत्य हैं और अनिर्वचनीय हैं। कोई उनका वर्णन करे भी तो वह वैसे नहीं हैं। उनके बारे में कुछ कहना कठिन है। इतना अवश्य है कि बाहर-भीतर, घट-घट में सर्वत्र विद्यमान हैं। व्यक्ति उन्हें पहचान नहीं पाता।[6] नामदेव और कबीर के समान रैदास ने भी एक रस बनाते हुए उन्हें जड़-चेतन दोनों में समान रूप से विद्यमान बताया है।[7] वह अक्षत हैं और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में अवस्थित हैं। हर वस्तु व प्राणी उनमें समाया हुआ है। राम को अंतःकरण में ही पाना चाहिए। वह विराट् हैं, अगम्य हैं। उनके स्वरूप को पाना आसान नहीं है।[8]

1. रैदास रचनावली, छंद सं० 1
2. " " " " 4
3. " " " " 10
4. " " " " 15
5. कहै रैदास मैं ताही कूँ पूजौं, जाके गाँव न ठाँव न नाम नहीं कोई। (रै० र०, 4)

   × × × × ×

   परम तत्त्व का परिचय देते हुए रैदास ने कहा है—
   विमल ऐक रस, उपजै न बीनसे। उदै असत दोई नाही।
   बिगता बिगति गता गति नांही। बसत बसै सब मांही।।2।।
   नीह्चल नीराकार अजीत अनूपम। निरभै गति गौब्यंदा।
   अगम अगोचर अखिर अतरक। त्रिगुण नित आनंदा।।3।।
   सदा अतीत ग्यांन ध्यांन बिवरिजित। नीर बिकार अबिनासी।
   कहै रैदास सहज सूंनि तट। जीवन मुकति निधि कासी।।4।।
6. जस हरि कहिये तस हरि नांही, है अस जस कछु तैसा।
   जानत जानत जान रह्यो सब, मरम कहा निज कैसा।।1।। (रचनावली, 36)

   × × × × ×

   जा कारनि मैं दौर्‌यौ फिरतौ, सो अब घट में पाई।। (रै० र०, 2/5)

   × × × × ×

   सब घट अंतरि रमसि निरंतरि, मैं देखत ही नहीं जांनां।। (रचनावली, 13)
7. सब में हरि है हरि में सब हैं, हरि आपनपौ जिनि जांनां।। (रचनावली, 11)
8. चरन पाताल सीस असमांन, सो ठाकुर कैसैं संपटि समांन।
   सिव सनिकादिक अंत न पाया, खोजत ब्रह्मा जनम गवाया।।3।। (रचनावली, 91)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. नामदेव और कबीर की तरह रैदास ने जहाँ कहीं राम-दर्शन या हरि-दर्शन की बात कही है, उनका अभिप्राय आत्म-दर्शन से रहा है। जब वे हरि-लीनता और राम-रमण की बातें करते हैं तो उनका तात्पर्य आत्म-लीनता और आत्म-रमण से होता है।

3. नामदेव और कबीर की तरह रैदास ने ब्रह्म और जीव में अभिन्नता मानी है। नामदेव और कबीर ने इस अद्वैत संबंध को बिंब-प्रतिबिंब अथवा स्रोतजल-घटजल, मेघ-बूँद तथा जल-तरंग जैसा माना है जबकि रैदास इसे कनक-कुंडल, जल और तरंग, पाषाण और प्रतिमा जैसा मानते हैं। रैदास ने इनसे एक कदम आगे बढ़कर ब्रह्म और ब्रह्म-ज्ञान के समस्त रूपों में ऐक्य और अभिन्नता को देखा है–

कृश्न करीम रांम हरि राघौ, जब लग एक-एक नहीं पेख्या।
बेद कतेब कुरांन पुराननि, सहजि एक नहीं देख्या।।[1]

4. नामदेव विष्णु के अवतारों की विभिन्न लीलाओं में आस्था रखते हैं और प्रचुरता के साथ उनका उल्लेख करते हैं। कबीर का कथन है कि अवतारवाद में उनकी आस्था नहीं है, लेकिन वे अवतारों की लीलाओं का वर्णन करते हैं। पौराणिक भक्ति पर आस्था व्यक्त करते हैं।[2] रैदास ने भी पौराणिक संदर्भों और कथाओं पर आस्था व्यक्त की है–

सनक सनंदन महा मुनि ग्यांनी, सुख नारद ब्यास इहै बखांनीं।।
गावत निगम उमांपति स्वांमी, सेस सहंस मुख कीरति गांमीं।।3।।[3]

× × × × × ×

जयौ रांम गोब्यंद बीठल बासदेव। हरि विश्न बैकुंठ मधुकीटभारी।
कृश्न केसों रिषीकेस कवलांकत। अहो भगवंत त्रिबधि संतापहारी।।4।।[4]

× × × × ×

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 4.
2. भजन को परताप ऐसो तिरे जल पाषान।
अधम भील अजाति गनिका चढ़े जात विमान।। (क० ग्रं०, भैरू 10)
जो जाचीं तौ केवल राम। आन देव सूं नांहीं कांम।
जाके सूरिज कोटि करै परकास। कोटि महादेव गिरि कविलास।
ब्रह्मा कोटि बेद ऊचरै। दुर्गा कोटि जाकै मखन करैं।।
दास कबीर भजि सारंगपानि, देहु अभै पद मांगौं दाजि।। (क० ग्रं०, भैरू, 15)
3. रैदास रचनावली, छंद संख्या 75
4. " " " " 74

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वान सत्रु, अजाति सव थैं, अंतरि लावै हेत रे।
लोग वाकी कहा जानैं, तीनि लोक पवित रे।।2।।

अजामिल गज गनिका तारी, काटी कुंजर की पासिरे।।
अैसे द्रुमती मुकती कीये, क्यूं न तिरै रैदास रे।।3।।[1]

5. तीनों ने आत्म-दर्शन का उपाय योग माना है, जिसमें इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा की सहायता से चक्र-भेदन प्रमुख है। नामदेव और कबीर की तरह रैदास ने भी हठयोग की शब्दावली को आध्यात्मिक-साधना के लिए प्रयुक्त किया है—

अैसा ध्यान धरूँ बनवारी, मन पवन दिढ़ सुषमन नारी।
उलटी गंग जमुन मैं ल्यांऊँ, बिन ही जल संजम कै आंऊँ।
प्यंड परें जीव जिस घरि जाता, सबद अतीत अनाहद राता।
सुंनि मंडल मैं मेरा बासा, ताथैं जीव मैं रहूँ उदासा।
कहै रैदास निरंजन ध्यांऊँ, जिस धरि जाऊँ, जब बहुरि न आंऊँ।।6।।[2]

6. नामदेव और कबीर ने आत्म-दर्शन के लिए नाम-स्मरण को एक समर्थ साधन माना है। दोनों ने जीवन की सार्थकता राम के प्रेम तथा उनके नाम-स्मरण में मानी है। नामदेव ने नाम-स्मरण पर अनेक पद रचे हैं और अपना नाम सार्थक किया है। रैदास ने भी भक्ति के लिए राम-नाम के स्मरण पर बल दिया है। 'तिहू जुगी तीनों दृष्टी, कलि केवल नाम अधार' कहकर रैदास ने नाम-स्मरण की महत्ता प्रतिपादित की है। उनके अनुसार—

अैसी भगति न होइ रे भाई।
रांम नांम बिन जे कुछ करिये, सो सब भरम कहाई।।[3]

नाम-स्मरण में अविद्या बाधक बनकर आती है—

माधो अविद्या हित कीन्ह।
ताथैं मैं तोर नांव न लीन्ह।।[4]

रैदास ने नाम-स्मरण के साथ-साथ निष्काम, निश्छल और निर्मल भक्ति पर अधिक बल दिया है। नाम-स्मरण की महत्ता एवं व्यापकता पर उनका एक पद

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 57
2. " " " " 90
3. " " " " 17
4. " " " " 44

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लेखनीय है।[1]

7. तीनों ने परमार्थिक साधना में माया को सबसे बड़ी बाधा माना है। माया हरि की दासी है और उससे छुटकारा हरि-कृपा से ही संभव है। माया हरि से मिलने नहीं देती है। रैदास ने नामदेव और कबीर की तरह माया की भयंकरता, प्रबलता और तीक्ष्णता को उभारा है—

बरजि हो बरजि बीठल, माया जग खाया।
महा प्रबल सब हीं बसि कीये, सुर नर मुनि भरमाया।।[2]

कबीर ने माया के विविध रूपों का उल्लेख करते हुए उसे कभी डाइन के रूप में, कभी कामिनी के रूप में चित्रित किया है। रैदास ने उसे भयंकर सर्पिणी के रूप में प्रस्तुत किया है—

केसबे बिकट माया तोर।
ता थैं बिकल गति मति मोर।।
सुविष डसन कराल अहि मुख, ग्रसित सुठल सुभेख।
निरखि माखी बकै व्याकुल, लोभ, काल न देख।।1।।
इन्द्रीयादिक दुख दारुन, असंख्यादिक पाप।।
तोहि भजत रघुनाथ अंतरि, ताहि त्रास न ताप।।2।।[3]

माया में विचित्र सम्मोहन शक्ति है। बड़े-बड़े उससे आकुल-व्याकुल रहते हैं।[4] उससे पराजित हो जाते हैं। वह संसार को भ्रमित करती है।[5] ब्रह्म और माया के संबंध को निरूपित करने के लिए रैदास ने बाजीगर और बाजी का सांगरूपक

---

1. नामु तेरो आरती भजनु मुरारे।
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे।।
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा, नामु तेरा केसरो ले छिटका रे।
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो, घसि जपे नामु ले तुझहि के चारे।।
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।
नामु तेरे की जोति लगाई भउओ उजिआरो भवन सगला रे।।
नामु तेरो तागा नामु फूल माला, भार अठारह सगल जूठा रे। (रै० र०, 79)
2. रैदास रचनावली, छंद संख्या 39
3. " " " " 38
4. माया मोहिला कान्ह, मैं जन सेवक तोरा।
संसार परपंच मैं व्याकुल परमांनंदा।। (रै०, र०, 97)
5. झूठी माया जग डहकाया, तौ तनि ताप दहै रे।
कहै रैदास रांम जपि रसनां, माया काहू कै संगि न रहै रे।। (रै० र०, 53)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत किया है जिसमें बाजी को मिथ्या और बाजीगर (ब्रह्म) को सत्य बताया है—

बाजीगर सूँ रहनि रही जै, बाजी का मरम इब जानां।
बाजी झूठ साच बाजीगर, जानां मन पतियाना।।[1]

9. तीनों ने ब्रह्म की प्राप्ति के लिए अहं का विलयन एवं विसर्जन अनिवार्य माना है। जब तक व्यक्ति में अहं रहता है, ईश्वर-प्राप्ति असंभव है—

मैं तैं तोरि मोरी असमझ सों, कैसै करि निसतारा।।[2]

जब तक जीव ब्रह्म से एकाकार नहीं हो जाता तब तक अहंकार बढ़ता रहता है—

जब लग नदी न संमदि समावै, तब लग बढ़ै अहंकारा।।[3]

रैदास की प्रेम-भक्ति का मूलाधार अहंकार की निवृत्ति ही है। ब्रह्म की प्राप्ति के लिए सभी ओर से ध्यान हटाकर, समूची वृत्तियाँ उस पर केंद्रित कर देनी होती हैं। उस लक्ष्य को पाने के लिए अपने आप को भूल जाना होता है—

आपा खोयां भगति होत है, तब रहै अंतरि उरझाई।।[4]

जो 'जन' ऐसा नहीं करता, वह संसार में सब कुछ गँवा देता है—

मैं तैं ममिता देखि सकल जग, मैं तैं मूल गँवाई।।[5]

× × × ×

अब मोरी बूड़ी रे भाई, ता थैं चढ़ी लोग बड़ाई।
अति अहंकार ऊर मां सत रज तम, तामैं रह्यौ उरझाई।।[6]

रैदास ने अभिमान, मान व बड़ाई तक को भक्ति के लिए बाधक माना है। जब तक व्यक्ति में अहंकार रहता है, तब ब्रह्म नहीं रहता। जब ब्रह्म निवास करता है तब अहंकार नहीं होता। कबीर की तरह रैदास ने भी जाति, कुल रूप, यौवन,

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 11
2. " " " " 13
3. " " " " 3
4. " " " " 83
5. " " " " 4
6. " " " " 5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्ति, पांडित्य और वैभव के अभिमान को दूर करने का उपदेश दिया है—

हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संन्यासी।
ग्यांनी गुनीं सूर हम दाता, यहु मति कदे न नासी।।[1]

उनका कथन है—वास्तविक परिचय प्राप्त करने का रहस्य केवल सच्ची 'सोहागिन' ही जानती है जो अपना तन-मन सभी कुछ न्योछावर कर देती है और अभिमान का कुछ भी अंश अपने भीतर नहीं रखती, न भेद-भाव को ही कभी प्रश्रय देती है। अपने पति के साथ निरंतर एकनिष्ठ भाव से प्रेम न करने वाली स्त्री सदा दुःखिनी व 'दुहागिन' हुआ करती है।

9. तीनों ने परमार्थ-साधना के लिए सत्संगति की महत्ता स्वीकार की है। नामदेव का मत है भक्तों के आगमन से चारों प्रकार की मुक्तियाँ सहज ही सुलभ हो जाती हैं। ब्रह्म से साक्षात्कार हो जाता है। नामदेव ने भक्त और भगवान् में अंतर नहीं माना है। कबीर के अनुसार साधु-संगति कभी निष्फल नहीं होती है। सत्संग दुर्मति को दूर कर सुमति लाता है। कोई कितना भी तीर्थाटन करे किंतु सत्संग के बिना सब निष्फल है। रैदास ने भी नामदेव और कबीर की तरह सत्संगति की महिमा का वर्णन किया है। उनके आने से आवास पवित्र हो जाता है। ऐसे संतों के चरण धोने, तन, मन और धन न्योछावर करने से जीवन सार्थक होता है और व्यक्ति का उद्धार तो होता ही है, साथ ही अनेक जन्म के बंधन कट जाते हैं—

आज नां द्यौस नां ल्यौ बलिहारा।
मेरे ग्रिह आया राजा रांम जी का प्यारा।।
आंगन बठाण भवन भयौ पांवन, हरिजन बैठे हरि जस गावन।।1।।
करूँ डंडौत र चरन पखालूँ, तन मन धंन उन ऊपरि वारौं।।2।।
कथा कहैं अरू अरथ बिचारैं, आपन तिरै और कूँ तारैं।।3।।
कहै रैदास मिले निज दास, जनम जनम के कटे पास।।4।।[2]

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 14
2. " " " " 93

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर से सत्संगति की चाहना करते हुए[1], साधु-निंदक की कटु आलोचना की है।[2]

10. नामदेव ने जीवन और जगत् की नश्वरता पर बल देते हुए काल की भीषणता को रेखांकित किया है। उनके अनुसार काल-व्याल के पाश से मुक्ति के लिए राम-रसायन का पान अनिवार्य है। कबीर ने अपने चिंतन में जीवन और जगत् की असारता पर बल देते हुए अमरता के लिए राम-रसायन का पान करने और विनिमय में अपना सिर देने की बात कही है। रैदास ने भी एक सांगरूपक में आध्यात्मिक रसायन के बदले में सिर देने का उल्लेख किया है—

देहु कलाली एक पियाला।
ऐसा अवधू है मतिवाला।।
ए रे कलाली तैं क्या किया, सिरकै सा तैं प्याला दीया।
कहै कलाली प्याला देऊँ, पीवनहारे का सिर लेऊँ।।
चंद सूर दोऊँ सनमुख होई, पीवे पियाला मरै न कोई।।
सहज सुनि मैं भाठी सरवै, पीवे रैदास गुर मुखि दरवै।[3]

राम-रसायन का पान करने के पश्चात्, गोपाल से प्रेम घटता नहीं, बल्कि बढ़ता है—

मेरी प्रीति गोपाल सूँ जिनि घटै हो।
मैं मोलि महंगी लई तन सटै हो।

---

1. संत ची संगति संत कथा रसु।
संत प्रेम माझै दीजै देवादेव।।
संत तुझी तनु संगति प्रान। सति गुर गिआन जाने देवादेव।।1।।
संत आचरण संत चो मारगु। संत च ओल्हग ओल्हगणी।।2।।
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि। जणी लखावहु असंत पापी सणि।।3।।
रविदास भणै जो जाणै सो जाणु। संत अनंतहि अंतरु नाही।।4।। (रचनावली, 46)
× × × × × ×
जिह कुल साधु बैसनौ होइ।
बरन अबरन रंकु नहीं ईसरू बिमल बासु जानि ऐ जगि सोइ।।1।। (रचनावली, 86)
2. साध का निंदकु कैसे तरै।
सर पर जानहु नरक ही परै।।
जे ओहु अठिसठि तीरथ। जे ओहु दुआदस सिला पूजावै।
जे ओहु कूप तटा देवावै। करै निंद सभ बिरथा जावै।।1।। (रचनावली, 37)
3. रैदास रचनावली, छंद संख्या 45

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरदै सुमिरंन करौं नैन आलोकनां, श्रवना हरि कथा पूरि राखूँ।
मन मधुकर करौं, चरणा चित्त धरौं, राम रसांइन रसना चाखूँ।।
साध संगति बिना भाव नहीं उपजै, भाव बिन भगति क्यूँ होइ तेरी।।[1]

राम-रसायन के समक्ष सभी रस व्यर्थ हैं—

न बीचारिओ राजा राम को रसु।
जिस रस अनरस बीसरि जाही।।[2]

11. नामदेव और कबीर ने जीवन और जगत् की नश्वरता को रेखांकित करते हुए काल की भीषणता को अंकित किया है। रैदास ने भी जीवन और जगत् की नश्वरता और निस्सारता के अनेक प्रभावी चित्र उपस्थित किए हैं—

जो दीसै सो सकल बिनास, अण दीठै नांही बिसवास।।[3]
काचौ कुंभ भर्यौ जल जैसैं, दिन दिन घटतौ जाइ रे।।[4]

× × × ×

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा।
जैसे तरवर पंखि बसेरा।।1।।
जल की भीति पवन का थंमा। रकत बुंद का गारा।
हाड मास नाड़ी को पिंजरु। पंखी बसै बिचारा।।1।।
राखहु कंध उसारहु नीवां। साढे तीनि हाथ तेरी सीवां।।2।।
बंके बाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी।।3।।
उचे मंदिर सुंदर नारी। राम नाम बिनु बाजी हारी।।4।।[5]

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 72
2. " " " " 65
3. " " " " 1
4. " " " " 56
5. " " " " 68

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास के कथनों में अनुभवजन्य सच्चाई है।[1]

12. नामदेव और कबीर के समान रैदास ने भी निषेध कथन किए हैं। ये निषेध एकनिष्ठ भक्ति के लिए बाधक हैं। इनका परित्याग करके ही राम-भक्ति और सद्‌गति पाई जा सकती है। भक्ति के लिए उन्होंने बाह्य साधनों जैसे नृत्य-संगीत, तप, चरण-वंदना, संन्यास और तीर्थ-यात्रा का निषेध किया है—

कहा भयौ नाचैं अरु गामैं, कहाँ भयौ तप कीन्हैं।
कहा भयौ जे चरन पखालै, जो परम तत नहीं चीन्हैं।।1।।
कहा भयौ जे मूँड मुँड़ायौ, बहु तीरथ व्रत कीन्हैं।
स्वांमीं दास भगत अरु सेवग, जो परंम तत नहीं चीन्हैं।।2।।[2]

बाह्य उपकरणों की पवित्रता संदिग्ध है इसलिए मन ही पूजा है, मन ही साधना है—

रांमहि पूजा कहा चढ़ाँऊँ।
फल और फूल अनूप न पांऊँ।।
थनहर दूध जु बछ जुठार्‌यौ, पहुप भवर जल मीन बिटार्‌यौ।
मलियागिरि बेधियौ भवंगा, विष अंम्रित दोऊँ एकै संगा।।1।।
मन हीं पूजा मन हीं धूप, मन हीं सेऊँ सहज सरूप।।2।।[3]

रैदास ने भक्ति के अवरोधक काम, मोह, परनारी संग, लोभ, चंचल मन, क्रोध, मद, माया, अहंकार आदि का निषेध किया है। 'प्रत्रिया गालौ जांणि रे' या 'पर त्रिया संग भलौ जे होवै, तौ राणां रांवण देखि रे' जैसे कथनों से स्पष्ट होता है कि वे अंतःकरण की शुचिता, नैतिकता और आदर्शगत मूल्यों के समर्थक थे।

---

1. इहि तनु ऐसा जैसे घास की टाटी।
जलि गइओ घासु रलि गइयो माटी।।1।।
उचे मंदर साल रसोई। एक घरी फुनि रहनु न होई।।1।।
भाई बंध कुटंब सहेरा। ओइ भी लागे काढु सवेरा।।2।।
घर की नारि उरहि तन लगी। उह तउ भूति करि भागी।।3।। (रै० रचनावली, 103)
× × × ×
कहि मन रांम नांम संभारि।
माया कै भ्रमि कहा भूलौ, जाहिगौ कर झारि।।
देख धूं इहाँ कौन तेरौ, सगा सुत नहीं नारि।
तोरि तंग सब दूरि करि हैं, देहिंगे तन जारि।।1।। (रै० रचनावली, 98)
2. रैदास रचनावली, छंद संख्या 18
3. " " " " 40

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निम्न कथन इसकी पुष्टि करते हैं—

(1) *अहो देव कांम केसरि काल, भुजंग भांमिनी भाल, लोभ सूकर, क्रोध बर बारनूं।*

ग्रब गैंडा, महा मोह टटनीं, विकट अहंकार आरनूं जल मनोरथ ऊरमीं।।

तरल तृसनां मकर इन्द्री जीव जंत्रक मांहीं, समक व्याकुल नाथ, सत्य विष्यादिक पंथ, देव देव विश्राम नांही।।[1]

(2) *गोब्यंदे भौ जल ब्याधि अपारा।*
लोह की नाव पखांनि बोझा, सुकृत भाव बिहूंना।
लोभ तरंग मोह भयौ पाला, मीन भयौ मन लीनां।।[2]

(3) *मदन भवंग नहीं मंत्र जंत्रा, विषम पावक झाल।*
ताहि वार न पार, लोभ की श्रपनी गयांन हंता।।[3]

(4) *जल थल जीव जंत जहाँ जहाँ लौं, करम पासा जाइ।*
मोह पासि अबध बाधौ, करियै कौंण उपाइ।।[4]

(5) *राम बिन संसै गाँठि न छूटै।*
कांम क्रोध मोह मद माया, इन पंचन मिलि लूटै।।[5]

रैदास ने वेदों की आलोचना करते हुए सात्त्विक भाव की भक्ति पर बल दिया है—

मोर कुचिल जाति, कुचिल में वास, भगत चरन हरिचरन निवास।
चारिउ वेद किया खंडौति, जन रैदास करै डंडौति।।[6]
जग मैं बेद बैद मांनी जैं।
इनमैं और अंगद कछु औरै, कहौ कवन परिकीजै।।[7]

उन्होंने जाति-व्यवस्था का विरोध किया—

रे चित चेति चेति अचेत काहे, बालमीकौं देख रे।
जाति थैं कोई पदि न पहुच्या, राम भक्ति बसेख रे।।

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 74
2. " " " " 22
3. " " " " 23
4. " " " " 44
5. " " " " 15
6. " " " " 109
7. " " " " 95

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षट कर्म सहित जु विप्र होते, हरि भगति चित द्रिढ़ नांहि रे।
हरि कथा सूँ हेत नांही, सुपच तुलै तांहि रे।।[1]

सच्ची भक्ति के लिए बाह्य आचरणों को निषिद्ध माना है।[2]

रैदास ने भाव-भक्ति के संबंधों की भिन्न-भिन्न शृंखला प्रस्तुत की हैं। इसके लिए वे नामदेव के ऋणी रहे हैं–

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा। जउ तुम चंद तउ हम भए हैं चकोरा।।
तउ तुम दीवरा तउ हम बाती, जउ तुम तीरथ तउ हम जाती।।[3]
× × × × × × ×
तुम मखतूल गुलाल चत्रभुज, मैं बपुरौ जस कीरा।
तुम्ह चंदन में अरंड बापुरौ, निकटि तुम्हारी बासा।।[4]

कबीर ने राम-प्रेम की अभिव्यक्ति दंपती-भाव में की है। वह अभिव्यक्ति काफी सशक्त और प्रभावी ढंग से हुई है। निर्गुणोपासकों में कबीर ही एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने सगुणोपासकों की तरह माधुर्य-भाव की भक्ति पर बल दिया है। संभवतया इसके लिए वे सूफी-संप्रदाय से प्रेरित रहे हैं। प्रिय के विरह की वेदनापूर्ण अभिव्यक्ति जो कबीर में हुई है, वह लौकिक प्रेम के विरह-प्रधान काव्यों तक में कम मिलती है–

विरहिनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझै आइ।
एक सबद कहि पीव का, कब र मिलेंगे आइ।।[5]
बहु दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी रांम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूं, मनि नहीं बिश्राम।।[6]

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 57
2. भगति न रस वांन, भगति न कथै ग्यांन, भगति न बन मैं गुफा खुँदाई।
भगत न इन्द्री बाधें, भगति न जोग साधे, भगति न अहार घटाये, ए सब क्रम कहाई।
भगति न निद्रा साधें, भगति न बैराग साधें, भगति नहीं यहु सब बेद बड़ाई।। (रै० र०, 17)
3. रैदास रचनावली, छंद संख्या 67
नामदेव ने भी यही भाव व्यक्त किए थे–
जहाँ तुम गिरिवर वहां हम मोरा। जहाँ तुम चंदा तहां मैं चकोरा।
जहाँ तुम दीवा, तहां मैं बत्ती। जहाँ तुम पंथी, तहाँ मैं साती।।
4. रैदास रचनावली, छंद संख्या 43
5. " " " " 3.5
6. " " " " 3.6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंखडिया झांई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या, रांम पुकारि पुकारि।।[1]
कै बिरहणि कूँ मीच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहर का दाझणा मो पैं सह्या न जाइ।।[2]

कबीर में जितना विरहोन्माद था, उतना मिलन-हर्षोल्लास नहीं था, किंतु उनका संयोग-पक्ष अन्य संत कवियों से बढ़कर था–

दुलहिनी गावहु मंगलाचार।
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।।
बहुत दिनन थैं मैं पीतम पाये। भाग बड़े घरि बैठे आये।।[3]
हरि मेरा पीव माई हरि मेरा पीव। हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव।
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया। राम बड़े मैं छुटक लहुरिया।।[4]

नामदेव ने भी उस मिलन के संकेत दिए हैं–

मैं बऊरी मेरा राम भतारू। रचि-रचि ताकऊ करउं सिंगारू।।
भले निंदऊ भले विंदऊ लोगू। तनु मनु राम पियारे जोगू।।
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई। मिलऊ गुपाल नीसानु बजाई।।[5]

उन्होंने एक पद में आध्यात्मिक मिलन का सुंदर चित्र उपस्थित किया है।[6] रैदास ने एक पद में विरहाभास दिया है। उसमें कबीर जैसी व्याकुलता, तीव्रता और वेदना नहीं है–

---

1. कबीर ग्रंथावली, छंद संख्या 3.22
2. " " " " 3.35
3. " " " " गौड़ी-2
4. " " " " " 116
5. गुरु ग्रंथ साहिब, 2320
6. धन दिहाड़ौ, धनि घड़ी ऐ।
   साधो भाई गोबिंद जी घरि आव्या ऐ।।
   चंदनि चौक पुरावि ज्यौ ऐ, साधौ भाई पाँच सखी मिलि र बधावा ऐ।।1।।
   गगन मंडल म्हारौ बैसणौं ऐ, साधौ भाई बाजै अनहद तूरो ऐ।।2।।
   हरि जी आव्या म्हारै पांहुणां ऐ, साधौ भाई आज बधावौ पूरो ऐ।।3।।
   आवरि लागी बादली ऐं, साधौ भाई झिरिमिरि बरषै मेहो ये।।4।।
   गरीब नांमदेव हरि भज्यौ ऐ, साधौ भाई लोग हस बादी ज्यौ ए।।5।।
   (हस्तलिखित प्रति, 1021/152)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मोहि बेदन का सजि आखूँ।
हरि बिन जीव न रहै कैसे करि राखूँ।।
बिरह तपै तनि अधिक जरावै, नीदड़ी न आवै भोजन नहीं भावै।।1।।
सखी सहेली ग्रब गहेली, पीव की बात न सुनहु सहेली।
मै रे दुहागनि अधिक रंजानीं, गया सजोबन साध न मांनीं।।[1]

निस्संदेह, माधुर्योपासना में कबीर अग्रणी रहे हैं। तीनों के काव्य में विरह-मिलन के संदर्भ आए हैं। रैदास की भक्ति प्रेममूलक है। उन्होंने परम तत्त्व को पहचानने, 'अनभै' रहने और संसार के कार्यकलापों को भ्रम मानने पर बल दिया है–

मन की महिमा सब कोई कहै, पंडित सो जे अनभै रहै।।[2]
प्रसादि भई अनभै मति, विष अमृत समि धावेगा।।[3]
पढ़ैं गुनैं कछू संमझि न परई, अनभै पद न लही जै।।[4]

नामदेव और कबीर दोनों ने ब्रह्म को सत्य और जगत् को मिथ्या माना है। नामदेव ने कहा था–'मैं सारा तुम्हारा नाउं है, झूठा सब संसार।' जगत् की असारता पर कबीर ने काफी कुछ कहा है, लेकिन रैदास ने अपने काव्य में 'भ्रम' पर सर्वाधिक बल दिया है–

भाई रे भ्रम भगति सुजांनि।
जौ लूं नहीं साच सूँ पहिचानि।।
भ्रम नाचण भ्रम गाइण, भ्रम जप तप दांन।
भ्रम सेवा, भ्रम पूजा, भ्रम से पहिचानि।।1।।
भरम षट क्रम सकल सहिता, भ्रम गृह बन जांनि।
भरम इंद्री निग्रह कीयां, भ्रम गुफा में वास।।
भ्रम तौ लौं जांणियें, सुनि की करै आस।।3।।
भ्रम सुधि सरीर जौ लौं, भ्रम नाउं बिनाउँ।
भ्रम भणि रैदास तौ लौं, जो लौं चाहे ठाऊँ।।[5]

× × × ×

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 83
2. " " " " 1
3. " " " " 15
4. " " " " 95
5. " " " " 7

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिक़ जतन निग्रह कीए, टारी न टरै भ्रम फास।
प्रेम भगति नहीं उपजै, ता ते रविदास उदास।।[1]

रैदास की प्रेम-भक्ति में तन्मयता, सरसता, समर्पण, आत्म-निवेदन, आत्म-ग्लानि और एकांतिकता है। वे संबंधों की समग्रता अपने प्रभु से जुड़ने में मानते हैं–

जो तुम तौरौ रांम मैं नहीं तोरौं।
तुम सौं तोरि कवन सूँ जोरौं।
तीरथ-ब्रत का न करौं अंदेसा, तुम्हारे-चरन कवल का भरोसा।
जहां जहां जांऊं तहां तुम्हारी पूजा, तुम्ह सा देव अवर नहीं दूजा।।
मैं हर प्रीति सबनि सूं तोरी, सब स्यौ तोरि तुम्हैं स्यूं जोरी।
सब परहरि मैं तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।।[2]

13. नामदेव ने परमार्थ-साधना में मन को बाधक माना है। विषयों की ओर दौड़ते मन को उन्होंने काफी उपालंभ भी दिए हैं–

काइ रे मन बिषिया वन जाइ।
देखत ही ठग मूली खाइ।।
मधू मांखी संचियौ अपार, मधू लीन्हीं मुख दीन्हीं छार।
गऊ बछ कू संचै खीर, गलै बांधि दुहिले अहीर।।[3]
× × × ×
काहे रे मन भूलौ फिरैई।
पुत्र कलित्र धन चित बिसासा, छांडि मनां रे झूठी आसा।।[4]

कबीर ने भी परमार्थ-साधना में माया के अतिरिक्त मन को दूसरी बड़ी बाधा माना है। मन को प्रभावित कर माया साधक को साधना-पथ से विचलित करती रहती है, इसलिए कबीर ने मन की काफी निंदा और भर्त्सना की है–

कबीर मन पंखी भया, बहुतक चढ़या अकास।
उहां ही तै गिरि पड़्या, मन माया के पास।[5]

---

1. रैदास रचनावली, छंद संख्या 34
2. " " " " 59
3. " " " " 66
4. " " " " 85
5. कबीर ग्रंथावली, 13.25

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काया देवल मन धजां, विषै लहरि फहराइ।
मन चाल्यां देवल चलै, ताका सरबस जाइ।।[1]

कबीर ने यहाँ तक कहा है कि मन को भली भाँति चूर-चूर कर डालना चाहिए। इसे नन्हा-नन्हा कर पीस डालना चाहिए। यह चंचल मृग के समान है, जिसे मार डालना चाहिए। रैदास इस संदर्भ में मौन हैं। लेकिन मन को चेतावनी उन्होंने अवश्य दी है–

रे मन माछला संसार समंदे, तू चित्र बिचित्र बिचारि रे।
जिहि गालै गिलियाँहीं मरियें, सो संग दूरि निवारि रे।।[2]

14. कबीर ने परमार्थ साधक को जीवन्मृतक होने का उपदेश दिया है। उनके अनुसार जीवन्मृतक वह है जो विषयों की सुख-कामना और जगत की आशा-अपेक्षा त्याग देता है। मन और शरीर को सर्वथा निर्बल कर देता है। ऐसा जीवन्मृतक कालजयी हो जाता है और वही राम-प्रेम की खरी कसौटी पर टिक पाता है। इसी को कबीर ने सहजावस्था कहा है। नामदेव और रैदास इस संबंध में मौन हैं।

15. मानव जीवन की श्रेष्ठता और दुर्लभता पर कबीर ने यथेष्ट बल दिया है। नामदेव इस संदर्भ में मौन हैं। रैदास ने केवल एक पद में मानव-जीवन की दुर्लभता का उल्लेख किया है–

त्रिजुग जोनि अचेत संम भूमि, पाप पुण्य न सोच।
मनिषा अवतार दुरलभ, तिहूँ संकुट पोच।।[3]

16. नामदेव और कबीर ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता का विरोध किया है। इसके लिए हिंदू और मुस्लिम दोनों समाजों की आलोचना की है–

हिंदू अंना तूरकू काणा दोहां ते गिआना सिआणा।
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीत।।
नामें सोई सेविआ जह देहुरा न मसीत।।[4]

---

1. कबीर ग्रंथावली, 13.28
2. रैदास रचनावली, छंद संख्या 56
3. " " " " 44
4. गुरु ग्रंथ साहिब, 1214

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर ने भी कहा है—

हिंदू मूये राम कहि, मुसलमान खुदाइ।
कहै कबीर सो जीवता, दुह में कदे न जाइ।। (कबीर ग्रंथावली, 31.7)

17. नामदेव योगी भक्त हैं। आत्म-दर्शन के लिए उन्होंने योग की साधना का उपदेश दिया है। उनके चिंतन पर नाथपंथियों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है—

देवा बेन बाजै गगन गाजै, शब्द अनाहद बोलै हो।
अंतरगति की जानैं नांही, मूरख भ्रमत डोल।।
चंद सूर दोऊ समि करि राखूँ, मन पवन दिढर्य हो।
सहज सुषमन तारा मंडल, इहिं बिधि त्रिष्ना खांडी।।
गगन मंडल मैं रहनि हमारी, सहज सुनि ग्रिह मेला हो।
अंतर धूनि धूनि मैं मन बिलिबाऊं, कोई जोगि याग मिलहैगा।।[1]

कबीर-काव्य में आत्म-दर्शन का प्रमुख साधन योग है। उसकी चर्चा विस्तार से हुई है। उन पर गोरखनाथ का काफी प्रभाव है। अपनी वाणी में बार-बार गोरखनाथ का स्मरण किया है। उनको राम-दर्शन या आत्म-दर्शन गगन या शून्य में होता है—

कबीर मन लागा उनमन सौं, गगन पहूंचा जाइ।
देख्या चंद बिहूंणां चांदिणां, तहां अलख निरंजन राइ।।[2]
× × × × × ×
कबीर पंखि उड़ाणीं गगन कौं, प्यंड रहा परदेस।
पांणीं पीया चंच बिन, भूलि गया यहु देस।।[3]
× × × × × ×
आकासे मुखि औंधा कूवा, पाताले पनिहारि।
ताका पांणी को हंसा पीवै, बिरला आदि बिचारि।।[4]

रैदास योगी की अपेक्षा भक्त अधिक हैं।

---

1. हस्तलिखित प्रति, 1021/70
2. कबीर ग्रंथावली (सं० डॉ० मा० प्र० गुप्त), 5/15
3. " " " , 5/20
4. " " " , 5/46

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर योगी, भक्त और प्रेमी तीनों हैं। गोरखनाथ से प्रभावित होते हुए उस सीमा तक योगी नहीं हैं जिस हद तक गोरखनाथ हैं। उन्होंने कहीं भी वज्रोली और अमरोली जैसी यौन-साधनाओं का समर्थन नहीं किया है। वे नामदेव की तरह भक्त हैं। भाव-भक्ति के सभी रूप इनमें भी हैं, जो नामदेव में हैं। नामदेव और कबीर ने भाव-भक्ति के विविध संबंधों जैसे पिता-पुत्र, स्वामी-सेवक, सखा-सखी आदि को मान्यता दी है। रैदास ने एक-दो स्थानों पर ऐसे संबंधों का उल्लेख किया है।[1]

इस प्रकार आध्यात्मिक चिंतन और साधना-पद्धति में नामदेव, कबीर और रैदास में काफी साम्य है। फिर भी तीनों का कवि-व्यक्तित्व अपने-अपने ढंग का है। कबीर का रचना-संसार काफी विस्तृत और वैविध्यपूर्ण है। उन्होंने लगभग 810 साखियों, 403 पदों तथा 7 रमैणियों की, नामदेव ने लगभग 300 पदों और 17 साखियों और रैदास ने केवल 116 पदों और 30 साखियों की रचना की है। इसीलिए भाव, विचार और दार्शनिक चिंतन की दृष्टि से कबीर-काव्य, संत-काव्य का मेरुदंड माना जाता रहा है। उत्तर भारत में संत-मत के प्रचार और प्रसार का श्रेय नामदेव को है। अपनी निर्मल भक्ति, शुद्ध आचरण और नैतिकता के लिए प्रसिद्ध रैदास संत-काव्य परंपरा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

समकालीन कवि

सेन : समकालीन कवियों में सेन, पीपा और धन्ना उल्लेखनीय हैं। सेन बांधवगढ़-नरेश वीरसिंह देव बघेल के नाई, प्रिय पात्र और बाद में गुरु थे। अनंतदास की 'रैदास परचई' में प्रसंग आया है कि जब झाली रानी की दीक्षा के समय ब्राह्मणों और रैदास में विवाद बढ़ गया तब उसमें मध्यस्थता के लिए बघेल और सेन आए थे। उस समय संकट के समाधान हेतु कबीर ने रैदास को सुझाव दिया था कि वे अपना सब कुछ (वैभव, देवल व शालिग्राम) सेन को सौंप दें। रैदास ने ऐसा ही किया। ब्राह्मणों का विरोध शांत होने पर रात्रि को रैदास और सेन कबीर से मिलने गए, जहाँ कबीर और रैदास में सगुण और निर्गुण को लेकर विवाद हुआ जिसमें रैदास ने कबीर की मान्यताओं को स्वीकार कर लिया था।[2]

---

1. जन कूँ तारि तारि तारि तारि बाप रमइया।। (रै० रचनावली, 77)

   × × × ×

   अैसौ कछु अनभै कहत न आवै।
   साहिब मेरौ मिलै तौ को बिगरावै।। (रै० र०, 11)
2. देखें रचनावली का परिशिष्ट 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि सेन बुद्धिमान, व्यावहारिक बुद्धि वाले और संगठन-क्षमता से संपन्न थे। विवादों को निपटाने में उनकी सहायता ली जाती थी। सेन निर्गुण-सगुण विवाद में साक्षी रहे होंगे क्योंकि उनकी एक रचना 'कबीर-रैदास संवाद' के नाम से मिली है।[1] उससे उनकी तर्क-शक्ति, संवाद-कौशल तथा आरोप-प्रत्यारोप-क्षमता का परिचय मिलता है।

कहा जाता है कि सेन ने एक पद में अपने व्यावसायिक उपकरणों को साधनात्मक प्रतीकों के रूप में प्रयुक्त किया था। उसका भाव-सार था—"हम प्रतिबार बड़ी हजामत बनाते हैं, विवेकरूपी दर्पण दिखाते और वैराग्य की कैंची चलाते हैं। सिर पर शांति का जल छिड़कते और अहंकार की चुटिया घुमाकर बाँधते हैं। भावार्थों की बगलें साफ करते और काम-क्रोध के नख काटते हैं। चारों वर्णों की सेवा करते और निश्चिंत रहते हैं।"

इनकी भक्ति में तन्मयता और विभोरता है। भाव-भक्ति के अंतर्गत इन्होंने ब्रह्म से अपना संबंध स्वामी-सेवक का माना है—

दास नहीं छाड़ियो हो।
तेरौ जन जे अपराधी होइ।।
अमृत अनूप सरोदिका, संतति भीतरि वास।
एक बूँद प्रापति नहीं, जन क्यू पीवै विसवास।।1।।
हौं तुम्ह कारनि बींनंउ, निस दिन खरौ उदास।
उदिक तीरथ सु बांधियौ, बिन खसमहि मरै पियास।।2।।
और नहीं आलंवनां, जन सैन कहे संमझाई।
तुम्ह ठाकुर मैं सेवगा, कृपा करौं राम राइ।।3।।[2]

पीपा—पीपा, गागरौन गढ़ के खींची चौहान राजा थे। समस्त सुविधाओं और ऐश्वर्य से संपन्न थे। अनंतदास ने 'पीपाजी की परचई' में इन्हें प्रजा-वत्सल, कुशल शासक और धार्मिक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है—

गागरैंनिपुर पाटण थांनां कीनौं दास अनंत बखांनां।।1।।
गागरैंनिपुर बरनौं कैसा, छेदीये पाप धरम तहाँ वैसा।।
बहु बिधि बापी कुवा निवासा, अवर मंडप सोहै चहुँ पासा।।2।।

---

1. देखें परिशिष्ट 2
2. हस्तलिखित प्रति, सं० 992

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिहि पुर पीपा खीची राऊ, परिजा कौ दुख देय न काऊ।
राजनीत्य राखै परिवांणां, रग सूरौ धरमेष सुजाणां।।3।।
रण सूरौ धरमेष सुजांणां, कुल छत्तीस बसै तिहि गांमू।
दान पुन्य सबही कैं धांमू।।4।।[1]

अन्य संतों की तरह इनकी जन्म-तिथि अज्ञात और विवादास्पद रही है। डॉ० फर्कुहर के अनुसार इनका जन्म सन् 1425 (संवत् 1482) में हुआ।[2] जनरल कनिंघम के अनुसार पीपाजी जैतपाल की चौथी पीढ़ी में हुए थे—जैतपाल > सावंत सिंह > राव केरवा > पीपाजी। इस परंपरा के अनुसार कनिंघम ने पीपाजी का जन्म सन् 1360 से 1392 ई० के बीच माना है।[3] डॉ० पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने पीपा के पौत्र अचलदास एवं सुल्तान होशंग गोरी के बीच हुए विवाद एवं उसके द्वारा 1429 ई० में छिन गए गागरौन गढ़ के आधार पर माना है कि पीपाजी का जन्म सन् 1353 और 1403 के बीच हुआ होगा।[4] एक मत के अनुसार ये मेवाड़ के राणा कुंभा (सन् 1431 से 1469) के समकालीन रहे थे। मेवाड़ के इतिहास से ज्ञात होता है कि इनके बड़े भाई अचलदास खींची के साथ राणा कुंभा की बहन लाल का विवाह हुआ था और यह उनकी प्रथम रानी थी। अतः परशुराम चतुर्वेदी का मत है कि इनका जन्म सन् 1408 और 1418 के बीच हुआ होगा।[5]

प्रारंभ में पीपा शाक्त थे। नगरकोट की देवी (भवानी) के परम भक्त थे—

पीपा पूजै आदि भवांनी, देवी नग्र कोट की रांणी।।
बहु बिधि करै मात की सेवा, और न जाणै दुजौ देवा।
देबी हेत करै बहु धरमूँ, जाणों नहीं मुकत्य कौ मरमूं।।[6]

इसकी पुष्टि सेन की रचना 'कबीर-रैदास संवाद' से भी होती है। इसमें कबीर ने दुर्गा से उपालंभ देते हुए कहा है—

तो सेयां जो गति मुक्ति है तो पीपै क्यू त्यागी।

1. हस्तलिखित प्रति से उद्धृत
2. उत्तर भारत की संत परंपरा, पृ० 234 से उद्धृत
3. आर्कियालाजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग 2, पृ० 295-7 और भाग 3, पृ० 111
4. दि निर्गुण स्कूल, पृ० 302
5. उत्तर भारत की संत परंपरा, 234
6. पीपाजी की परचई, ह० प्रति, संवत् 1726

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु-संगति से राज-पाट छोड़कर निर्गुण साधना में प्रवृत्त हो गए। रामानंद को इनका गुरु मानकर उनके साथ यात्राएँ करने का उल्लेख पाया जाता है किंतु इसके न अंतःसाक्ष्य हैं और न बहिर्साक्ष्य।

इनकी छोटी रानी का नाम सीता था। उसी के साथ द्वारिका तक तीर्थयात्रा पर गए थे। इनके एक पद से द्वारिका जाने की पुष्टि होती है—

पौढ़ो स्वामी द्वारका रनछोर।।
द्वारका में झालर बाजै, संखन की घनघोर।
रुकमनी के रंग महल में, दीपक लाख करोर।।
थे पौढ़्याँ थारा सेवक पौढ़े, पौढ़े पुरी का सारा लोग।
दास पीपौ सरन थारीं, गावै छै दोनूँ कर जोर।।[1]

द्वारिका से लौटकर ये मृत्युपर्यंत एक मंदिर में रहे। कबीर ने अपने 'बीजक' में ब्रह्मा, वरुण, कुबेर, इंद्र और प्रह्लाद के साथ पीपा का स्मरण किया है। पीपा ने भी नामदेव, कबीर और रैदास का ससम्मान स्मरण किया है।[2] कबीर के बारे में उनके विचार अत्यंत श्रद्धास्पद थे—

जै कलि नांम कबीर न होते।
तौ लोक बेद और कलियुग मिलि करि भगति रसातलि देते।।[3]

अनंतदास ने इन्हें ईश्वर तुल्य माना है।[4]

इनके कुछ पद व साखियाँ हस्तलेख सं० 901, सं० 992, सं० 1059,

---

1. हस्तलिखित प्रति से उद्धृत
2. जिनि भजें हरि चरण जीते चारयौं वरण।
   जास की जाति अछोप छीपा।।
   ब्यास मैं लेखिये सनक मैं पेखिये।।
   नांमा की नामनां सपत दीपा।।1।।
   जाकै ईदि बकरीदि गऊ रह बध करैं।
   मांनिये सेख सहीद पीरा।।
   बापि अैसी करी पूत्य ऐसी धरी। नांव नव खंड प्रास्यध्य कबीरा।।2।।
   जाके कुटंब के ढेढ ढोर ढोवत फिरैं। अजहूं बानारसी आसपासा।
   षट क्रम सहित विप्र डंडबत करैं। प्रगट नीसांण रैदासा दासा।।3।।
   (हस्तलिखित प्रति सं० 992, राग रामगरी)
3. ग्रंथ सरबंगी, ह० लि० प्रति।
4. पांडुलिपि सं० 901, पीपाजी की साखी, 1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सर्वंगी' तथा 'सरब गोटिका' में उपलब्ध हैं। इनका एक छंद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी संकलित है। इनके भाव, विचार व आध्यात्मिक चिंतन संत-काव्य विशेषकर कबीर और रैदास से साम्य रखते हैं। सत्संग की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है–

पीपा पारिस परसंता, लोहा कंचन होइ।
सिध कै काठै बैसतां, साधिक भी सिध होइ।।[1]

कबीर की तरह उन्होंने माया-कामिनी के परित्याग पर बल दिया है–

पीपा माया नारी परहरै, चित सौं धरै उतारि।
ते नर गोरखनाथ ज्यों, अम निय संसारि।।[2]

उनकी भक्ति एकनिष्ठ थी–

मन भजसि रे हरि चरण परम पूंनीत आरति हरन और जंजाल सब त्यागि लोई।
जोग नैं जिग जै कोटि तीरथ करै। तो बिना रघूनाथ नहीं मुकति होई।।1।।
जपत जहा जनां, चरन कंवलापती, तास समतूलि नहीं और कोई।
आदी ही ऐक अनेक ह्वै बिसतरयौ, अंति ही ऐक कौ ऐक सोई।।2।।[3]

ब्रह्म बाजीगर है जिसकी नट विद्या ने संसार को बाँध रखा है–

माधवे नट विद्या मंडी। सब जग राख्यौ माया बाँधी।
प्रणवंत पीपा सब जग पेख्या। बाजीगर अभिअंतरि देख्या।।[4]

नामदेव और रैदास की तरह भाव-भक्ति के संबंधों की श्रृंखला प्रस्तुत की है–

तू मेरा तरवर मैं जन पंखी।
जौ तुम्ह गिरवर तौ मैं मोरा। जो तुम्ह चदा रांम तौ मैं चकोरा।।
जो तुम्ह तीरथ तौ मैं जाती। जे तुम्ह देवा रांम तौ मैं पाती।।
पीपा प्रणवै अंतरजांमी। मैं तेरो सेवग तू मेरौ स्वांमी।।[5]

धन्ना–धन्ना ने अपने अग्रजों नामदेव, कबीर, रैदास और सेन को सम्मानपूर्वक स्मरण करते हुए उन्हें अपना प्रेरक माना है–

---

1. पांडुलिपि सं० 901, पीपा जी की साखी, 1
2. " , " , 9
3. सरबंगी, संत सहाईक अंग, पृ० 18
4. पांडुलिपि सं० 992, राग आसावरी, 5
5. " , राग सोरठी, 1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेव मनु लीणा।
आठ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा।।1।।
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा।
नीच कुला जोलाहरा भइयो गुनीय गहीरा।।1।।
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिन्हि तिआगी माइआ।
परगटु होआ साध संगि हरि दरसनु पाइआ।।2।।
सैन नाई बुतकारीअ ओह घरि घरि सुनिआ।
हिरदै वसिआ पारब्रह्मु भगता मटि गनिआ।।3।।
इस विधि सुन कै जाट रो उठि भगती लागा।
मिले प्रतखि गुसाईआ धनां बड़ भागा।।4।।[1]

इस पद से स्पष्ट है कि वे कबीर, रैदास और सेन से आयु में छोटे थे। इनकी जाति जाट थी। इनका जन्म सन् 1415 (संवत् 1472) में राजपूताना के टोंक इलाके के धुअन गाँव में हुआ था। इनका व्यवसाय खेती-बाड़ी था। पारिवारिक स्थिति साधारण थी। एक पद में इन्होंने अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त करते हुए लिखा है–

गोपाल तेरा आरता।
जो जन तुमरी भगति करंते तिनके काज सवारता।।1।।
दालि सीधा मागउ घीउ। हमरा खुसी करै नित जीउ।
पन्हीआ छादनु नीका। अनाजु मगउ सत सी का।।1।।
गऊ, भैंस मगउ लावेरी। इक ताजनि तुरी चंगेरी।
घर की गीहनि चंगी। जनु धनां लेवै मंगी।।2।।[2]

धन्ना को भी रामानंद का शिष्य माना जाता रहा है, जिसके कोई साक्ष्य नहीं मिलते। इनके जीवन के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती। 'भक्तमाल' में बिना बीज के फसल उगने की चमत्कारपूर्ण घटना का उल्लेख हुआ है। ऐसी चमत्कारिक घटनाएँ प्रत्येक भक्त व संत के साथ जुड़ी हुई हैं।

रैदास ने अपने समकालीन और परवर्ती कवियों को प्रभावित एवं प्रेरित किया है। उनकी एक प्रसिद्ध कविता 'बणजारियाँ' की तर्ज पर गुरु नानक, अन्य सिख गुरुओं और रहवा ने 'बणजारियाँ' लिखी थीं।

---

1. गुरु ग्रंथ साहिब, महला 5, राग आसा, 4/2
2. " " ", राग धनासरी, 4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-समय और प्रासंगिकता

रैदास का जन्म उस समय हुआ था जब वर्ण-व्यवस्था टूटकर जाति-व्यवस्था की संकीर्णता, जकड़न और ऊँच-नीच की भावना में बदलकर समाज को जर्जर और विगलित कर रही थी। ब्राह्मणों और शूद्रों में मनोमालिन्य बढ़ रहा था। एक व्यक्ति दुष्कर्मों में प्रवृत्त होते हुए भी उच्च कुलोद्भव होने के नाते सम्मान का पात्र और दूसरा सत्कर्मी होते हुए भी उपेक्षित, घृणा और तिरस्कार का पात्र समझा जा रहा था। अंत्यजों को न वेद पढ़ने का अधिकार था और न देव-पूजा का। रैदास ने इस पीड़ा को झेला था। उनकी कई बार ब्राह्मणों से टकराहट हुई। उनकी भक्ति-भावना को चुनौती दी गई। 'रैदास-परचई' और 'भक्तमाल' में उद्धृत घटनाओं से एक बात स्पष्ट रूप से उभरकर आती है कि उनका पुरोहित-वर्ग या ब्राह्मणवाद से कड़ा संघर्ष हुआ था। अपनी उत्कट भक्ति, तन्मयता, सच्चरित्रता, तर्क-पद्धति से उन्होंने परंपरागत मान्यताओं को चुनौती दी। अंततः उन पर विजय पाई।

भारत का मध्यकालीन समाज धार्मिक अंधविश्वासों, बाहरी कर्मकांडों और पाखंडों में उलझा हुआ था। मुसलमान शासकों की क्रूरता और धर्मांधता से हिंदुओं और मुसलमानों में विद्वेष व संघर्ष बढ़ रहा था। नैतिक पतन अपनी चरम सीमा पर था। करों का बाहुल्य था। कानूनों के कठोर शिकंजे थे। शासन अस्थिर थे। अत्याचार और उत्पीड़न निरंतर बढ़ रहे थे। अन्याय, उत्पीड़न, शोषण और तिरस्कार का केंद्र-बिंदु वह निम्न और निर्धन तबका था, जिसमें रैदास जन्मे थे। अपने पेशे से प्रतिबद्ध रहकर उन्होंने नैतिक आचरण के वे प्रतिमान स्थापित किए जिनसे प्रभावित होकर उच्चकुलीन ब्राह्मण ही नहीं, पूरा समाज उन्हें सम्मान देने को बाध्य हो गया था।

धार्मिक रूढ़ियों, कर्मकांडों और पुरोहित वर्ग की निरंकुशता का विरोध कर ऐसे भक्ति-मार्ग का प्रतिपादन किया जो सर्वसुलभ, सर्वग्राही और ऐसे व्यापक मानव-धर्म से अनुप्रेरित थी जिसमें न कोई शासक रहता है, न शासित। न कोई अमीर रहता है और न गरीब, न कोई हिंदू होता है और न मुसलमान। न कोई ब्राह्मण रहता है और न कोई शूद्र। जिसके अपनाने पर न कोई शोक रहता है और न व्यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम खूब बतन घर पाया।
उहाँ खैर सदा मेरे भाया।।
बेगमपुर सहर का नांउं, फिकर अंदेस नहीं तिहि ठांव।।1।।
नहीं तहाँ सीस खलात न मार, है फन खता न तरस जवाल।।2।।
आंवन जांन रहम महसूर, जहाँ गनियाब बसैं माबूँद।।3।।[1]

रैदास ने निर्धनता और संपन्नता दोनों देखी थीं। संपन्नता में देवालय की स्थापना से लेकर साधु-संतों का मान-सम्मान सम्मिलित था। हजारों साधु-संत उनके यहाँ आश्रय पाए हुए थे। स्थिति ऐसी आई कि उन्हें सब-कुछ छोड़कर पुनः अपनी जीविका के लिए पैतृक व्यवसाय अपनाना पड़ा। उनके व्यक्तित्व में निस्पृहता, त्याग और अनासक्ति प्रबल थी। इसीलिए उनके समकालीन संतों ने उन्हें 'माया-त्यागी' कहा था।

रचनाओं और जीवन-प्रसंगों से रैदास की विनयशीलता, आडंबरहीनता, समन्वित एवं संतुलित विचारधारा, सच्ची भक्ति, निर्गुण और सगुण विचारधारा के प्रति आदर-भाव व्यक्त होता है। कबीर ने 'संतनि में रविदास संत' कहकर उनके महत्त्व को स्वीकार किया है। सेन, पीपा, धन्ना, दादूदयाल, रज्जब, नाभादास, प्रियादास, अनंतदास और मीराबाई ने उन्हें ससम्मान स्मरण किया है।

उत्तर भारत में कबीर, रैदास, नानक और दादूदयाल जैसे संतों के माध्यम से एक विराट् सांस्कृतिक आंदोलन उठ खड़ा हुआ था, जिसमें धार्मिक रूढ़ियों, सामाजिक विगलित मान्यताओं, जातिवाद, संप्रदायवाद, आर्थिक विषमता, शोषण और निरंकुश अत्याचारों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी और प्रतिगामी शक्तियों का डटकर सामना किया था। सही मायने में यह भारत का प्रथम प्रगतिशील आंदोलन था, जिसने निम्न और मध्य वर्ग के तबके को आंदोलित किया था। भारत में नव जागरण, नव स्फूर्ति और नई ऊर्जा देने के लिए इन कवि-साधकों के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

1. रैदास रचनावली, 31

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदावली-क्रम

1

।। राग रामकली ।।

1.	परचै रांम रमैं जै कोइ	...	73
2.	अब मैं हार्यौ रे भाई	...	74
3.	गाइ गाइ अब का कहि गांऊँ	...	74
4.	राम जन हूँ उंन भगत कहाऊँ	...	75
5.	अब मोरी बूड़ी रे भाई	...	76
6.	तेरा जन काहे कौं बोलै	...	76
7.	भाई रे भ्रम भगति सुजांनि	...	77
8.	त्यूँ तुम्ह कारनि केसवे अंतरि ल्यौ लागी	...	77
9.	आयौ हो आयौ देव तुम्ह सरनां	...	78
10.	भाइ रे रांम कहाँ हैं मोहि बतावो	...	78
11.	अैसौ कछु अनभै कहत न आवै	...	79
12.	अखि लखि लै नहीं का कहि पंडित	...	79
13.	नरहरि चंचल मति मोरी	...	80
14.	राम बिन संसै गाँठि न छूटै	...	80
15.	तब रांम रांम कहि गावैगा	...	81
16.	संतौ अनिन भगति यहु नांहीं	...	81
17.	अैसी भगति न होइ रे भाई	...	81
18.	भगति अैसी सुनहु रे भाई	...	82
19.	अब कुछ मरम बिचारा हो हरि	...	83
20.	नरहरि प्रगटसि नां हो प्रगटसि नां	...	83
21.	त्यू तुम्ह कारन केसवे, लालचि जीव लागा	...	84
22.	गोब्यंदे भौ जल ब्याधि अपारा	...	84
23.	कहा सूते मुगध नर काल के मंझि मुख	...	85
24.	कांन्हां हो जगजीवन मेरा	...	85

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25. सेई मन संमझि समरंथ सरनांगता ... 86
26. है सब आतम सोयं प्रकास साँचो ... 86

2

।। राग गौड़ी ।।

27. कोई सुमार न देखौं ... 87
28. पहलै पहरै रैंणि दै बणजारिया ... 87
29. देवा हम न पाप करंता ... 89
30. या रमां एक तूं दांनां ... 90
31. अब हम खूब बतन घर पाया ... 91
32. राम गुसईआ जीअ के जीवना ... 91
33. सगल भव के नाइका ... 92
34. मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ... 92
35. मरम कैसें पाइबौ रे ... 93
36. जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ... 94
37. साध का निंदकु कैसे तरै ... 95

3

।। राग आसावरी (आसा) ।।

38. केसवे बिकट माया तोर ... 95
39. बरजि हो बरजि बीठल ... 96
40. रांमहि पूजा कहाँ चढ़ाँऊँ ... 96
41. बंदे जानि साहिब गनीं ... 97
42. सु कछु बिचार्‌यौ ता थैं ... 97
43. माधौ संगति सरनि तुम्हारी ... 98
44. माधौ अविद्या हित कीन्ह ... 99
45. देहु कलाली एक पियाला ... 99
46. संत ची संगति संत कथा रसु ... 100
47. तुझहि चरन अरबिंद भँवर मनु ... 100
48. हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ... 100
49. माटी को पुतरा कैसे नचतु है ... 101
50. भाई रे सहज बन्दो लोई ... 101

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

51. ऐसी मेरी जाति भिख्यात चमारं ... 102

4

।। राग सोरठी ।।

52. पार गया चाहै सब कोई ... 102
53. बपुरौ सति रैदास कहै ... 103
54. इहै अंदेसा सोचि जिय मेरे ... 103
55. रांम राइ का कहिये यहु ऐसी ... 104
56. रे मन माछला संसार समंदे ... 105
57. रे चित चेति चेति अचेत काहे ... 105
58. रथ कौ चतुर चलावन हारौ ... 106
59. जो तुम तोरौ रांम मैं नहीं तोरौं ... 106
60. किहि बिधि अणसरूं रे ... 107
61. माधवे का कहिये भ्रम ऐसा ... 107
62. माधौ भ्रम कैसें न बिलाइ ... 108
63. मन मेरे सोई सरूप बिचार ... 108
64. जिनि थोथरा पिछोरै कोई ... 109
65. न बीचारिओ राजा राम को रसु ... 109
66. हरि हरि हरि न जपहि रसना ... 110
67. माधवे तुम न तोरहि ... 110
68. प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ... 111
69. चमरटा गाँठि न जनई ... 111
70. पांडे कैसी पूज रची रे ... 112

5

।। राग धनाश्री ।।

71. तुझा देव कवलापती सरणि आयौ ... 112
72. मेरी प्रीति गोपाल सूँ जिनि घटै हो ... 113
73. कौंन भगति थैं रहै प्यारे पांहुनौं रे ... 113
74. जयौ रांम गोब्यंद बीठल बासदेव ... 114
75. मैं का जांनूं देव मैं का जांनूं ... 115

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76. त्राहि त्राहि त्रिभवन पति पावन ... 116
77. जन कूँ तारि तारि तारि तारि बाप रमइया ... 116
78. हउ बलि बलि जाउ रमईया कारने ... 116
79. नामु तेरो आरती भजनु मुरारे ... 117
80. अहो देव तेरी अमित महिमां ... 117

6

।। राग विलावल ।।

81. क्या तू सोवै जणि दिवांनां ... 119
82. खांलिक सकिसता मैं तेरा ... 120
83. जो मोहि बेदन का सजि आखूँ ... 120
84. ताथैं पतित नहीं को अपांवन ... 121
85. तू जानत मैं किछु नहीं भव खंडन राम ... 122
86. जिह कुल साधु बैसनौ होइ ... 122
87. गोबिंदे तुम्हारे से समाधि लागी ... 122
88. नहीं बिश्रांम लहूँ धरनींधर ... 123

7

।। राग भैरूँ (भैरव) ।।

89. भेष लियो पै भेद न जान्यो ... 123
90. अैसा ध्यान धरूँ बनवारी ... 123
91. अबिगत नाथ निरंजन देवा ... 124

8

।। राग टोड़ी ।।

92. पांवन जस माधो तोरा ... 124

9

।। राग गुंड ।।

93. आज नां द्यौस नां ल्यौ बलिहारा ... 125

10

।। राग जैतश्री ।।

94. सब कछु करत न कहु कछु कैसैं ... 125

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11

।। राग सारंग ।।

95. जग मैं बेद बैद मांनी जैं ... 125

12

।। राग कानड़ा ।।

96. चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ ... 126
97. माया मोहिला कान्ह ... 126

13

।। राग केदारौ ।।

98. कहि मन रांम नांम संभारि ... 126
99. हरि कौ टाँडौ लादे जाइ रे ... 127
100. प्रीति सधारन आव ... 128
101. दरसन दीजै राम दरसन दीजै ... 128

14

।। राग सूही ।।

102. सो कत जानै पीर पराई ... 128
103. इहि तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ... 129

15

।। राग मारू ।।

104. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ... 129
105. हरि हरि हरि न जपसि रसना ... 129

16

।। राग बसंत ।।

106. तू कांइ गरबहि बावली ... 130

17

।। राग मल्हार ।।

107. हरि जपत तेऊ जना ... 130
108. मिलत पिआरो प्रान नाथु ... 131

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

18

।। राग गौड़ ।।

109. ऐसे जानि जपो रे जीव ... 131

।। अन्य ।।

110. माधवे इहै सोच जिये मोर ... 132
111. जो तुम गोपालहि नहिं गेहौ ... 132
112. धन्य हरि-भक्ति, त्रैलोक यशपावनी ... 132
113. अब कैसे छूटै राम, नाम रट लागी ... 133

।। आरती ।।

114. आरती क्या लेकरि जोवै ... 133
115. संत उतारैं आरती देव सिरोमणिये ... 133
116. प्रह्लाद चरित ... 134
117. साखी ... 137

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1

।। राग रामकली ।।

परचै रांम रमै जै कोइ।
पारस परसें[1] दुबिध[2] न होइ।। टेक।।
जो दीसै सो सकल बिनास, अण दीठै नांही बिसवास[3]।
बरन[4] रहित कहै जे[5] रांम, सो भगता केवल निहकांम[6]।।1।।
फल कारनि फलै[7] बनराइं, उपजै फल तब पुहप[8] बिलाइ[9]।
ग्यांनहि कारनि[10] क्रम[11] कराई, उपज्यौ ग्यानं तब क्रम[12] नसाइ।।2।।
बटक बीज जैसा आकार, पसर्‌यौ तीनि लोक बिस्तार।
जहाँ का उपज्या तहाँ समाइ[13], सहज सुन्य[14] में रह्यौ लुकाइ[15]।।3।।
जो मन ब्यंदै सोई ब्यंद[16], अमावस मैं ज्यू दीसै चंद।
जल मैं जैसैं तूबां तिरै, परचे प्यंड जीवै नहीं मरै।।4।।
जो मन कौंण[17] ज मन कूँ खाइ, बिन द्वारै[18] त्रीलोक[19] समाइ।
मन की महिमां सब कोइ कहै, पंडित सो जे अनभै रहे।।5।।
कहै रैदास यहु परम बैराग, रांम नांम किन[20] जपऊ सभाग।
घ्रित[21] कारनि दधि मथै सयांन, जीवन मुकति सदा निब्रांन[22]।।6।।

पाठांतर– 1. परचे, परिचै, 2. दुविधि, दुबिधि, 3. बीसवास, 4. बरण, 5. जो, 6. सहकाम, निःकाम, 7. फूली, फूलै, 8. पहूप, पुहुप, 9. बिलाई, 10. कारणि, 11. व 12. करम, 13. समाई, बिलाइ, 14. सूनि, सुन्नि, 15. लूकाई, 16. बिंदै सोई बिंद, 17. कूंण, कौन, 18. छोरे, दुआरे, 19. त्रियलोक, 20. क्यूं, 21. घृत, 22. निरबान, नीरबांण।

टिप्पणी– 1. 'रैदास की बानी' और हस्तलेख 1059 में भी इस पद का चरण-क्रम यही है।
2. यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग भैरव' के अंतर्गत चरण-लोप, किंचित् भिन्न पाठ और चरण-क्रम-विपर्यय के साथ इस प्रकार मिलता है

।। राग भैरव।।

बिनु देखे उपजै नहीं आसा। जो दीसै सो होइ बिनासा।
बरन सहित जो जापै नामु। सो जोगी केवल निहकामु।।1।।
परचै रामु रवै जउ कोई। पारसु परसै दुविधा न होई।।1।। रहाउ।।
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ। बिनु दुआरे त्रैलोक समाइ।।
मन का सुभाउ सभु कोइ करै। करता होइ सु अनभै रहै।।2।।
फल कारन फूली बनराइ। फल लागा तब फूलु बिलाइ।।
गिआनै कारन करम अभिआसु। गिआनु भइया तह करमह नासु।।3।।
घ्रित कारन दधि मथै सइआन। जीवन मुकत सदा निरबान।
कहि रविदास परम बैराग। रिदै रामु की न जपसि अभाग।।4।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2

।। राग रामकली ।।

अब मैं हार्‌यौ रे भाई।
थकित भयौ सब हाल चाल थैं,[1] लोग न बेद बड़ाई।।टेक।।
थकित भयौ गाइण[2] अरु नाचण, थाकी सेवा पूजा।
काम क्रोध थैं[3] देह थकित भई, कहूँ कहाँ लूँ दूजा।।1।।
रांम जन[4] होउ न भगत कहाँऊँ, चरन पखालूँ न देवा।
जोई-जोई करौं[5] उलटि मोहि बाधै, ताथैं निकटि न भेवा।।2।।
पहली ग्यांन का कीया चांदिणां, पीछैं दीया बुझाई[6]।
सुनि[7] सहज मैं दोऊ त्यागे, राम कहूँ न खुदाई।।3।।
दूरि बसै षट क्रम सकल अरु, दूरिब कीन्हे सेऊ।
ग्यान घ्यानं दोऊ दूरि कीन्हे, दूरिब छाड़े तेऊ।।4।।
पंचू थकित भये जहाँ-तहाँ, जहाँ-तहाँ थिति पाई।
जा करनि मैं दौर्‌यौ फिरतौ, सो अब घट मैं पाई।।5।।
पंचू मेरी सखी सहेली, तिनि निधि दई दिखाई।
अब मन फूलि भयौ जग महियां, उलटि आप मैं समाई।।6।।
चलत चलत मेरौ[8] निज मन थाक्यौ,[9] अब मोपैं चल्यौ[10] न जाई।
सांई सहजि[11] मिल्यौ सोई सनमुख,[12] कहै रैदास बताई[13]।।7।।

3

।। राग रामकली ।।

गाइ गाइ[1] अब का कहि गांऊँ।
गांवणहारा[2] कौ निकटि बतांऊँ।।टेक।।
जब लग है या तन की आसा, तब लग करै[3] पुकारा[4]।
जब मन मिट्‌यौ आसा नहीं तन की, तब को गाँवणहारा।।1।।

छं०सं० 2– 1. तै, ते, 2. गाईण, 3. तैं, 4. जण, जनहु, 5. करु, 6. बूझाई, 7. सूनि, 8. निज, 9. थाकौ, 10. मो से चल्या, 11. सहज, 12. सनमूख, 13. बड़ाई।
छं०सं० 3– 1. गाई गाई, 2. गांवणहारे, गावनहार, 3. परे, 4. पूकारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लग नदी न संमदि समावै, तब लग बढ़ै अहंकारा।
जब मन मिल्यौ रांम सागर[6] सूँ, तब यहु मिटी पुकारा[7]।।2।।
जब लग भगति मुकति[8] की आसा, परम तत सुणि[9] गावैं।
जहाँ जहाँ आस धरत है यहु मन, तहाँ तहाँ कछू[10] न पावै।।3।।
छाड़ै आस निरास परंमपद, तब सुख सति[11] करि होई।
कहै रैदास जासूँ[12] और कहत हैं,[13] परम तत[14] अब सोई।।4।।

4

।। राग रामकली ।।

राम जन हूँ उंन भगत कहाऊँ, सेवा करौं[1] न दासा।
गुनी जोग जग्य कछू न जांनूं, ताथैं रहूँ उदासा।।टेक।।
भगत हूँ वाँ तौ चढ़ै बड़ाई। जोग करौं[2] जग मांनैं।
गुणी हूँ वांथैं गुणीं जन कहैं, गुणी आप कूँ जांनैं[3]।।1।।
ना मैं ममिता मोह न महियाँ, ए सब जांहि बिलाई।
दोजग[4] भिस्त दोऊ समि करि जांनूँ, दहु वां थैं तरक है भाई।।2।।
मै तैं ममिता देखि सकल जग, मैं तैं मूल गँवाई।
जब मन ममिता एक एक[5] मन, तब हीं एक है भाई।।3।।
कृश्न[6] करीम रांम हरि राघौ[7], जब लग एक एक[8] नहीं पेख्या।
बेद कतेब कुरांन[9] पुरांननि[10], सहजि[11] एक नहीं देख्या।।4।।
जोई जोई करि पूजिये, सोई सोई काची[12], सहजि भाव सति होई।
कहै रैदास मैं ताही कूँ पूजौं, जाकै गाँव न ठाँव न नांम नहीं कोई[13]।।5।।

छं०सं० 3— 5. आस 6. सांर, समुद, पीव सगरं सूँ, राम सागर सो, 7. मीटी पूकारा, 8. मूकति, 9. तत्त्व मुनि, 10. कछु, 11. सवि, 12. जासो, जासों, 13. करत है, 14. तत्त्व।

छं०सं० 4— 1. व, 2. करूँ, 3. आनैं, 4. दोजख, 5. ऐक ऐक, 6. कीस्न, 7. राघव, 8. ऐक ऐक, 9. कूरांन, 10. पूराननि, 11. सहजी, 12. काँची 13. होई, सजोई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5

।। राग रामकली ।।

अब[1] मोरी बूड़ी रे भाई।
ता[2] थैं चढ़ी लोग बड़ाई।। टेक।।
अति अहंकार ऊर मां, सत रज तामैं रह्यौ उरझाई।
करम बलि बसि[3] पर्यौ कछू न सूझै, स्वांमी नांऊं भुलाई।। 1।।
हम मांनूं गुनी[4] जोग सुनि जुगता, हम महा पुरिष रे भाई[5]।
हम मांनूं सूर सकल बिधि त्यागी, ममिता नहीं मिटाई।। 2।।
मांनूं अखिल सुनि मन सोध्यौ, सब चेतनि सुधि पाई।
ग्यांन ध्यांन सब हीं हंम जांन्यूं, बूझैं कौंन सूं जाई।। 3।।
हम मांनूं प्रेम प्रेम रस जांन्यूं, नौ बिधि भगति कराई।
स्वांग देखि सब ही जग लटक्यौ[6], फिरि आपन पौर बधाई[7]।। 4।।
स्वांग पहरि हम साच न जांन्यूं, लोकनि इहै भरमाई।
स्यंघ रूप देखी[8] पहराई, बोली तब सुधि पाई[9]।। 5।।
अैसी भगति हमारी संतौ, प्रभुता इहै बड़ाई।
आपन अनिन और नहीं मांनत, ताथैं[10] मूल गँवाई।। 6।।
भणैं रैदास उदास ताही थैं, इब कछू मोपैं करी न जाई।
आपौ खोयां भगति होत है, तब रहै अंतरि उरझाई।। 7।।

6

।। राग रामकली ।।

तेरा जन काहे कौं बोलै।
बोलि बोलि अपनीं भगति क्यों खोलै।। टेक।।
बोल बोलतां बढ़ै बियाधि[1], बोल अबोलैं जाई।
बोलै बोल अबोल कौं पकरैं, बोल बोलै कूँ[2] खाई।। 1।।

छं०सं० 5– 1. ईव, 2. जा, 3. बिबसि, 4. गुणी, 5. परम पूरिष रे भाई (सरबंगी), महामूरष (रे०बा०), 6. जूग अटक्यौ, 7. आतम भरमि बधाई, फिरि यों आन बँधाई, 8. मेपी जब जहरी, 9. बोली अरसूजि पाई, 10. तामैं।
छं०सं० 6– 1. बोलत बोलत बढ़ै बियाधी, 2. बोल बोल को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलै बोल मांनि परि बोलैं, बोलै बेद बड़ाई।
उर में धरि धरि जब ही बोलै, तब हीं मूल गँवाई।।2।।
बोलि बोलि औरहि समझावै, तब लग समझि नहीं रे भाई।
बोलि बोलि समझि जब बूझी, तब काल सहित सब खाई।।3।।
बोलै गुर अरु बोलै चेला, बोल्या बोल की परमिति[3] जाई।
कहै रैदास थकित भयौ जब[4], तब हीं परंमनिधि पाई।।4।।

7

।। राग रामकली ।।

भाई रे भ्रम[1] भगति सुजांनि।
जौ लूँ नहीं साच सूँ पहिचानि।।टेक।।
भ्रम नाचण भ्रम गाइण[2], भ्रम जप तप दांन।
भ्रम सेवा भ्रम पूजा, भ्रम सूँ पहिचांनि।।1।।
भ्रम षट क्रम सकल सहिता, भ्रम गृह बन जांनि[3]।
भ्रम करि करम कीये, भरम की यहु बांनि।।2।।
भ्रम इंद्री निग्रह कीयां, भ्रंम गुफा में बास।
भ्रम तौ लौं जांणियै, सुनि[4] की करै आस।।3।।
भ्रम सुध सरीर जौ लौं, भ्रम नांउ बिनांउं[5]।
भ्रम भणि रैदास तौ लौं, जो लौं चाहे ठांउं[6]।।4।।

8

।। राग रामकली ।।

त्यूँ[1] तुम्ह कारनि केसवे[2], अंतरि ल्यौ लागी।
एक अनूपम अनभई, किम होइ बिभागी।।टेक।।
इक अभिमानी चातृगा[3], विचरत जग मांहीं।
जदपि जल पूरण मही, कहूं वाँ रुचि नांहीं।।1।।

छं०सं० 6– 3. परतीति आई, 4. कह रैदास मगन भयो जब ही।
छं०सं० 7– 1. भरम, 2. गाईन, 3. जानि, 4. सुन्न, 5. भ्रम नांव विनांव, 6. ठाँव।
छं०सं० 8– 1. यूं, ज्यों, 2. केसवा, 3. अरु चात्रिगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे कांमीं देखे कांमिनीं, हिरदै सूल उपाई।
कोटि बैद बिधि उचरैं, वाकी बिथा न जाई।।2।।
जो जिहि चाहे सो मिलै, आरत्य गत[4] होई।
कहै रैदास यहु गोपि नहीं, जानैं[5] सब कोई।।3।।

9

।। राग रामकली ।।

आयौ हो आयौ देव तुम्ह सरनां।
जांनि क्रिपा कीजै अपनौं जनां।।टेक।।
त्रिबिधि जोनी बास, जम की अगम त्रास, तुम्हारे भजन बिन, भ्रमत फिर्‌यौ।
ममिता अहं विषै मदि मातौ, इहि सुखि कबहूं न दूभर[1] तिर्‌यौं।।1।।
तुम्हारे[2] नांइ बेसास, छाड़ी है आंन की आस, संसारी धरम मेरौ मन न धीजै।
रैदास दास की सेवा मांनि हो देवाधिदेवा, पतितपांवन, नांउ[3] प्रकट कीजै।।2।।

10

।। राग रामकली ।।

भाई रे रांम कहाँ हैं मोहि बतावो।
सति रांम ताकै निकटि[1] न आवो।।टेक।।
राम कहत जगत भुलाना[2], सो यहु रांम न होई।
करंम अकरंम करुणांमै केसौ, करता नांउं सु कोई।।1।।
जा रामहि सब जग[3] जानैं, भ्रमि भूले रे भाई।
आप आप थैं कोई न जांणैं[5], कहै कौंन[6] सू जाई।।2।।
सति तन लोभ परसि जीय तन मन[7], गुण परस नहीं जाई।
अखिल नांउं[8] जाकौ ठौर न कतहूँ, क्यूं न कहै समझाई।।3।।
भयौ[9] रैदास उदास ताही थैं, करता को है भाई।
केवल करता एक सही करि, सति रांम तिहि ठांई।।4।।

छं०सं० 8– 4. आरत गति, 5. जांणै।
छं०सं० 9– 1. दूतर, दुतर, 2. तूंम्हारे, 3. नाम।
छं०सं० 10– 1. नीकटि, 2. भूलांनां, 3. जग जग, 4. तै, 5. समझै, 6. कूंण, 7. जीयत मन, 8. नांव, 9. भणै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11

।। राग रामकली ।।

ऐसौ[1] कछु अनभै[2] कहत न आवै।
साहिब मेरौ मिलै तौ को बिगरावै[3]।।टेक।।
सब मैं हरि हैं हरि मैं सब हैं, हरि आपनपौ[4] जिनि जांनां।
अपनी आप साखि नहीं दूसर[5], जांननहार समांनां[6]।।1।।
बाजीगर सूँ रहनि रही जै, बाजी का भरम इब[7] जांनां।
बाजी झूठ साच बाजीगर, जानां मन पतियानां[8]।।2।।
मन थिर होइ तौ कांइ न सूझै, जांनैं जांनन हारा[9]।
कहै रैदास बिमल बसेक[10] सुख, सहज[11] सरूप संभारा[12]।।3।।

12

।। राग रामकली ।।

अखि लखि लै नहीं का कहि पंडित, कोई न कहै समझाई।
अबरन बरन रूप नहीं जाकै, सु कहाँ ल्यौ लाइ समाई[1]।।टेक।।
चंद सूर नहीं राति दिवस नहीं, धरनि[2] अकास न भाई।
करम अकरम नहीं सुभ असुभ नहीं, का कहि देहु बड़ाई।।1।।
सीत बाइ उश्न[3] नहीं सरवत, कांम कुटिल नहीं होई।
जोग न भोग रोग नहीं जाकै, कहौ नांव सति सोई।।2।।
निरंजन निराकार निरलेपहि, निरबिकार निरासी[4]।
काम कुटिल ताही कहि गावत, हर हर[5] आवै हासी।।3।।
गगन धूर धूसर नहीं जाकै[6], पवन पूर नहीं पांनी।
गुन बिगुन कहियत नहीं जाकै, कहौ तुम्ह बात सयांनीं।।4।।
याही सूँ[7] तुम्ह जोग कहते हो, जब लग आस की पासी[8]।
छूटै तब हीं जब मिलै एक ही[9], भणै[10] रैदास उदासी।।5।।

छं०सं० 11—1. ऐसे, 2. अनुभौ, 3. बिलगावै, 4. अपनो, 5. साखी नहीं और कोइ दूसर, 6. सयाना, 7. इबि न, 8. परियांनां, 9. बूझै बूझनहारा, 10. बिबेक, बमेक, 11, सहजि, 12. पिछांना।
छं०सं० 12—1. सो कहा आवै जाई, 2. धरणि, 3. उसन, 4. सु निरासी, 5. हड़ हड़, 7. ताकै, 7. भोगहि कौ तुम्ह, 8. बंधे काम की पासी, 9. निर्गुण ब्रह्म निरास भजन्ह किन, 10. भणी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13

।। राग रामकली ।।

नरहरि चंचल मति मोरी[1]।
कैसें भगति करौ रांम तोरी[2]।।टेक।।
तू मोहि देखै हूँ तोहि देखौं, प्रीति परस्पर होई।
तू मोहि देखै हौं तोहि न देखौं, इहि मति सब बुधि खोई[3]।।1।।
सब घट अंतरि रमसि निरंतरि, मैं देखत[4] हीं नहीं जांनां।
गुन सब तोर मोर सब औगुन[5], क्रित[6] उपगार[7] न मांनां।।2।।
मैं तैं तोरि[8] मोरी असमझ सों[9], कैसे करि निसतारा।
कहै रैदास कृश्न करुणांमैं[10], जै जै जगत अधारा।।3।।

14

।। राग रामकली ।।

राम बिन संसै गाँठि न छूटै।
कांम क्रोध मोह मद माया, इन पंचन मिलि लूटै।।टेक।।
हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संन्यासी।
ग्यांनी गुनीं सूर हम दाता, यहु मति कदे[1] न नासी।।1।।
पढ़ें गुनें कछू संमझि[2] न परई, जौ लौ अनभै भाव न दरसै।
लोहा हरन[3] होइ धूँ[4] कैसें, जो पारस नहीं परसै।।2।।
कहै रैदास और असमझसि, भूलि परै भ्रम भोरै।
एक अधार नांम नरहरि कौ, जीवनि प्रांन धन[5] मोरै।।3।।

छं०सं० 13—1. मेरी, 2. मैं तेरी, 3. ईहि सब सूधि खोई, 4. देखन, 5. अवगुन, 6. कृत, 7. उपकार, 8. तोरि, 9. सों, 10. कृष्ण करुनामय, क्रिसन करणामैं, कृस्न करुनामय।

पाठां० — 1. कभी, 2. रमझि, 3. हरंन, हिरन, स्रवन, 4. धौं, 5. धन।

टि० — यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में राग 'रामकली' के ही अंतर्गत इस प्रकार दिया हुआ है—
पड़ी ऐ गुनी ऐ नाम सभु सुनी ए, अनभउ भाउ न दरसै।
लोहा कंचनु हिरन होइ, कैसे जउ पारसहि न परसै।।1।।
देव संसै गाँठि न छूटै, काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे।।1।। रहाउ।।
हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित, हम जोगी संनिआसी।
गिआनी गुनी सूर हम दाते, इह बुधि कबहि न नासी।।2।।
कहु रविदास सभै नहीं समझसि, भूल परे जैसे बउरे।
मोहि अधारु नामु नाराइन, जीवन प्रान धन मोरे।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15

।। राग रामकली ।।

तब रांम रांम[1] कहि गावैगा।
ररंकार रहित सबहिन थैं[2], अंतरि मेल मिलावैगा।।टेक।।
लोहा सम करि कंचन समि करि, भेद अभेद समावैगा[3]।
जो सुख कै पारस के परसें, सो सुख का कहि गावैगा[4]।।1।।
गुर प्रसादि भई अनभै मति, विष अमृत समि धावैगा।
कहै रैदास मेटि आपा पर, तब वा ठौरहि पावैगा।।2।।

16

।। राग रामकली ।।

संतो अनिन भगति यहु नांहीं।
जब लग सत रज तम पांचूँ गुण ब्यापत[1] हैं या मांहीं।।टेक।।
सोइ आंन अंतर करै हरि सूँ[2], अपमारग कूँ आंनैं।
कांम क्रोध मद लोभ मोह की, पल पल पूजा ठांनैं।।1।।
सति[3] सनेह इष्ट अंगि लावै, अस्थलि अस्थलि खेलै।
जो कुछ मिलै आंनि अखित[4] ज्यूं, सुत दारा सिरि मेलै[5]।।2।।
हरिजन हरि बिन और न जांनैं, तजै आंन तन त्यागी।
कहै रैदास सोई जन न्रिमल, निसदिन जो[6] अनुरागी।।3।।

17

।। राग रामकली ।।

अैसी भगति न होइ रे भाई।
रांम नांम बिन जे कुछ करिये, सो सब भरम कहाई।।टेक।।
भगति न रस दांन, भगति न कथै ग्यांन, भगत न बन मैं गुफा खुँदाई।

छं०सं० 15—1. जब राम नाम, 2. तैं, 3. तब भेद अभेद समावैगा, 4. सो सूख सहजै पावेगा।
छं०सं० 16—1. व्यापक, 2. सौं, 3. सदा, 4. अछयत आखत, 5. सुत दारा समि खेलै, 6. निज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगति न ऐसी हासि, भगति न आसा पासि, भगति न यहु सब कुल कानि गँवाई[1] ।।1।।

भगति न इंद्री बाधें, भगति न जोग साधें, भगति न अहार घटायें, ए सब क्रम कहाई।

भगति न निद्रा साधें, भगति न बैराग साधें, भगति नहीं यहु सब बेद बड़ाई।।2।।

भगति न मूंड़ मुड़ायें, भगति न माला दिखायें, भगत न चरन धुवांयें, ए सब गुनी जन कहाई।

भगति न तौ लौं जांनीं, जौ लौं आप कूँ आप बखांनीं, जोई जोई करै सोई क्रम चढ़ाई।।3।।

आपौ गयौ तब भगति पाई, ऐसी है भगति भाई, राम मिल्यौ आपौ गुण खोयौ, रिधि सिधि सबै जु गँवाई[2]।

कहै रैदास छूटी ले आसा पास, तब हरि ताही के पास, आतमां स्थिर[3] तब सब निधि पाई।।4।।

18

।। राग रामकली ।।

भगति[1] ऐसी सुनहु रे भाई।
आई भगति तब गई बड़ाई।।टेक।।
कहा भयौ[2] नाचैं अरु गायैं[3], कहौं भयौ तप कीन्हैं।
कहा भयौ जे चरन पखालै, जो परम तत नहीं चीन्हैं[4]।।1।।
कहा भयौ जू मूँड मुंड़ायौ, बहु तीरथ ब्रत कीन्हैं।
स्वांमीं दास भगत अरु सेवग[5], जो परंम तत नहीं चीन्हैं।।2।।
कहै रैदास तेरी भगति दूरि है, भाग बड़े सो पावै।
तजि अभिमांन मेटि आपा पर, पिपलक[6] होइ चुणि खावै।।3।।

छं०सं० 17—1. कुल कान गँवाई, कुल कामिनी गाई, 2. गँवाई, 3. थिर भई।

छं०सं० 18—1. भगती, 2. भयो, 3. गाये, 4. जौ लों तत्त न चीन्हे, 5. सेवक, 6. विपलक, चींटी।

टिप्पणी — यह पद 'सरबंगी' में राग 'रामगरी' में '[illegible] का अंग' के अंतर्गत भी मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

19

।। राग रामकली ।।

अब कुछ मरम बिचारा हो हरि।
आदि अंति औसांण राम बिन, कोई न करै निरवारा हो हरि।।टेक।।
जल मैं पंक पंक अमृत जल[2], जलहि सुधा कै जैसैं।
ऐसैं करमि धरमि जीव बाँध्यौ, छूटै तुम्ह बिन कैसैं हो हरि।।1।।
जप तप बिधि निषेद करुणांमैं, पाप पुनि दोऊ माया।
अस मो हित मन गति विमुख धन[2], जनमि जनमि डहकाया हो हरि।।2।।
ताड़ण, छेदण, त्रायण, खेदण, बहु बिधि करि ले उपाई।
लूंण खड़ी संजोग बिनां, जैसैं कनक कलंक न जाई।।3।।
भणैं रैदास कठिन कलि केवल, कहा उपाइ अब कीजै[3]।
भौ बूड़त भैभीत भगत जन, कर अवलंबन दीजै।।4।।

20

।। राग रामकली ।।

नरहरि प्रगटसि नां हो प्रगटसि नां।
दीनानाथ दयाल नरहरि ।।टेक।।
जन मैं तोही थैं बिगरां न अहो, कछू बूझत हूँ रसयांन[1]।
परिवार बिमुख मोहि लाग[2], कछू समझि परत नहीं जाग।।1।।
इक भंमदेस कलिकाल, अहो मैं आइ पर्‌यौ जंम जाल[3]।
कबहूँक तोर भरोस, जो मैं न कहूँ तो मोर[4] दोस।।2।।
अस कहियत तेऊ न जांन, अहो प्रभू तुम्ह श्रबंगि[5] सयांन।
सुत सेवक सदा असोच, ठाकुर पितहि सब सोच।।3।।
रैदास बिनवैं कर जोरि, अहो स्वांमीं तोहि नांहि न खोरि।
सु तौ अपूरबला अक्रम मोर, बलि बलि जांऊं करौ जिनि और[6]।।4।।

पाठां० 19– 1. जल तै पंक पंक अम्रित तन, 2. ऐसे मोहि तन मन गति विमुख, 3. का उपाई ईब कीजै।
टिप्पणी – यह पद 'सरबंगी' ('राग रामगरी' तथा 'पारंगत बमेख का अंग') में भी दिया हुआ है।
पाठां० 20– 1. हू रसयांना, 2. लागा, 3. जंजाल, 4. मोरौ, 5. तुम सरबंग, सरबज्ञ, 6. जिनि कोर, निजी कोर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21

।। राग रामकली ।।

त्यू तुम्ह कारन केसवे, लालचि जीव[1] लागा।
निकटि नाथ प्रापति नहीं, मन मंद[2] अभागा।।टेक।।
साइर सलिल[3] सरोदिका, जल थल अधिकाई।
स्वांति बूँद की आस है, पीव प्यास न जाई।।1।।
जो रस नेही चाहिए, चितवत हूँ दूरी।
पंगल फल[4] न पहूँचई, कछू साध न पूरी।।2।।
कहै रैदास अकथ कथा, उपनषद सुनी जै।
जस तूँ तस तूँ तस तूँ हीं, कस ओपम[5] दीजै।।3।।

22

।। राग रामकली ।।

गौब्यंदे भौ जल[1] ब्याधि अपारा।
तामैं कछू सूझत वार न पारा।।टेक।।
अगम ग्रेह दूर दूरंतर, बोलि भरोस न देहू।
तेरी भगति परोहन, संत अरोहन, मोहि चढ़ाइ न लेहू[2]।।1।।
लोह की नाव पखांनि बोझा, सुकृत भाव[3] बिहूंनां।
लोभ तरंग मोह भयौ पाला[4], मीन भयौ मन लीनां[5]।।2।।
दीनानाथ सुनहु बीनती, कौनै हेतु बिलंबे[6]।
रैदास दास संत चरंन, मोहि अब अवलंबन दीजै[7]।।3।।

छं०सं० 21—1. मन, 2. जिव, 3. साहिस्सलिल, 4. प्यूंगूले फल, पंगुल फल, 5. उपम, उपमा।
छं०सं० 22—1. जलधि, 2. गोब्यंदे, 3. भगति, 4. गाला, 5. गोब्यंदे, 6. दीनानाथ कलकी औतारा,
7. कहि न हेत कीजै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

23

।। राग रामकली ।।

कहा सूते मुगध[1] नर काल के मंझि मुख।
तजि अब सति राम च्यंतत अनेक सुख।।टेक।।
असहज[2] धीरज लोप, कृश्न उधरन कोप, मदन भवंग नहीं मंत्र जंत्रा।
विषम पावक झाल, ताहि वार न पार, लोभ की श्रपनीं[3] ग्यानं हंता।।1।।
विषम संसार भौ लहरि ब्याकुल तवै, मोह गुण विषै सन बंध[4] भूता।
टेरि गुर गारड़ी मंत्र श्रवणं[5] दीयौ, जागि रे रांम कहि कांइ सूता।।2।।
सकल सुमृति जिती[6], संत मिति कहैं तिती[7], पाइ नहीं पनंग मति परंम बेता।
ब्रह्म रिषि नारदा स्यंभ सनिकादिका, राम रमि रमत गये परितेता।।3।।
जजनि जाप निजाप रटणि तीर्थ[8] दांन, वोखदी[9] रसिक गदमूल देता।
नाग दवणि जरजरी, रांम सुमिरन बरी, भणत रैदास चेतनि चेता।।4।।

24

।। राग रामकली ।।

कान्हां[1] हो जगजीवन मोरा।
तू न बिसारीं रांम मैं जन तोरा।।टेक।।
संकुट सोच पोच दिन राती, करम कठिन मेरी जाति कुभाती[2]।।1।।
हरहु बिपति भावै करहु कुभाव, चरन न छाड़ूँ जाइ सु जाव।
कहै रैदास कछु देऊ अवलंबन, बेगि मिलौ जनि करहु[3] बिलंबन।।2।।

पाठां० 23– 1. मूगध, 2. असह, 3. सापनी, 4. सरबंध, 5. सरवण, 6. सूम्रित जीती, 7. रीती, 8. तीरथ, 9. ओषदि।
पाठां० 24– 1. रामा, 2. कुजाती, 3. करौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25

।। राग रामगरी ।।

सेई मन संमझि समरंथ सरनांगता।
जाकी आदि अंति मधि कोई न पावै।।
कोटि कारिज सरै, देह गुंन सब जरैं, नैंक जौ नाम पतिव्रत आवै।।टेक।।
आकार की वोट आकार नहीं उबरै, स्यो बिरंच अरु बिसन तांई।
जास का सेवग तास कौं पाई है, ईस कौं छांड़ि आगै न जाही।।1।।
गुणंमई मूंरति सोई सब भेख मिलि, निग्रुण निज ठौर विश्रांम नांही।
अनेक जूग बंदिगी बिबिध प्रकार करि, अंति गुंण सेई गुंण मैं समांही।।2।।
पाँच तत तीनि गुण जूगति करि करि सांईया, आस बिन होत नहीं करम काया।
पाप पूंनि बीज अंकूर जांमै मरै, उपजि बिनसै तिती श्रब माया।।3।।
क्रितम करता कहैं, परम पद क्यूँ लहैं, भूलि भ्रम मैं पर्यौ लोक सारा।
कहै रैदास जे रांम रमिता भजै, कोई ऐक जन गये उतरि पारा।।4।।

26

।। राग रामकली ।।

है सब आतम सोयं प्रकास[1] साँचो।
निरंतरि निराहार कलपित ये पाँचौं।।टेक।।
आदि मध्य[2] औसान, येक रस तारतंब नहीं भाई।
थावर जंगम कीट पतंगा, पूरि रहे[3] हरिराई।।1।।
सरवेसुर[4] श्रबपति[5] सब गति, करता हरता सोई।
सिव न असिव न साध अरु सेवक, उभै नहीं होई।।2।।
ध्रम अध्रम मोच्छ[6] नहीं बंधन, जुरा मरण[7] भव नासा।
दृष्टि अदृष्टि गेय अरु ज्ञाता, येकमेक रैदासा।।3।।

---

1. ग्रंथ सरबंगी, पृ० 61

पाठां० 26— 1. परकास, 2. अंत, 3. रह्यो, 4. सर्वेस्वर, 5. सर्बङ्गी, 6. धरम अधरम मोखि, 7. जरा मरन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

27

।। राग गौड़ी ।।

कोई सुमार न देखौं, ए सब ऊपिली चोभा।
जाकौं जेता प्रकासै, ताकौं तेती ही सोभा।।टेक।।
हम ही पै सीखि सीखि, हम हीं सूँ मांडै।
थोरै ही इतराइ चालै, पातिसाही छाडै।।1।।
अति हीं आतुर बहै, काचा हीं तोरै।
कुंडै जलि ऐसै, न हींयां डरै खोरै।।2।।
थोरैं थोरैं मुसियत, परायौ धंनां।
कहै रैदास सुनौं, संत जनां।।3।।

28

।। राग जंगली गौड़ी ।।

पहलै पहरै[1] रैंणि दै बणजारिया, तै जनम लीया संसार वै[2]।।
सेवा चुका रांम की बणजारिया, तेरी बालक बुधि गँवार वे।।
बालक बुधि गँवार न चेत्या, भुला माया जालु वे।।
कहा होइ पीछैं पछतायैं, जल पहली न बँधीं पाल[3] वे।।
बीस बरस का भया अयांनां, थंभि[4] न सक्या भार वे।।
जन रैदास कहै बनिजारा, तैं जनम लया संसार वै।।1।।
× × × × × ×
दूजै पहरै रैंणि दै बनजारिया, तूँ निरखत चल्या छांवं वे।।
हरि न दामोदर ध्याइया बनजारिया[5], तैं लेइ न सक्या नांव वे।।
नांउं न लीया औगुन कीया, इस जोबन दै तांण वे।।
अपणीं पराई गिणीं न काई, मंदे कंम कमांण वे।।
साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी, भीड़ पड़ै तुझ तांव वे।।
जन रैदास कहै बनजारा, तू निरखत चल्या छांव वे।।2।।
× × × × × ×
तीजै पहरै रैणिं दै बनजारिया, तेरे ढिलढ़े पड़े परांण वे।।
काया रवंनीं[6] क्या करै बनजारिया, घट भीतरि बसै कुजांण वे।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक बसै कुजांण काया गढ़ भीतरि, अहलां जनम गवाया वे।।
अब की बेर न सुकृत[7] कीता, बहुरि न न यहु गढ़ पाया वे।।
कंपी देह काया गढ़ खीनां, फिरि लगा पछितांणवे।।
जन रैदास कहै बनिजारा, तेरे ढिलड़े पड़े परांण वे।।3।।

× × × × × ×

चौथे पहरै रैंणि दै बनजारिया, तेरी कंपण लगी देह वे।।
साहिब लेखा मंगिया बनजारिया, तू छडि पुरांणां थेह वे।।
छड़ि पुरांणां ज्यंद अयांणां, बालदि हाकि सबेरिया।।
जम के आये बंधि चलाये, बारी पुगी तेरिया।।
पंथि चलै अकेला होइ दुहेला, किस कूँ देइ सनेहं वे।।
जन रैदास कहै बनिजारा, तेरी कंपण लगी देह वे।।4।।

छं०सं० 28—पाठा—1. सैंणि, 2. हरि न दमोदर धाहिया, 3. पालि, 4. थांभि, 5. गुरु का सबद न मांनियै बणिजारिया, 6. रवांनीं, 7. सूक्रित, 8. संदेस।

टिप्पणी— रैदास के पश्चात् अनेक कवियों ने 'राग जंगली गौड़ी' में 'वणजारिया' लिखे। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'सिरी रागु महला[1] में गुरु नानकदेव ने भी वणजारेरूपी जीव तथा रात्रिरूपी आयु के सांगरूपक प्रस्तुत किए हैं। एक सांगरूपक की पंक्तियाँ हैं :

पहिले पहरै रैणि कै वणजारिआ, मित्र बालक बुधि अचेत।।

× × × × × × × ×

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोवनि मैमति।।

× × × × × × × ×

तीजै पहरै कै वणजारिआ जोवन घटै जरूआ जिणै।

× × × × × × × ×

चउथै पहरै रैणि कै वणजारिया मित्रा बिरधि भइया तनु खीणु।।

× × × × × × × ×

महला 2. महला, 3. महला 4, महला 5 में अन्य सिख गुरुओं ने भी 'वणजारियों' की रचना की है। इस परंपरा में रहबा जी ने 'राग जंगली गौड़ी' में 'बणजारिया' लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

29

।। राग जंगली गौड़ी ।।

द्रेवा हम न पाप करंता।
अहो अनंता पतित पांवन तेरा बिड़द क्यू होता।।टेक।।
तोही मोही मोही तोही अंतर अैसा।
कनक कुटक जल तरंग जैसा।।1।।
तुम हीं मैं कोई नर अंतरजांमीं।
ठाकुर थैं जन जांणियै, जन थैं स्वांमीं।।2।।
तुम सबन मैं, सब तुम्ह मांहीं।
रैदास दास असझसि, कहै कहाँ ही।।3।।

छं०सं० 29—1. यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'श्री राग' के अंतर्गत इस प्रकार दिया गया है—
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा। कनक कटिक जल तरंग जैसा।।1।।
जउ पै हम पाप न करंता अहे अनंता। पतित पावन नाम कैसे हुंता।।1।। रहाउ।।
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी। प्रभ ते जनु जानी जै जन ते सुआमी।।2।।
सरीरु आराधै मोकउ बीचारु देहू। रविदास समदल समझावै कोऊ।।3।।
2. 'रैदास की बानी' में यह 'राग जंगली गौड़ी' में दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30

।। राग जंगली गौड़ी ।।

या रमां एक तूं दांनां, तेरा आदू बैश्नौं[1]।
तू सुलितांन सुलितांनां बंदा सकिसंता[2] रजांनां।।टेक।।
मैं बेदियांनत बदनजर दे, गोस गैर गुफतार[3]।
बेअदब बदबखत बीरां, बेअकलि[4] बदकार।।1।।
मैं गुनहगार गुमराह[5] गाफिल, कंम दिला करतार।
तूँ दयाल[6] ददि हद दांवन, मैं हिरसिया हुसियार।।2।।
यहु तन हस्त[7] खस्त खराब[8], खातिर अंदेसा बिसियार।
रैदास दास असांन[9], साहिब देहु अब दीदार।।3।।

पाठांतर 30—1. आदू बैसनौ, 2. सकति, 3. जरबंद बरखुरदार, 4. बेअदब, 5. गरीब, 6. तू दर कदर दरियाहि, 7. असता, 8. खाब, 9. दौल दासहि।

टिप्पणी— 1. यह पद हस्तलेख सं० 992 के अतिरिक्त हस्तलेख सं० 1059 में भी मिलता है। हस्तलेख 1059 का पाठ कुछ भिन्न है, जिसके पाठांतर दिए हुए हैं।
2. यह पद 'रैदास की बानी' में भिन्न पाठ के साथ इस प्रकार दिया गया है—
या रामा एक तूं दाना, तेरी आदि भेख ना।
तू सुलतान सुलताना, बंदा सकिसता अजाना।। टेक।।
मैं बेदियानत न नजर दे, दरमंद बरखुरदार।
बेअरब बदबखत बीरा, बेअकल बदकार।।1।।
मैं गुनहगार गरीब गाफिल, कमदिला दिलतार।
तू कादिर दरियाव जिहावन, मैं हिरसिया हुसियार।।2।।
यह तन हस्त खस्त खराब, खातिर अंदेसा बिसियार।
रैदास दासहि बोलि साहिब, देहु अब दीदार।।3।।
(रै० की बा०, पृ० 15-16, 30)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

31

।। राग गौड़ी ।।

अब हम खूब बतन घर पाया।
उहाँ खैर[1] सदा मेरे भाया।। टेक।।
बेगमपुर सहर का नांउं, फिकर अंदेस नहीं तिहि ठाँव[2]।।1।।
नहीं तहाँ सीस खलात न मार, है फन खता न तरस जवाल।।2।।
आंवन जांन रहम महसूर, जहाँ गनियाव बसै माबूँद।।3।।
जोई सैल करै सोई भावै, महरम महल मैं को अटकावै।।4।।
कहै रैदास खलास चमारा, सो उस सहरि सो मीत हमारा।।5।।

32

।। राग गौड़ी ।।

राम गुसईआ जीअ के जीवना।
मोहि न बिसारहु मैं जनु तेरा।।टेक।।
मेरी संगति पोच सोच दिनु राती। मेरा करमु कटिलता जनमु कुभांति।।1।।
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई। चरण न छाडउ सरीर कल जाई।।2।।
कहु रविदास परउ तेरी साभा। बेगि मिलहु जन करि न बिलंबा।।3।।

टिप्पणी 31--1. राग गौड़ी के अंतर्गत ही यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार दिया हुआ है—
बेगमपुरा सहर का नाउ। दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ।
नां तसवीस खिराजु न मालु। खउफु न खता न तरसु जवालु।।1।। रहाउ।।
अब मोहि खूब वतन गह पाई। ऊहां खैरि सदा मेरे भाई।।1।।
काइमु दाइमु सदा पातिसाही। दोम न सेम एक सो आही।
आबादानु सदा मसहूर। ऊहां गनी बसहि मामूर।।2।।
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै। महरम महल न को अटकावै।
कहि रविदास खलास चमारा। जो हम सहरी सु मीत हमारा।।3।।

2. यह पद हस्तलेख सं० 1059 में भी पाठ-भिन्नता के साथ मिलता है।

3. 'रैदास की बानी' में इसका पाठ इस प्रकार है—
अब हम खूब वतन घर पाया,
ऊँचा खैर सदा मेरे भाया।। टेक।।
बेगमपूर सहर का नाम। फिकर अँदेस नहीं तेहि ग्राम।।1।।
नहीं जहाँ साँसत लानत मार। है फन खता न तरस जवाल।।2।।
आव न जान रहम औजूद। जहाँ गनी आप बसै भाबूद।।3।।
जोई सैलि करै सोई भावै। महरम महल में को अटकावै।।4।।
कहै रैदास खलास चमारा। जो उस सहर सो मीत हमारा।।5।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

33

।। राग गौड़ी पूर्वी ।।

सगल भव के नाइका।
इकु छिनु दरसु दिखाइ जी।।टेक।।
कूप भरिओ जैसे दादिरा, कछु देसु बिदेसु न बूझ।
ऐसे मेरा मन बिखिआ बिमोहिआ, कछु आरा पारु न सूझ।।1।।
मलिन भई मति माधवा, तेरी गति लखी न जाइ।
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई, मैं सुमति देहु समझाइ।।2।।
जोगीसर पावहि नहीं, तुअ गुण कथन अपार।
प्रेम भगति कै कारणै, कहु रविदास चमार।।3।।

34

।। राग गौड़ी बैरागणि।।

मो सउ कोऊ न कहै समझाइ।[1]
जाते[2] आवागवनु बिलाइ।।टेक।।
सतजुगि सतु[3] तेता जगी दुआपरि पूजाचार।
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार।।1।।
पार कैसे पाइबो रे।।
बहु बिधि धरम निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ।
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ।।2।।
करम अकरम बीचारीए संका सुनि बेद पुरान।
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु।।3।।[4]
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिध बिकार।
सुध कवन पर होइबो सुच कुंजर बिधि बिउहार।।4।।
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार।
पारस मानो[5] ताबो छुए कनक होत नहीं बार।।5।।
परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट।
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट।।6।।

पाठांतर 34—1. मोसूं कौन कहै समझाइ, 2. जाथैं, 3. तप, 4. राम बिन कौन हरै अभिमानु, 5. मनि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगत जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार।
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार।।7।।
अनिक जतन निग्रह कीए[6] टारी न टरै भ्रम फास।
प्रेम भगति नहीं उपजै ता ते[7] रविदास उदास।।8।।

35

।। राग गौड़ी।।

मरम कैसें पाइबौ रे।[1]
पंडित कोई न कहै समझाइ, जाथैं मरौ आवागवन बिलाइ।।टेक।।
बहु बिधि धरम निरूपिये, करता दीसै सब लोई।
जाहि धरम भ्रम छूटिये, ताहि न चीन्हैं कोई।।1।।
अक्रम क्रम बिचारिये, सुण संक्या बेद पुरांन।
बाकै हृदै भै भ्रम, हरि बिन कौंन हरै अभिमांन।।2।।
सतजुग सत त्रेता तप, द्वापरि पूजा आचार।
तीन्यूं जुग तीन्यूं दिढी, कलि केवल नांव अधार।।3।।

पाठां 34– 6. टारीए, 7. ताथैं।
यह पद 'रैदास की बानी' में इस प्रकार दिया हुआ है–
मरम कैसे पाइब रे।
पंडित कौन कहै समुझाई, जाते मेरो आवागमन बिलाई ।।टेक।।
बहु बिधि धरम निरुपिये, करते देखै सब कोई।
जेहि धरमे भ्रम छुटि है, सो धरम न चीन्हे कोई।।1।।
करम अकरम बिचारिये, सुनि सुनि बेद पुरान।
संसा सदा हिरदे बसै, हरि बिन कौन हरै अभिमान।।2।।
बाहर मूँदि कै खोजिये, घट भीतर बिबिध बिकार।
सुची कौन विधि होहिंगे, जस कुंजर बिधि ब्यौहार।।3।।
सतजुग सत त्रेता तप करते, द्वापर पूजा अचार।
तिहूँ जुगी तीनो दृष्टी, कलि केवल नाम अधार।।4।।
रवि प्रकास रजनी जथा, यों गत दीसै संसार।
पारस मलि ताँबौ छिपा, कनक होत नहिं बार।।5।
धन जोबन हरि ना मिलै, दुख दारुन अधिक अपार।
एकै एक बियोगियाँ, ता को जानै सब संसार।।6।।
अनेक जनत करि टारिये, टारे न टरै भ्रम पास।
प्रेम भगति नहिं ऊपजै, ता ते जन रैदास उदास।।7।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहरि अंग पखालिये, घट भीतरि बिबधि बिकार।
सुचि कवन परिहोइये, कुंजर गति ब्यौहार।।4।।
रवि प्रकास रजनी जथा, गत दीसै संसार पारस मनि तांबौ छिवै।
कनक होत नहीं बार, धन जोबन प्रभु नां मिलै।।5।।
ना मिलै कुल करनी आचार।
एकै अनेक बिगाइया, ताकौं जाणैं सब संसार।।6।।
अनेक जतन करि टारिये, टारी टरै न भ्रम पास।
प्रेम भगति नहीं उपजै, ताथैं रैदास उदास।।7।।

36

।। राग गौड़ी ।।

जीवत मुकंदे मरत मुकंदे।
ताके सेवक कउ सदा अनंदे।।टेक।।
मुकंद-मुकंद जपहु संसार। बिन मुकंद तनु होइ अउहार।
सोई मुकंदे मुकति का दाता। सोई मुकंदु हमरा पित माता।।1।।
मुकंद-मुकंदे हमारे प्रानं। जपि मुकंद मसतकि नीसानं।
सेव मुकंदे करै बैरागी। सोई मुकंद दुरबल धनु लाधी।।2।।
एक मुकंदु करै उपकारू। हमरा कहा करै संसारू।
मेटी जाति हूए दरबारि। तुही मुकंद जोग जुगतारि।।3।।
उपजिओ गिआनु हूआ परगास। करि किरपा लीने करि दास।
कहु रविदास अब त्रिसना चूकी। जपि मुकंद सेवा ताहू की।।4।।

टिप्पणी 35—1. यह पद थोड़े हेर-फेर से छंद संख्या 34 से साम्य रखता है।
2. वृंदावन शोध संस्थान की प्रति में यह राग गौड़ी के अंतर्गत दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

37

।। राग गौड़ी ।।

साध का निंदकु कैसे तरै।
सर पर जानहु नरक ही परै।।टेक।।
जो ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै। जे ओहु दुआदस सिला पूजावै।
जे ओहु कूप तटा देवावै। करै निंद सभ बिरथा जावै।।1।।
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति। अरपै नारि सीगार समेति।
सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै। करै निंद कवनै नही गुनै।।2।।
जो ओहु अनिक प्रसाद करावै। भूमि दान सोभा मंडपि पावै।
अपना बिगारि बिरांना साढै। करै निंद बहु जोनी हाढै।।3।।
निंदा कहा करहु संसारा। निंदक का प्ररगटि पाहारा।
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ। कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ।।4।।

38

।। राग आसावरी (आसा) ।।

केसवे बिकट माया तोर।
ताथैं[1] बिकल गति मति मोर।।टेक।।
सु विष डसन कराल अहि मुख, ग्रसित सुठल[2] सु भेख।
निरखि माखी बकै व्याकुल, लोभ काल न देख।।1।।
इन्द्रीयादिक दुख्ख दारुन, असंख्यादिक पाप।
तोहि भजत रघुनाथ अंतरि, ताहि त्रास न ताप।।2।।
प्रतंग्या प्रतिपाल चहुँ जुगि, भगति पुरवन कांम।
आस तोर भरोस है, रैदास जै जै राम।।3।।

पाठांतर 38—1. ताते, 2. सुढल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

39

।। राग आसावरी।।

बरजि हो बरजि बीठल, माया जग खाया।
महा प्रबल सब हीं बसि कीये, सुर नर मुनि भरमाया।।टेक।।
बालक बिरधि तरुन अति सुंदरि, नांनां भेष बनावै।
जोगी जती तपी संन्यासी, पंडित रहण न पावै।।1।।
बाजीगर की बाजी कारनि, सबकौ कौतिग आवै।
जो देखै सो भूलि रहै, वाका चेला मरम जु पावै।।2।।
खंड ब्रह्मड लोक सब जीते, ये ही बिधि तेज जनावै।
स्वंभू कौ चित चोरि लीयौ है, वा कै पीछैं लागा धावै।।3।।
इन बातनि सुकचनि मरियत है, सबको कहै तुम्हारी।
नैन अटकि किनि राखौ केसौ, मेटहु बिपति हमारी।।4।।
कहै रैदास उदास भयौ मन, भाजि कहाँ अब जइये।
इत उत तुम्ह गौब्यंद गुसांई, तुम्ह ही मांहि समइये।।5।।

40

।। राग आसा।।

रांमहि[1] पूजा कहाँ चढ़ाऊँ।
फल अरु फूल अनूप न पाऊँ।।टेक।।
थनहर दूध जु बछ जुठार्‌यौ[2], पहुप भवर जल मीन बिटार्‌यौ[3]।
मलियागिर[4] बेधियौ भवंगा[5], विष अंम्रित[6] दोऊँ एकै संगा।।1।।
मन हीं पूजा मन हीं धूप, मन ही सेऊँ सहज सरूप।।2।।
पूजा अरचा न जांनूं रांम तेरी, कहै रैदास कवन गति मेरी।।3।।

टिप्पणी 39—यह छंद केवल हस्तलेख सं० 995 में मिलता है।
पाठांतर 40—1. राम मैं, 2. बछरु जुठारी, 3. विगारी, 4. मलयगिरि, 5. भुअंगा, 6. अमृत।
टिप्पणी —यह पद सभी संग्रहों में मिलता है। पंजाब शाखा की प्रति 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग गूजरी' के अंतर्गत दिए गए पाठ को तुलनात्मक दृष्टि के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है—

दूधु त बछरै थनऊ बिटारिओ। फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ।।1।।
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ। अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ।।1।। रहाउ।।
मैलागर वेर्है है भुइअंगा। बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा।।2।।
धूप दीप नईबेदहि बासा। कैसे पूज करहि तेरी दासा।।3।।
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ। गुरु परसादि निरंजनु पावउ।।4।।
पूजा अरचा आहि न तोरी। कहि रविदास कवन गति मोरी।।5।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41

।। राग आसा।।

बंदे जानि साहिब गनीं।
संमझि बेद कतेब बोलै, ख्वाब मैं क्या मनीं।।टेक।।
ज्वांनीं दुनी जमाल सूरति, देखिये थिर नांहि बे।
दम छसै सहंस्र इकवीस हरि दिन[2], खजांनें थैं जांहि बे।।1।।
मतीं मारे ग्रब गाफिल, बेमिहर बेपीर बे।
दरी खानैं पड़ै चोभा, होत नहीं तकसीर बे।।2।।
कुछ गाँठि खरची मिहर तोसा, खैर खूबी हाथि बे।
धणीं का फुरमांन आया, तब कीया चालै साथ बे।।3।।
तजि बद जबां बेनजरि कम दिल, करि खसकी कांणि बे[2]।
रैदास की अरदास सुणि, कछू हक हलाल पिछांणि बे।।4।।

42

।। राग आसा।।

सु कछु बिचार्‌यौ ताथैं मेरौ मन थिर कै रह्यौ।
हरि रंग लागौ ताथैं बरन पलट भयौ।।टेक।।
जिनि यहु पंथी पंथ चलावा, अगम गवन मैं गमि दिखलावा।।1।।
अबरन बरन कथैं जिनि कोई, घटि घटि ब्यापि रह्यौ हरि सोई[1]।।2।।
जिहि पद सुर नर प्रेम पियासा, सो पद्म रमि रह्यौ[2] जन रैदासा।।3।।

पाठांतर 41—1. दम अकीस हजार हर दिन, 2. तजि कू जबां कसदिल, कछू करि खसम की कांनि।
पाठांतर 42—1. है सोई, 2. रह्या।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
टिप्पणी— यह पद समस्त हस्तलेखों और संग्रहों में मिलता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

43

।। राग आसा ।।

माधौ[1] संगति सरनि तुम्हारी।
जगजीवन कृश्न[2] मुरारी।। टेक।।
तुम्ह मखतूल गुलाल चत्रभुज, मैं बपुरौ जस कीरा।
पीवत डाल फूल रस अंमृत, सहजि भई मति हीरा[3]।। 1।।
तुम्ह. चंदन मैं अरंड बापुरौ, निकटि तुम्हारी बासा।
नीच बिरख थैं ऊँच भये, तेरी बास सुबास निवासा।। 2।।
जाति भी वोंछी[4] जनम भी वोछा[5], वोछा करम[6] हमारा।
हम सरनागति रांम राइ की, कहै रैदास बिचारा[7]।। 3।।

पाठांतर 43—1. प्रभु जी तुम, 2. राम,
3. गली-गली को जल बहि आयो, सुरसरि जाय समायो।
संगति के परताप महातम, नाम गंगोदक पायो।।
स्वाति बूँद बरसे फनि ऊपर, सोई विषै होई जाई।
ओही बूँद कै मोती निपजै, संगति की अधिकाई।।
तुम चंदन हम रेंड बापुरे, निकट तुम्हारे आसा।
संगति के परताप महातम, आवै बास सुबासा।। (रै० की बा०, 38, व 87)
4. ओछी, 5. ओछा, 6. ओछा कसब, 7. नीचे से प्रभु ऊँच कियो है, कहि रैदासा चमारा।।

टिप्पणी— यह छंद सभी हस्तलेखों और संग्रहों में मिलता है। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इसका पाठ इस प्रकार दिया हुआ है—
तुम चंदन हम इरंड बापुरे सँगि तुम्हारे बासा।
नीच रुख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा।। 1।।
माधव सत संगति सरनि तुम्हारी। हम अउगन तुम्ह उपकारी।।1।। रहाउ।।
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा।
सत संगति मिलि रही ऐ माधव जैसे मधुप मखीरा।। 2।।
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा।
राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा।। 3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

44

।। राग आसा ।।

माधौ अविद्या हित कीन्ह।[1]
ताथैं मैं तोर नांव न लीन्ह[2]।।टेक।।
मिग्र मीन भ्रिग पतंग कुंजर, एक दोस बिनास।
पंच ब्याधि असाधि इहि तन[3], कौंन[4] ताकी आस।।1।।
जल थल जीव जंत जहाँ-जहाँ लौं[5] करम पासा[6] जाइ।
मोह पासि अबध बाधौ, करियै कौंण उपाइ।।2।।
त्रिजुग[7] जोनि अचेत संम भूमि, पाप पुन्य न सोच।
मानिषा अवतार दुरलभ, तिहू संकुट पोच।।3।।
रैदास दास उदास बन भव[8], जप न तप गुरु ग्यांन।
भगत जन भौ हरन कहियत, अैसै परंम निधांन।।4।।

45

।। राग आसा ।।

देहु कलाली एक पियाला।
अैसा अवधू है मतिवाला।।टेक।।
ए[1] रे कलाली तैं क्या कीया, सिरकै सा तैं[2] प्याला दीया।।1।।
कहै कलाली प्याला देऊँ, पीवनहारे का सिर लेऊँ।।2।।
चंद सूर दोऊ सनमुख होई, पीवै पियाला मरै न कोई।।3।।
सहज सुनि[3] मैं भाठी सरवै, पीवै रैदास गुर मुखि[4] दरवै।।4।।

पाठांतर 44—1. कीन, 2. लीन, 3. देही, 4. कौंण, 5. जलि जीव जंत जांहां तहाँ लूँ, 6. बासा, 7. त्रिगुण, 8. तजि भ्रमु।

टिप्पणी— यह पद ह०सं० 992, 1059, सरबंगी, रै० की बा० सभी में मिलता है। पं० शाखा की प्रति 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इसका पाठ इस प्रकार मिलता है—
मिग्र मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोष बिनास।
पंच दोष असाध जा महि ताकी केतक आस।।1।।
माधो अबिदिआ हित कीन। बिबेक दीप मलीन।।1।। रहाउ।।
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुंन पाप असोच।
मानुषा अवतार दुलभ तिहि संगति पोच।।2।।
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ।
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ।।3।।
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन।
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान।।4।। (आसा-4)

पाठांतर 45—1. है, 2. सातैं, 3. सुन्न, 4. गुरुमुख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

46

।। राग आसा ।।

संत ची संगति संत कथा रसु।
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव।।टेक।।
संत तुझी तनु संगति प्रान। सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव।।1।।
संत आचरण संत चो मारगु। संत च ओल्हग ओल्हगणी।।2।।
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि। जणी लखावहु असंत पापी सणि।।3।।
रविदास भणै जो जाणै सो जाणु। संत अनंतहि अंतरु नाही।।4।।

47

।। राग आसा ।।

तुझहि[1] चरन अरबिंद[2] भँवर मनु[3]।
पान करत पाइओ[4], पाइओ[5] रामईआ धनु[6]।।टेक।।
कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु[7]। प्रेम जाइ तउ डरपै तेरो जनु[8]।।1।।
संपति बिपति पटल माइआ धनु। ता महि भगत होत न तेरो जनु[9]।।2।।
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन[10]। कहि रविदास छूटिबो कवन गुनै।।3।।

48.

।। राग आसा ।।

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे।
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे।।टेक।।
हरि के नाम कबीर उजागर। जनम जनम के काटे कागर।।1।।
निमत नामदेउ दूधु पीआइया। तउ जग जनम संकट नहीं आइआ।।2।।
जनम रविदास राम रंगि राता। इउ गुर परसादि नरक नहीं जाता।।3।।

पाठांतर 47—1. तुझा, 2. अरुब्यंद, 3. मन, 4-5, पायौ, 6. राम धन, 7. कहा भयौ जे गत न छिन छिन, 8. प्रेम जाइ तौ डरै तेरौ जन, 9. कैसैं तेरौ जन, 10. प्रेम रजु ले राखूँ रिदै धरि, 11. कहै रैदास छूटिबौ कवन परि।

टिप्पणी— हस्तलेखों में तीसरी पंक्ति चौथे स्थान पर और चौथी पंक्ति तीसरे स्थान पर दी हुई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

49

।। राग आसा।।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है।
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है।।टेक।।
जब कुछ पावै तब गरबु करतु है। माइआ गई तब रोवनु लगतु है।।1।।
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना। बिनसि गइआ जाइ कहूँ समाना।।2।।
कहि रविदास बाजी जगु भाई। बाजीगर सउ मोहि[1] प्रीति बनि आई।।3।।

50

।। राग आसा।।

भाई रे सहज बन्दो लोई, बिन सहज सिद्धि न होई।
लौ लीन मन जो जानिये, तब कीट भृंगी होई।।टेक।।
आपा पर चीन्हे नहीं रे, और को उपदेस।
कहाँ ते तुम आयो रे भाई, जाहुगे किस देस।।1।।
कहिये तो कहिये काहि कहिये, कहाँ कौन पतियाइ।
रैदास दास अजान है करि, रह्यो सहज समाइ।।2।।

1. मुहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

51

।। राग आसा।।

ऐसी मेरी जाति भिख्यात[1] चमारं।
हिरदै[2] राम गौब्यंद गुन सारं।।टेक।।
सुरसुरी[3] जल लीया क्रित[4] बारूणी रे, जैसे संत जन करता नहीं पांन।
सुरा अपवित्र नित[5] गंग जल मांनियै[6], सुरसुरी मिलत नहीं होत आंन।।1।।
ततकरा अपवित्र करि मांनियैं, जैसें कागदगर करत बिचारं।
भगत भगवंत जब ऊपरैं लेखियैं, तब पूजियै करि नमसकारं।।2।।
अनेक अधम जीव नांम गुण उधरे, पतित पांवन भये परसि सारं।
भणत[7] रैदास ररंकार गुण गावतां, संत साधू भये सहजि पारं।।3।।

52

।। राग सोरठी।।

पार गया चाहै सब कोई।
रहि[1] उर वार पार नहीं होई।।टेक।।
पार कहैं उर वार सूँ पारा, बिन पद परचै भ्रमहि गवारा।।1।।
पार परंम पद मंझि मुरारी, तामैं आप रमैं बनवारी।।2।।
पूरन ब्रह्म बसै सब ठाईं, कहै रैदास मिले सुख सांईं।।3।।

पाठांतर 51—1. विख्यात, 2. हृदय, 3. सुरसरि, 4. कृत, 5. तिनि, 6. आनिये, 7. भनत।

टिप्पणी— 1. यह पद रज्जब के 'सरबंगी' (पृ० 17), गुरु ग्रंथ साहिब और रै० की बा० (42/20) में मिलता है किंतु 'सरबंगी' में यह 'राग रामगरी' में तथा 'गुरु ग्रंथ साहिब' में यह 'राग मल्हार' में दिया हुआ है।

2. तुलनात्मक दृष्टि के लिए 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पाठ दिया जा रहा है। इस पद की अंतिम दो पंक्तियाँ आत्म-कथन के रूप में उद्धृत की जाती रही हैं :

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं। रिदै राम गोबिंद गुन सारं।। 1।। रहाउ।।
सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे। संत जन करत नही पानं।
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसुरी मिलत नहि होइ आनं।। 1।।
तर तारि अपवित्र करि मानी ऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं।
भगति भागउतु लिखी ऐ तिह ऊपरे पूजी ऐ करि नमसकारं।। 2।।
मेरी जाति कुटबां ढला ढोर ढोवंता नितहि बनारसी आस पासा।
अब विप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा।। ३।।

पाठांतर 25—1. दुहु।

टिप्पणी— यह पद रज्जब की 'सरबंगी' में 'पारंगत बमेख' के अंतर्गत आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

53

।। राग सोरठी ।।

बपुरौ सति[1] रैदास कहै।
ग्यान बिचारि नांइ चित[2] राखै, हरि कै सरनि रहै रे।।टेक।।
पाती तोड़ै पूज रचावै, तारण तिरण कहै रे।
मूरति मांहि बसै परमेसुर, तौ पांणी मांहि तिरै रे।।1।।
त्रिबिधि[3] संसार कवन बिधि तिरिबौ, जे दिढ नांव न गहै रे।
नाव छाड़ि जे डूंगै[4] बैठे, तौ दूणां दूख सहै रे।।2।।
गुरु कौं सबद अरु सुरति कुदाली, खोदत[5] कोई लहै रे।
रांम काहू कै बांटै न आयौ, सोनैं कूल बहै रे।।3।।
झूठी माया जग डहकाया[6], तो तनि ताप दहै रे।
कहै रैदास रांम जपि रसनां, माया काहू कै संगि न न रहै रे।।4।।

54

।। राग सोरठी ।।

इहै अंदेसा सोचि जिय मेरे।[1]
निस बासुरि गुन गाँऊँ रांम तेरे।।टेक।।
तुम्ह च्यतंत मेरी च्यंता हो न जाई, तुम्ह च्यंतामनि होऊ कि नांहीं।।1।।
भगति हेत का का नहीं कीन्हा, हमारी बेर भये बल हीनां।।2।।
कहै रैदास दास अपराधी, जिहि तुम्ह ढरवौ[2] सो मैं भगति न साधी।।3।।

पाठांतर 53—1. बापुरौ संत, 2. मन, 3. त्रिबिधि, 4. डूबै, 5. कूदाली, खोजत, 6. डहिकाया।
पाठांतर 54—1. जीय मेरे, 2. दरउ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

55

।। राग सोरठी ।।

रांम राइ का कहिये यहु अैसी।
जन की जांनत हौ जैसी तैसी।।टेक।।
मीन पकरि काट्यौ अरु फाट्यौ, बांटि कीयौ बहु बांनीं[1]।
खंड खंड करि भोजन कीन्हौं, तऊ न बिसार्‌यौ पांनीं[2]।।1।।
तै हम बाँधे मोह पासि मैं, हम तूं प्रेम जेवरिया बांध्यौ।
अपने छूटन के जतन करत हौ, हम छूटे तूँ आराध्यौ।।2।।
कहै रैदास भगति इक बाढ़ी, अब[3] काकौ डर डरिये।
जा डर कौं हम तुम्ह कौं सेवैं, सु दुख अजहूँ सहिये[4]।।3।।

पाठांतर 55—1. घानी, 2. तौउ उन बीसर्‌यौ, 3. इक, 4. मरिये।

टिप्पणी— ये पद प्रायः सभी हस्तलेखों और संग्रहों में मिले हैं। तुलनात्मक दृष्टि के लिए इस छंद का 'गुरु ग्रंथ साहिब' में उपलब्ध पाठ दिया जा रहा है—

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे।
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे।। 1।। रहाउ।।
माधवे जानत हहु जैसी तैसी। अब कहा करहुगे ऐसी।। 1।।
मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहु बानी।
खंड-खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी।। 2।।
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा।
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नहीं संतापा।। 3।।
कहि रविदास भगति इक बाढ़ी अब इह कासिउ कही ऐ।
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सही ऐ।। 4।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

56

।। राग सोरठी ।।

रे मन माछला संसार समंदे, तू चित्र बिचित्र बिचारि रे।
जिहि गालै गिलियाँ ही मरियें, सो संग दूरि निवारि रे।। टेक।।
जम छैड़ि गणि डोरि छै कंकन, प्र त्रिया गालौ जांणि रे।
होइ रस लुबधि रमैं यू मूरिख, मन पछितावै न्यांणि[1] रे।। 1।।
पाप गिल्यौ[2] छै धरम निबौली, तू देखि देखि फल चाखि रे।
पर त्रिया संग भलौ जे होवै, तौ राणां रांवण[3] देखि रे।। 2।।
कहै रैदास रतन फल कारणि, गोब्यंद का गुण गाइ रे।
काचौ[4] कुंभ भर्‌यौ जल जैसें, दिन दिन घटतौ जाइ रे।। 3।।

57

।। राग सोरठी ।।

रे चित चेति चेति अचेत काहे, बालमीकौं देख रे।
जाति थैं कोई पदि न पहुच्या, राम भगति बिसेष[1] रे।। टेक।।
षट क्रम सहित जु विप्र होते, हरि भगति चित द्रिढ नांहि रे।
हरि कथा सूँ हेत नांहीं, सुपच तुलै तांहि[2] रे।। 1।।
स्वान सत्रु अजाति सब थैं, अंतरि[3] लावै हेत रे।
लोग वाकी कहा जानैं, तीनि[4] लोक पवित[5] रे।। 2।।
अजामिल गज गनिका तारी, काटी कुंजर की पासि रे।
अैसे द्रुमती मुकती कीये, क्यूँ न तिरै रैदास रे।। 3।।

पाठांतर 56—1. अजान, 2. गिलोय, गुलीचा, 3. राजा रावन, 4. काँचे।
पाठांतर 57—1. बसेख, 2. माँहि, 3. भगति, 4. तिहुं, 5. पबित्र।
टिप्पणी — इस पद को 'राग केदारा' के अंतर्गत 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार दिया गया है—
खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि।
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तूलि समानि।। 1।।
रे चित चेति चेत अचेत। काहे न बालमीकहि देख।
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख।। रहाउ ।।
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु।
लोग बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस।। 2।।
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास।
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास।। 3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

58

।। राग सोरठी ।।

रथ कौ चतुर चलावन[1] हारौ।
खिण[2] हाकै खिण ऊभौ[3] राखै, नहीं आन कौ सारौ।।टेक।।
जब रथ रहै सारहीं[4] थाके, तब को रथहि चलावै।
नाद बिनोद सबै ही थाकै, मन मंगल नहीं गावैं।।1।।
पाँच तत कौ यहु रथ साज्यौ, अरधैं उरध निवासा।
चरन कवल ल्यौ लाइ रह्यौ है, गुण गावै रैदासा।।2।।

59

।। राग सोरठी ।।

जो तुम तोरौ रांम मैं नहीं तोरौं[1]।
तुम सौं तोरि कवन सूँ जोरौं[2]।।टेक।।
तीरथ ब्रत का न करौं अंदेसा, तुम्हारे चरन कवल[3] का भरोसा।।1।।
जहाँ जहाँ[4] जाऊँ तहाँ तुम्हारी पूजा, तुम्ह सा देव अवर[5] नहीं दूजा।।2।।
मैं हरि प्रीति सबनि सूँ तोरी, सब स्यौं तोरि तुम्हैं स्यूँ जोरी[6]।।3।।
सब परहरि[7] मैं तुम्हारी आसा[8], मन क्रम वचन कहै रैदासा।।4।।

पाठांतर 58—1. चलावण, 2. खीण, खिन, 3. उभटै, 4. जब रथ थकै सारथी थाके। (रै० की बा०, 22-23/49)

पाठांतर 59—1. नहिं तोरूँ, 2. सो जोरूँ, 3. कमल, तुम्हारे नांव का मोहि भरोसा, 4. जहँ तहँ, 5. और, 6. मैं अपनौ मन हरि सों जोर्‌यो। हरि सो जोरि सबन से तोर्‌यो।। (रै० की बा०, 23/50) 7. सब ही पहर तुम्हारी आसा (रै० की बा०), सब परकार तुम्हारी आसा। (हस्तलेख 1059)

टिप्पणी—1. यह पद बदली हुई भाषा में 'हिंदी संत काव्य-संग्रह' (सं० गणेश प्रसाद द्विवेदी) में इस प्रकार दिया हुआ है—
साँची प्रीति हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोडि अवर संग तोड़ी।
जो तुम बादर तो हम मोरा, जो तुम चंद हम भये चकोरा।।
जो तुम दीवा तो हम बाती, जो तुम तीरथ तो हम जात्री।
जहाँ जाउं तहं तुम्हारी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा।
तुम्हरे भजन कटे भय फाँसा, भक्ति हेतु गावै रैदासा।।
2. इस पद के स्रोत का श्री द्विवेदी ने कोई संकेत नहीं दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

60

।। राग सोरठी ।।

किहि बिधि अणसरूं रे[1], अति दुलभ[2] दीनदयाल।
मैं महाबिषई अधिक आतुर, कांमना की झाल।।टेक।।
कह दूयंभ बाहरि कीयैं[3], हरि कनक कसौटी हार।
बाहरि भीतरि साखि तू, मैं कीयौ सुसा[4] अंधियार।।1।।
कहा भयौ बहु पाखंड कीयैं, हरि हिरदै सुपिनैं न जांन।
ज्यू दारा बिभचारनीं, मुख पतिब्रता जीय आंन।।2।।
मैं हिरदै हारि बैठो हरी, मो पैं सर्‌यौं न एको काज।
भाव भगति रैदास दे, प्रतिपाल करौ मोहि आज[5]।।3।।

61

।। राग सोरठी ।।

माधवे का कहिये भ्रम अैसा।
तुम कहियत होह न जैसा।।टेक।।
न्रिपति[1] एक सेज सुख सूता, सुपिनैं भया भिखारी।
अछित राज बहुत दुख पायौ, सा गति भई हमारी।।1।।
जब हम हुते तबैं तुम्ह नांहीं, अब तुम्ह हौ मैं नांहीं।
सलिता[2] गवन कीयौ लहरि महोदधि, जल केवल जल मांहीं।।2।।

पाठांतर 60—1. सुमिरौ, 2. दुर्लभ, 3. कहा बाहर डिभ कीये, 4. ससौ, 5. करि प्रतिपालिहि आज। (रै० की बा० 23/51)

पाठांतर 61—1. नरपति, 2. व

टिप्पणी— यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार दिया हुआ है—
जब हम होते तब तू नाही, अब तू ही मैं नाही।
अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही।। 1।।
माधवे किआ कही ऐ भ्रमु ऐसा। जैसा मानी ऐ होइ न तैसा।। 1।। रहाउ।।
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइया भिखारी।
अछ्त राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी।। 2।।
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ।
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ।। 3।।
सरबे एकु अनेकै सुआमी सम घट भोगवै सोई।
कहि रविदास हाथ पै नैरै सहजे होइ सु होई।। 4।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजु भुजंग रजनी प्रकासा[3], अस कछु मरम[4] जनावा।
संमझि परी मोहि कनक अल्यंक्रत ज्यूं, अब कछू कहत न आवा।।3।।
करता एक भाव जगि भुगता, सब धट सब बिधि सोई।
कहै रैदास भगति एक उपजी, सहजैं होइ स होई।।4।।

62
।। राग सोरठी ।।

माधौ भ्रम कैसें न बिलाइ।
ताथैं द्वती[1] भाव दरसाइ।।टेक।।
कनक कुंडल सूत्र पट जुदा, रजु भुजंग[2] भ्रम जैसा।
जल तरंग पांहन प्रितमां ज्यूँ, ब्रह्म जीव द्वती अैसा।।1।।
बिमल ऐक रस, उपजै न बिनसै, उदै अस्त[3] दोई नांहीं।
बिगता बिगति गता गति नांहीं[4], बसत[5] बसै सब मांहीं।।2।।
निहचल निराकार अजीत अनूपम, निरभै गति[6] गोब्यंदा।
अगम अगोचर अखिर अतरक[7], त्रिगुण नित आनंदा।।3।।
सदा अतीत ग्यांन घ्यानं बिबरजित, नीरबिकार[8] अबिनासी।
कहै रैदास सहज सूंनि सति[9], जीवन मुकति निधि कासी।।4।।

63
।। राग सोरठी ।।

मन मेरे सोई सरूप बिचार।
आदि अंत अनंत परंम पद, संसै सकल निवारं।।टेक।।
जस हरि कहियत तस तौ नहीं, है अस जस कछू तैसा।
जानत जानत जानि रह्यौ मन[1], ताकौ मरम कहौ निज कैसा।।1।।
कहियत आन अनुभवत आन, रस मिल्या न बेगर होई।
बाहरि भीतरि गुप्त प्रगट, घट घट प्रति और न कोई।।2।।

---

3. रजु भुअंग रजनी परगासा, 4. भरम। (रै० की बा०, 52)
पाठांतर 62—1. द्वैत, 2. रंज भुअंग, 3. असत, 4. घटै नहिं कबहूं, 5. खिमां, 6. गमि, 7. अतरीक, 8. नृबिकार।
पाठांतर 63—1. सब, 2. उपाइ जु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि ही येक अंति सो एकै, मधि उपाधि सु[2] कैसे।
है सो येक पै भ्रम तैं दूजा, कनक अल्यंकृत जैसें।।3।।
कहै रैदास प्रकास परम पद, का जप तप ब्रत पूजा।
एक अनेक येक हरि, करौं कवण बिधि दूजा।।4।।

64

।। राग सोरठी ।।

जिनि थोथरा पिछौंरै कोई।
जो र पिछौरे जिहिं कण होई।।टेक।।
झूठ रे यहु तन झूठी माया, झूठा हरि बिन जन्म गंवाया।।1।।
झूठा रे मंदिर भोग बिलासा, कहि समझावै जन रैदासा।।2।।

65

।। राग सोरठी ।।

न बीचारिओ राजा राम को रसु।
जिह रस अनरस बीसरि जाही।।टेक।।
दूलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेके।
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।।1।।
जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही।
इन्द्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नहीं।।2।।
कहीअत आन अचरीअत आन कछु समझ न परै अपर माइआ।
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ।।3।।

64–टिप्पणी –इस छंद में टेक के बाद निम्न पंक्तियाँ भी मिलती हैं–
एवं पाठां० थोथी काया, थोथी माया, थोथा हरि बिन जनम गँवाया।।1।।
थोथा पंडित, थोथी बानी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।।2।।
थोथा मंदिर, भोग बिलासा, थोथी आन देव की आसा।।3।।
साचा सुमिरन नाम बिसासा, मन बच कर्म कहै रैदासा।।4।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

66

।। राग सोरठी ।।

हरि हरि हरि न जपहि रसना।
अवर सम तिआगि बचन रचना।।टेक।।
सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके।
चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके।।1।।
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर माँही।
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही।।2।।
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बड़ै भागि लिव लागी।
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी।।3।।

67

।। राग सोरठी ।।

माधवे तुम न तोरहु तउ हम नहीं तोरहि।
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि।। टेक।।
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा। जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा।।1।।
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती। जउ तुम तीरथ तउ हम जाती।।2।।
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी। तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी।।3।।
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा। तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा।।4।।
तुमरे भजन कटहि जम फाँसा। भगति हेत गावै रविदासा।।5।।

पाठांतर 67—यह पद बदली हुई भाषा में अन्यत्र इस प्रकार मिलता है—

1. साँची प्रीति हम तुम संग जोड़ी, तुम संग जोड़ि, अवर संग तोड़ी।
जो तुम बादर तो हम मोरा, जो तुम चंद हम भये चकोरा।।
जो तुम दीवा तो हम बाती, जो तुम तीरथ तो हम जात्री।
जहाँ जाउं तहं तुम्हारी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा।
तुम्हरे भजन कटे भव[1] फाँसा, भक्ति हेतु गावै रैदासा।।
(संत काव्य-संग्रह, सं० गणेश प्रसाद द्विवेदी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

68

।। राग सोरठी ।।

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा।
तैसे तरवर पंखि बसेरा।।टेक।।
जल की भीति पवन का थंभा। रकत बुंद का गारा।
हाड़ मास नाड़ी को पिंजरू। पंखी बसै बिचारा।।1।।
राखहु कंध उसारहु नीवां। साढ़े तीनि हाथ तेरी सीवां।।2।।
बंके बाल पाग सिर डेरी। इहु तनु होइगो भसम की ढेरी।।3।।
ऊचे मंदर सुंदर नारी। राम नाम बिनु बाजी हारी।।4।।
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी। ओछा जनमु हमारा।
तुम सरनागति राजा रामचंद। कहि रविदास चमारा।।5।।

69

।। राग सोरठी ।।

चमरटा गाँठि न जनई।
लोग गठावै पनही।।टेक।।
आर नहीं जिह तोपउ। नहीं रांबी ठाउ रोपउ।।1।।
लोग गंठि गंठि खरा बिगूचा। हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा।।2।।
रविदासु जपै राम नामा, मोहि जम सिउ नाही कामा।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

70

।। राग सोरठी ।।

पांडे कैसी पूज[1] रची रे।
सति[2] बोलै सोई सतिबादी[3], झूठी बात बची रे।।टेक।।
जो अबिनासी सबका करता, ब्यापि रह्यौ सब ठौर रे।
पंच तत जिनि कीया पसारा, सो यौ ही क्रिधौं[4] और रे।।1।।
तू ज कहत है यौ ही करता, या कौं मनिख करै रे।
तारण[5] सकति सहीजे यामैं, तौ आपण क्यूँ न तिरै रे।।2।।
अहीं भरोसै सब जग बूझा, सुंणि पंडित की बात रे।
याकै दरसि कौंण[6] गुण छूटा, सब जग आया जात रे।।3।।
याकी सेव सूल नहीं भाजै, कटै न संसै पास रे।
सौचि बिचारि देखिया मूरति, यौं छाड़ौ[7] रैदास रे।।4।।

71

।। राग धनाश्री ।।

तुझा[1] देव कवलापती सरणि आयौ।
मंझा जनम संदेह भ्रम छेदि माया।।टेक।।
अति[2] संसार अपार भौ सागरा, ता मैं जांमण मरण संदेह भारी।
कांम भ्रम क्रोध भ्रम लोभ भ्रम, मोह भ्रम, अनत भ्रम छेदि मम करसि यारी।।1।।
पंच संगी मिलि पीड़ियौ प्रांणि यौं, जाइ न न सकू बैराग भागा।
पुत्र बरग कुल[3] बंधु ते भारज्या, भखैं दसौ दिसि रिस[4] काल लागा।।2।।
भगति च्यंतौं तो मोहि दुख ब्यापै, मोह च्यंतौ तौ तेरी भगति जाई।
उभै संदेह मोहि रैंणि दिन ब्यापै, दीन दाता करौं कौंण उपाई।।3।।
चपल चेत्यौ नहीं बहुत दुख देखियौ, कांम बसि मोहियौ क्रम फंधा।
सकति सनबंध कीयौ, ग्यान पद हरि लीयौ, हिरदै बिस रूप[5] तजि भयौ अंधा।।4।।
परम प्रकास अबिनास अघ मोचनां, निरखि निज रूप बिश्रांम पाया।
बंदत रैदास बैराग पद च्यंतता, जपौ जगदीस गोब्यंद राया।।5।।

पाठांतर 70—1. पूजि, 2. सत्ति, 3. सत्तिवादी, 4. किछू, 5. तारणि, 6. कूण, 7. यूं छांड़ी।
पाठांतर 71—1. वा तुझ (ह० 1059), तेरे देव कमलापति सरन आया (रै०बा० 75), 2. अविर, 3. कूला, 4. रिसि, 5. बिस्वरूप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

72

।। राग धनाश्री ।।

मेरी प्रीति गोपाल सूँ जिनि घटै हो।
मैं मोलि महँगी लई तन सटै हो।।टेक।।
हिरदै सुमिरंन करौं नैन आलोकनां[1], श्रवनां हरि कथा पूरि राखूँ।
मन मधुकर करौ, चरणां चित धरौं[2], रांम रसांइन रसना चाखूँ।।1।।
साध संगति बिनां भाव नहीं उपजै, भाव बिन भगति क्यूँ होइ तेरी।
बंदत रैदास रघुनाथ सुणि बीनती, गुर प्रसादि क्रिपा करौ मेरी।।2।।

73

।। राग धनाश्री ।।

कौंन[1] भगति थैं रहै प्यारे पांहुनौं रे[2]।
धरि धरि देखौं मैं अजब अभावनौं रे[3]।।टेक।।
मैला मैला कपड़ा केताकि धोउँ[4], आवै आवै नींदड़ी कहाँ लौं सोऊँ।।1।।
ज्यूँ ज्यूँ जोड़ौं त्यूँ त्यूँ फाटे, झूठे से बनजि रे[5] उठि गयौ हाटे।।2।।
कहें रैदास पर्‌यौ जब लेखौ, जोई जोई कीयौ रे, सोई सोई देखौ।।3।।

पाठांतर 72—1. अवलोकिनो, 2. चित्त चरना धरौं।

टिप्पणी —इस पद का पाठ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार मिलता है—

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै।
मैं तउ मोलि महगी लई जीअ सटै।। रहाउ।।
चित सिमरनु करउ मैन अवलोकिनो। स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ।
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ। रसन अम्रित राम नाम भाखउ।। 1।।
साधु संगति बिना भाउ नहीं उपजै। भाव बिनु भगति नहीं होइ तेरी।
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ। पैज राखहु राजा राम मेरी।। 2।।

पाठांतर 73—1. कवन, 2. प्यारौ पाहुणो रे, 3. अझक अभाबणौं रे (ह० 1059), अजक भावनौ रे (ह० 992), 4. कहाँ लू धोऊँ, 5. बाणिज।

टिप्पणी —'गुरु ग्रंथ साहिब' में यह छंद इस प्रकार दिया हुआ है—

।। राग मल्हार।।

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते।
साध संगति पाई परम गते।। 1।। रहाउ।।
मैले कपरे कहा लउ धोवउ। आवेगी नींद कहा लगु सोवउ।।1।।
जोई जोई जोरिओ सोई-सोई फाटिओ। झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ।। 2।।
कहु रविदास भइओ जब लेखो। जोई-जोई कीनो सोई-सोई देखिओ।। 3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

74

।। राग धनाश्री ।।

जयौ रांम गोब्यंद बीठल बासदेव।
हरि बिश्न बैकुंठ मधुकीटभारी।।
कृश्न केसों रिषीकेस कमलाकंत[1]।
अहो भगवंत त्रिबधि संतापहारी।। टेक।।
अहो देव संसार तौ गहर गंभीर।
भीतरि भ्रमत दिसि ब दिसि, दिसि कछू न सूझै।।
बिकल ब्याकुल खेंद, प्रणवंत परमहेत।
ग्रसित मति मोहि मारग न सूझै।।
देव इहि औसरि आंन, कौंन संक्या समांन।
देव दीन उधंरन, चरंन सरन तेरी।।
नहीं आंन गति बिपति कौं हरन और।
श्रीपति सुनसि सीख संभाल प्रभु करहु मेरी।।1।।
अहो देव कांम केसरि काल, भुजंग भांमिनी भाल।
लोभ सूकर क्रोध बर बारनूँ[2]।।1।।
ग्रब गैंडा महा मोह टटनीं, बिकट निकट अहंकार आरनूँ[3]।
जल मनोरथ ऊरमीं, तरल तृसना मकर इन्द्री जीव जंत्रक मांही[4]।
समक ब्याकुल नाथ, सत्य बिष्यादिक पंथ, देव देव विश्राम नांहीं।।2।।
अहो देव सबै असंगति मेर, मधि फूटा भेर।
नांव नवका बड़ैं भागि पायौ।
बिन गुर करणधार डोलै न लागै तीर।
बिषै प्रवाह औ गाह जाई।।
देव किहि करौं पुकार, कहाँ जाँऊँ।
कासूँ कहूँ, का करूँ अनुग्रह दास की त्रासहारी।।
इति ब्रत मांन और[5] अवलंबन नहीं।
तो बिन त्रिबधि नाइक मुरारी।।3।।

पाठांतर 74—1. कला, 2. बारनौं, 3. आरनौ, 4. मकर पै़र यन्द्री, जीव जंत्र मांहि, 5. मांनि अवर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहो देव जेते कयैं[6] अचेत, तू सरबगि[7] मैं न जांनूं।
ग्यांन ध्यांन तेरौ, सत्य सतिम्रिद परपन मन सा मल।
मन क्रम बचन जंमनिका, ग्यान बैराग दिढ़ भगति नाहीं।
मलिन मति रैदास, निखल सेवा अभ्यास।
प्रेम बिन प्रीति सकल संसै न जांहीं।। 4।।

75

।। राग धनाश्री ।।

मैं का जांनूं देव मैं का जांनूं।
मन माया के हाथि बिकांनूं।। टेक।।
चंचल मनवां चहु दिसि धावै; जिभ्या इंद्री हाथि न आवै[1]।
तुम तौ आहि जगत गुर स्वांमीं, हम कहियत कलिजुग के कांमी।। 1।।
लोक बेद मेरे सुकृत बड़ाई, लोक लीक मोपैं तजी न जाई।
इन मिलि मेरौ मन जु बिगार्‌यौ, दिन दिन हरि जी सूँ अंतर पार्‌यौ।। 2।।
सनक सनंदन महा मुनि ग्यांनी, सुख नारद ब्यास इहै बखांनीं।
गावत निगम उमांपति स्वांमीं, सेस सहंस मुख कीरति गांमीं।। 3।।
जहाँ जहाँ जाऊँ तहाँ दुख की रासी, जौ न पतियाइ साध[2] है साखी।
जमदूतनि बहु बिधि करि मार्‌यौ, तऊ निलज अजहूँ नहीं हार्‌यौ।। 4।।
हरि पद बिमुख आस नहीं छूटै, ताथैं त्रिसनां दिन दिन लूटै।
बहु[3] बिधि करम लीयैं भटकावै, तुमहि दोस हरि कौं न लगावै।। 5।।
केवल रांम नांम नहीं लीया। संतुति बिषै[4] स्वादि चित दीया।
कहै रैदास कहाँ लग कहिये, बिन जग नाथ सदा सुख सहियै।। 6।।

---

6. कहिये, 7. सरबंगी।
पाठांतर 75—1. पाँचो इन्द्री थिर न रहावै, 2. साधु, 3. बहुत, 4. संतति विषय।
टिप्पणी —यह पद 'राग जैतसरी' में बदली हुई भाषा और चरण-लोप के साथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में इस प्रकार दिया हुआ है—
नाथ कछूअ न जानउ। मनु माइया कै हाथि बिकानउ।। 1।। रहाउ।।
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी। हम कहीअत कलिजुग के कामी।। 1।।
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ। पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ।। 2।।
जत देखउ तत दुख की रासी। अजौं न पत्याइ निगम भए साखी।। 3।।
गोतम नारि उमापति स्वामी। सीसु धरनि सहस भग गांमी।। 4।।
इन दूतन खलु [illegible] ।। 5।।
कहि रविदास कहा कैसे कीजै। बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै।। 6।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

76

।। राग धनाश्री ।।

त्राहि त्राहि त्रिभवन पति पावन[1]।
अतिसै सूल सकल बलि जांवन।। टेक।।
कांम क्रोध लंपट मन मोर, कैसें भजन करौं रांम तोर।।1।।
विषम विष्याधि बिहंडनकारी[2], असरन सरन सरन भौ हारी।।2।।
देव देव दरबार दुवारै, रांम रांम रैदास पुकारै।।3।।

77

।। राग धनाश्री ।।

जन कूँ तारि तारि तारि तारि बाप रमइया।
कठन फंध[1] पर्‍यौ पंच जमइया।। टेक।।
तुम बिन देव सकल मुनि ढूँढ़े, कहूँ न पायौ जम पासि छुड़इया।।1।।
हमसे दीन, दयाल न तुमसे, चरन सरन रैदास चमइया[2]।।2।।

78

।। राग धनाश्री ।।

हउ बलि बलि जाउ रमईया कारने।
कारन कवन अबोल।।टेक।।
हम सरि दीनु दइआलु न तुमसरि। अब पतीआरु किआ कीजै।
बचनी तोर मोर मनु मानैं। जन कउ पूरनु दीजै।।1।।
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ, इहु जनमु तुम्हरे लेखे।
कहि रविदास अस लगि जीवउ। चिर भइओ दरसनु देखे।।2।।

पाठांतर 76—1. त्रिभुवन पति पावन, 2. विषय बिहंगम दुन्द नकारी।
पाठांतर 77—1. फंद, 2. समइया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

79

।। राग धनाश्री ।।

नामु तेरो आरती भजनु[1] मुरारे।
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पसारे[2]।। टेक।।
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिड़का रे।
नामु तेरा अंमुला[3] नामु तेरो चंदनो, घसि जपे नामु ले तुझहि क उचारे।।1।।
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे।
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगला[4] रे।।2।।
नामु तेरो तागा[5] नामु फूल माला, भार अठारह सगल[6] जूठा रे[7]।
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोला रे।।3।।
दसअठा[8] अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल[9] संसारे।
कहै रविदासु नाम तेरो आरती सतिनामु[10] है हरि भोग तुहारे।।4।।

80

।। राग धनाश्री ।।

अहो देव तेरी अमित महिमां, महादैवी माया।
मनुज दनुज बन दहन, कलि विष कलि किरत सबै समय समंन।।
निरबांन पद भुवन, नांम बिघनोघ पवन पात।। टेक।।
गरग उत्तम बांमदेव, विस्वामित्र ब्यास जमदंग्नि श्रिंगी ऋषि दुर्बासा।
मारकंडेय बालमीक भ्रिगु अंगिरा, कपिल बगदालिम सुकमातंम न्यासा।।1।।
अत्रिय अष्टाब्रक गुर गंजानन, अगस्ति पुलस्ति पारासुर सिव विधाता।
रिष जड़ भरथ सऊ भरिष, चिवनि बसिष्टि जिह्वनि ज्यागबलिक तव ध्यांनि राता।।2।।
ध्रू अंबरीक प्रहलाद नारद, बिदुर द्रोवणि अक्रूर पांडव सुदांमां।
भीषम उधव बभीषन चंद्रहास, बलि कलि भक्ति जुक्ति जयदेव नांमां।।3।।
गरुड़ हनूमांनु मांन जनकात्मजा, जय बिजय द्रोपदी गिरि सुता श्री प्रचेता।
रुकमांगद अंगद बसदेव देवकी, अवर अमिनत भक्त कहूँ केता।।4।।

पाठांतर 79—1. नाम तुम्हारो आरत भजन, 2. सकल पसारे, 3. अमिला, 4. सगरा, 5. धागा, 6. सहस, 7. जुहारै, 8. अष्टादस, 9. सकल, 10. अंतरगति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे देव सेष सनकादि श्रुति भागवत, भारती स्तवत अनिवरत गुणर्दुबगेवं।
अकल अबिछन ब्यापक ब्रह्ममेक रस सुध चैतंनि पूरन मनेवं।।5।।
सरगुण निरगुण निरामय निरबिकार, हरि अज निरंजन बिमल अप्रमेवं।
प्रमात्मां प्रक्रिति पर प्रमुचित, सचिदानंद गुर ग्यांन मेवं।।6।।
हे देव पवन पावक अवनि, जलधि जलधर तरंनि।
काल जाम मिृति ग्रह ब्याध्य बाधा, गज भुजंग भुवपाल।
ससि सक्र दिगपाल, आग्या अनुगत न मुचत मृजादा।।7।।
अभय बर ब्रिद प्रतंग्या सति संकल्प, हरि दुष्ट तारंन चरंन सरंन तेरैं।
दास रैदास यह काल ब्याकुल, त्राहि त्राहि अवर अवलंबन नहीं मेरैं।।8।।

मूल पाठ 80 दादू द्वारा की प्रति, 'क' व 'ख'।। राग धनाश्री।।
दादू द्वारा, बसना 16 पांडुलिपि 'ख'
अहो देव तेरी महिमां महा दैवी माया मनुज दंनुज बन दहन।
नाम बिघनोघ अघ पवन पातं।। टेक।।
अहो देव गरग गौत्म बामदेव, विश्वामित्र ब्यास यमदग्नि।
श्रृंगी ऋषि दुरबासा, मारकंडेव, बालमींक भृंग अंगिराद् कपिल।
वगदालम। दालिभ् भसुधू। मात्सन्यासा।। 1।।
अत्रे अष्टावकर, गुरगजानंद, अगस्त, डौलस्ति।
पाराश्वर शिव विधाता, ऋषि जडभरथ।
सुभ ऋषि चिमनि वसिष्ठ जिंहिनि जाज्ञवलक तव ध्यांन राता।। 2।।
अहो देव धू अंबरीष प्रह्लाद नारद, बिदुर, दुरुबन।
अक्रूर पांडव, सुदामा, भीषम उधव वभीषन।
चन्द्रहासि बलि कलि, भगति जुगति जैदेव नांमां।। 3।।
गरुड़ हणवंत जनक आत्मजा जै बिजये द्रोपती ग्रिसुता श्री प्रचेता।
रुक्मांगद अंगद वसदेव देवकी और अगिणत भगत कहीं केता।। 4।।
अहो देव शेष सनकादिक सुरति, भागवत भारथी।
सतव्रत अनिव्रत गुण दरबज्ञेयं, अकल अवंछित ब्यापक ब्रह्ममेक।
रस सुधु चैतन्य पूरण मनेंयं। सरगुण निरगुण निरामयं।।
निरविकार नेय हरि अंजन निरंजन बिमल अप्रमेयं।।
तू प्रमांत्मां तू प्रकीरति अबगति सचिदानंद गुर ज्ञांन ज्ञेयं।। 5।।
अहो देव पवन पावक अवनि जलधि, जल धरा तरनि काल।
जम मृति ग्रहि ब्याधि बाधा, गज भुजंग भूपाला सिसि सक्रापति दिगपाल।।
आज्ञां न अनंम तन मुचते म्रजादा।। 6।।
अभै बर बृद तिसि कल्प, प्रतंज्ञा हरि दुष्ट तारण चरण सरण तेरैं।
दास रैदास यहु काल ब्याकुल भयौ, त्राहि त्राहि अवर आलंबन नहीं आंन मैरै।। 7।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

81

।। राग विलावल ।।

क्या तू सोवै जणि दिवांनां।
झूठा जीवनां सच करि जांनां।।टेक।।
जिनि जीव दिया सो रिजकअ बड़ावै[1], घट घट भीतरि रहट चलावै।
करि बंदिगी छाड़ि मैं मेरा, हिरदै क रांम संभालि सवेरा।।1।।
जो दिन आवै सौ दुख मैं जाई, कीजै कूच रह्यां सच नांहीं।
संग चल्या है हम भी चलनां, दूरि गवन सिर ऊपरि मरनां।।2।।
जो कुछ बोया लुनियें सोई[2], ता मैं फेर फार कछू न होई।
छाडेअं कूर भजै हरि चरनां, ताका मिटै जनम अरु मरनां।।3।।
आगैं पंथ खरा है झीनां[3], खांडै धार जिसा है पैंनां।
तिस ऊपरि मारग है तेरा, पंथी पंथ संवारि सवेरा।।4।।
क्या तैं खरच्या क्या तैं खाया, चल दरहाल दीवांनि बुलाया।
साहिब तोपैं लेखा लेसी, भीड़ पड़े तू भरि भरिदेसी।।5।।
जनम सिरांनां कीया पसारा[4], सांझ पड़ी चहु दिसि अंधियारा।
कहै रैदासा अग्यांन दिवांनां, अजहूँ न चेतै दुनी[5] फंध खांनां।।6।।

पाठांतर 81—1. मड़ावै, 2. जो बोईऐ लूनियैंगा सोई, 3. पंथ न संवारा, 4. नादांन, 5. दूनियां।
टिप्पणी —1. यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में 'राग सूही' के अंतर्गत इस प्रकार दिया हुआ है—
जे दिन आवहि सो दिन जाही। करना कूचु रहनु थिरु नाहीं।
संगु चलत है हम भी चलना। दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना।। 1।।
किआ तू सोइआ जागु इआना। तै जीवनु जगि सचु करि जाना।। 1।। रहाउ।।
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै। सभ घट भीतरि हाटु चलावै।।
करि बंदिगी छाड़ि मै मेरा। हिरदै नामु सम्हारि सवेरा।। 2।।
जनमु सिरानो पंथु न सदारा। सांझ परी दह दिस अंधियारा।
करि रविदास निदाने दिवाने। चेतसि नाही दुनीआ फनखाने।। 3।।
2. हस्तलेख 1059 तथा र० की बानी में यह पद 'राग विलावल' में ही दिया हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

82

।। राग विलावल ।।

खांलिक सकिसता मैं तेरा[1]।
दे दीदार उमेदगार बेकरार जीव मेरा।।टेक।।
अवलि आख्यर इलल[2] आदंम, मौज फरेस्ता बंदा।
जिसकी पनह पीर पैकंबर, मैं गरीब क्या गंदा ।।1।।
तू हाजिरां हजूर जोग एक, अवर नहीं दूजा।
जिसकै इसक आसिरा नांहीं, क्या निवाज[3] क्या पूजा।।2।।
नाली दोज हनोज[4] बेबखत, कमि खिजमतिगार तुम्हारा।
दरमादा दरि ज्वाब न पावै, कहै रैदास बिचारा।।3।।

83

।। राग विलावल ।।

जो मोहि बेदन[1] का सजि आखूँ[2]।
हरि बिन जीव न रहै[3] कैसें करि राखूँ।।टेक।।
जीव तरसै इक दंग बसेरा, करहु संभाल न सुरि जन[4] मोरा।
बिरह तपै तनि अधिक जरावै, नींदड़ी न आवै भोजन नहीं भावै।।1।।
सखी सहेली ग्रब गहेली, पीव की बात न सुनहु सहेली।
मैं रे दुहागनि अधिक रंजानीं[5], गया सजोबन साध न मांनीं।।2।।
तू दांनां सांई साहिब मेरा, खिजमतिगार बंदा मैं तेरा।
कहै रैदास अंदेसा एही, बिन दरसन क्यूँ जीवैं हो सनेही।।3।।

पाठांतर 82–1. तोर, 2. आखर इलाह, इलम, 3. निमाज, 4. हम्नोज।
टिप्पणी –पहली पंक्ति का पाठ पृथक्-पृथक् मिलता है :
(अ) खलिक सीखसता मैं तोर। (ह० 1059)
(आ) खालिक सिकस्ता मैं तेरा। (रै० बा० 60/28)
पाठांतर 83–1. वेदनां हो, 2. कासनि सजि आखूँ, 3. जे न रहै, 4. मुनि, 5. अधि कर जानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

84

।। राग विलावल ।।

ताथैं पतित नहीं को अपांवन। हरि तजि आंनहि ध्यावै रे।
हम अपूजि पूजि भये हरि थैं, नांउं अनूपम गावै रे।।टेक।।
अष्टादस ब्याकरन बखांनै, तीनि काल षट जीता रे।
प्रेम भगति अंतरगति नांहीं, ताथैं धानुक नीका रे।।1।।
ताथैं भलौ स्वांन कौ सत्रु, हरि चरनां चित लावै रे।
मूंवां मुकति बैकुंठां बासा, जीवत इहाँ जस पावै रे।।2।।
हम अपराधी नीच घरि जनमे, कुटंब लोग करैं हासी रे।
कहै रैदास नाम जपि रसनीं, काटै जंम की पासी रे।।3।।

पाठांतर 84–1. इस पद के पाठांतरों में काफी अंतर है। यहाँ दो भिन्न पाठ दिए जा रहे हैं–
वह तौ पतितन ही को पावन माधौ, हरि तजि और न ध्यावो रे।
हम अपूजि दूजि भए हरि सूं, नाव अनूंपम पाया रे।। टेक ।।
अष्टादस व्याकरण बखाणैं, तीन्यि काल षट जीत्या रे।
प्रेम प्रीति अंतरगति नांही, ताथैं धाणकं नीका रे।। 1।।
ताथैं भलौ स्वानं कौ भछिक, हरि चरणैं चितलवै रे।
मुवां मूकति वैकूंठवासा, जीव्यत ईहाँ जस पावै रे।। 2।।
हम अपराधी नीच कूलि जनमें, लोग कटूंब करै हासी रे।
कहै रैदास राम जपि रसना, काटे जम की पासी रे।। 3।।
(रज्जब, सरबंगी, संत साहईक अंग, पृ॰ 17)

2. यह पद बदली हुई भाषा और शब्दांतर के साथ 'रैदास की बानी' में इस प्रकार मिलता है–
हरि बिन नहिं कोइ पतित पावन, आनहिं ध्यावे रे।
हम अपूज्य पूज्य भये हरि ते, नाम अनूपम गावे रे।। टेक ।।
अष्टादस ब्याकरन बखानैं, तीन काल षट जीता रे।
प्रेम भगति अंतरगति नाहीं, ता ते धानुक नीका रे।। 1।।
ता ते भलो स्वान को सत्रु, हरि चरनन चित लावै रे।
मुआ मुक्त बैकुंठ बास, जिवत यहाँ जस पावै रे।। 2।।
हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटुम्ब लोक करै हाँसी रे।
कह रैदास राम जपु रसना, कटै जनम की फाँसी रे।। 3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

85

।। राग विलावल ।।

तू जानत मैं किछु नहीं भव खंडन राम।
सगल जीअ सरनागति प्रभ पूरन काम।।टेक।।
दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी।
असटदसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी।।1।।
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारू।
ऊँच नीच तुमते तरे आलजु संसारू।।2।।
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करी जै।
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै।।3।।

86

।। राग विलावल ।।

जिह कुल साधु बैसनौ होइ।
बरन अबरन रंकु नहीं ईसरू बिमल बासु जानी ऐ जगि सोइ।।टेक।।
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ।
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ।।1।।
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ।
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ।।2।।
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ।।3।।

87

।। राग विलावल ।।

गोबिंदे तुम्हारे से समाधि लागी।
उर भुअंग भस्म अंग संतत बैरागी।।टेक।।
जाके तीन नैन अमृत बैन, सीस जटाधारी, कोटि कलप ध्यान अलप, मदन अंतकारी।।1।।
जाके लील बरन अकल ब्रह्म, गले रुण्डमाला, प्रेम मगन फिरता नगन, संग सखा बाला।।2।।
अस महेश बिकट भेस, अजहूँ दरस आसा, कैसे राम मिलौ तोहि, गावै रैदासा।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

88

।। राग विलावल ।।

नहीं बिश्रांम लहूँ धरनींधर।
जाके सुर नर संत सरन अभिअंतर।।टेक।।
जहाँ जहाँ गयौ, तहाँ जनम काछै, तृबिधि[1] ताप तृ भुवनपति[2] पाछै।।1।।
भये अति छीन खेद माया बस, जस तिन ताप[3] पर नगरि हतै तस।।2।।
द्वारैं न दसा बिकट बिष कारंन[4], भूलि पर्‌यौ मन या बिष्या[5] बन।।3।।
कहै रैदास सुमिरौ बड़ राजा, काटि दिये जन[6] साहिब लाजा।।4।।

89

।। राग भैरूँ (भैरव) ।।

भेष लियो पै भेद न जान्यो।
अमृत लेई विषै सो मान्यो।।टेक।।
काम क्रोध में जनम गँवायो, साधु सँगति मिलि राम न गायो।।1।।
तिलक दियो पै तपनि न जाई, माला पहिरे घनेरी लाई।।2।।
कह रैदास परम जो पाऊँ, देव निरंजन सत कर ध्याऊँ।।3।।

90

।। राग भैरूँ ।।

अैसा ध्यान धरूँ बनवारी।
मन पवन दिढ सुषमन नारी।।टेक।।
सो जप जपूँ जु बहुरि न जपनां, सो तप तपूं जु बहुरि न तपनां।
सो गुर करौं जु बहुरि न करनां, अैसे मरूं जैसे बहुरि न मरनां।।1।।
उलटी गंग जमुन मैं ल्याऊँ[1], बिन हीं जल संजम कै आंऊँ[2]।
लोचन भरि भरि ब्यंव[3] निहारूँ, जोति बिचारि न और बिचारूँ।।2।।
प्यंड परै जीव जिस घरि जाता, सबद अतीत अनाहद[4] राता।
जा परि कृपा[5] सोई भल जांनै, गूंगो सा कर कहा बखांनैं।।3।।
सुंनि मंडल मैं मेरा[6] बासा, ताथैं जीव मैं रहूँ उदासा।
कहै रैदास निरंजन[7] ध्याऊँ, जिस धरि जांऊँ (जब) बहुरि न आंऊँ।।4।।

पाठांतर 88—1. त्रिविध, 2. त्रिभुवन पति, 3. तात, 4. द्वारैं नन्द सा विकट विष व्यास, 5. भूमि पर्‌यो मन या बिखिआवन, 6. दियै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पाठांतर 90—1. लावौं, 2. पावौं, 3. बिंब, व्योम, 4. अनांहदि, 5. क्रीपा, 6. मेरो, 7. नीरंजन।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

91

।। राग भैरूँ ।।

अबिगत नाथ निरंजन देवा।
मैं का जांनूं तुम्हारी सेवा।।टेक।।
बांधू न बंधन छांऊँ न छाया, तुमहीं सेऊँ निरंजन राया।।1।।
चरन पताल सीस असमांनां[1], सो ठाकुर[2] कैसें संपटि[3] समांनां।।2।।
सिव सनिकादिक अंत न पाया, खोजत ब्रह्मा जनम गवाया।।3।।
तोड़ूँ न पाती पूजौं न देवा, सहज समाधि करौं हरि सेवा[4]।।4।।
नख प्रसेद जाकै सुरसुरी धारा, रोमावली अठारह भारा।।5।।
चारि बेद जाकै सुमृत सासा, भगति हेत गावै रैदासा।।6।।

92

।। राग टोड़ी ।।

पांवन जस माधो तोरा।
तुम्ह दारन[1] अध मोचन मोरा।।टेक।।
कीरति तेरी पाप बिनासै, लोक बेद यूँ गावै।
जो हम पाप करत नहीं भूधर, तौ तू कहा नसावै।।1।।
जब लग अंग पंक नहीं परसै, तौ जल[2] कहा पखालै।
मन मलीन बिषिया रंस लंपट, तौ हरि नांउ संभालै।।2।।
जौ हम बिमल हिरदै चित अंतरि, दोस कवन परि धरि हौ।
कहै रैदास प्रभु तुम्ह दयाल हौ, अबंध मुकति कब करि हौ।।3।।

पाठांतर 91—1. जाके पाइ पताल मस्तक असमांना, 2. सो क्यों, 3. संपुट, 4. लगाऊं सेवा।
पाठांतर 92—1. दारुन, 2. लग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

93

।। राग गुंड ।।

आज नां द्यौस नां ल्यौ बलिहारा[1]।
मेरे ग्रिह[2] आया राजा रांम जी का प्यारा।।टेक।।
आंगण बठाड़[3] भवन भयौ पांवन, हरिजन बैठे हरि जस गावन।।1।।
करूँ डंडौत[4] चरन पखालूँ[5], तन मन धंन उन ऊपरि वारौं[6]।।2।।
कथा कहै अरु अरथ बिचारै, आपन तिरैं और कूँ तारैं[7]।।3।।
कहै रैदास मिले[8] निज दास, जनम जनम के कटे[9] पास।।4।।

94

।। राग जैतश्री ।।

सब कछु करत न कहु कछु कैसें।
गुन बिधि बहुत रहत ससि जैसें।।टेक।।
द्रपन गगन अनींल अलेप जस[1], गंध जलध प्रतिब्यंबं देखि तस।।1।।
सब आरंभ अकांम अनेहा, विधि नषेध कीयौ अनकेहा।।2।।
इहि पद कहत सुनत नहीं[2] आवै, कहै रैदास सुकृत[3] को पावै।।3।।

95

।। राग सारंग ।।

जग मैं बेद बैद मांनी जैं।
इनमैं और अंगद कछु औरै[1], कहौ कवन परिकीजै[2]।। टेक।।
भौ जल ब्याधि असाधिअ[3] प्रबल अति, परम पंथ न गही जै[4]।
पढ़ैं गुनैं कछू समझि न परई, अनभै पद न लही जै।।1।।
चखि बिहूंन कतार चलत हैं[5], तिनहूँ अंस भुज दीजै।
कहै रैदास बमेक[6] तत बिन, सब मिलि नरक परी जै।।2।।

पाठांतर 93—1. आज दिवस लेउँ बलिहारा, 2. गृह, 3. बंगला, 4. डंडवत, 5. पखारूँ, 6. वारूँ, 7. तारैं, 8. मिलैं, 9. काटै।
पाठांतर 94—1. दरपन गगन अनिल आलेप जस, 2. जेहि, 3. सुक्रित, सृकृति।
पाठांतर 95—1. यामैं और अगध कछू औरे, अकथ कछु और, 2. कहौ कूंण परिकीजै, 3. अगाधि, 4. रही, 5. चख बिहीन कर तारि चलत है, 6. बिमेकि, बिबेक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

96

।। राग कानड़ा ।।

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ।।टेक।।
गुरु की साटि ग्यांन का अखिर, बिसरै तौ सहज समाधि लगाऊँ।।1।।
प्रेम की पाटी सुरति की लेखनी करिहूं, ररौ ममौ लिखि आंक दिखांऊँ।।2।।
इहिं बिधि मुक्ति भये सनकादिक, रिदौ बिदारि प्रकास दिखांऊँ।।3।।
कागद कैवल मति मसि करि नृमल, बिन रसना निसदिन गुण गाऊँ।।4।।
कहै रैदास राम जपि भाई, संत साखि दे बहुरि न आऊँ।।5।।

97

।। राग कानड़ा ।।

माया मोहिला कान्ह[1]।
मैं जन सेवग[2] तोरा।।टेक।।
संसार परपंच मैं ब्याकुल परमांनंदा।
त्राहि त्राहि अनाथ नाथ गोब्यंदा।।1।।
रैदास बिनवैं कर जोरी।
अबिगत नाथ कवन गति मोरी।।2।।

98

।। राग केदारौ ।।

कहि[1] मन रांम नांम संभारि।
माया कै भ्रमि कहा भूलौ[2], जांहिगौ[3] कर झारि।।टेक।।
देख धूँ[4] इहाँ कौन तेरौ, सगा सुत नहीं नारि[5]।
तोरि तंग सब दूरि करि हैं, दैहिंगे तन जारि।।1।।
प्रान गयैं कहु कौंन तेरौ, देख सोचि बिचारि।
बहुरि इहि[6] कल काल मांही[7], जीति भावै हारि।।2।।
यहु माया सब थोथरी, भगति दिसि प्रतिपारि[8]।
कहि रैदास सत बचन गुर[9] के, सो जीय थैं न बिसारि[10]।।3।।

पाठांतर 97—1. कान्हा, 2. सेवक।
पाठांतर 98—1. कहु, भजि संभार, 2. भूल्यो, 3. जाहुगे, 4. धौं, 5. तोर उतंग सब दूरि करि हैं, देहिंगे तन जारि, 6. येहि, 7. नाहीं, बहूरि अहि कलि काल नाहीं, 8. प्रतिहारि, भगत को प्रीति पार, 9. गुरु, 10. जिवतें, जीसवैं न टार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

99

।। राग केदारौ ।।

हरि कौ टाँडौ लादे जाइ रे।
मैं बनिजारौ रांम कौ।।
रांम नांम धंन पायौ, ताथैं सहजि करौं ब्यौपार रे।।टेक।।
औघट घाट घनो घनां रे, त्रिगुण बैल हमार।
रांम नांम हम लादियौ, ताथैं विष लाद्यौ संसार रे।।1।।
अनतहि धरती धन धर्‍यौ रे, अनतहि ढूँढ़न जाइ।
अनत कौ धर्‍यौ न पाइयैं, ताथैं चाल्यौ मूल गँवाइ रे।।2।।
रैनि गँवाई सोइ करि, द्यौस गँवायो खाइ।
हीरा यहु तन पाइ करि, कौड़ी बदलै जाइ रे।।3।।
साध संगति पूँजी भई रे, बस्त लई त्रिमोल।
सहजि बलदवा लादि करि, चहुँ दिसि टाँडो मेल रे।।4।।
जैसा रंग कसूंभं का रे, तैसा यहु संसार।
रमइया रंग मजीठ का, ताथैं भणैं रैदास बिचार रे।।5।।

टिप्पणी 99—यह पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में राग 'गौड़ी बैरागणि' के अंतर्गत इस प्रकार दिया हुआ है—
घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार।
रमई ए सिउ इक बेनती मेरी पूँजी राखु मुरारि।। 1।।
को बनजारो राम को मेरा टाँडा लादिआ जाइ रे।। 1।। रहाउ।।
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु।
मैं राम नाम धनु लादिआ विषु लादी संसारि।। 2।।
उर वार पार के दानीआ लिखि लेहु डाल पतालु।
मोहि जम डंडु न लागई तजी ले सरब जंजाल।। 3।।
जैसा रंग कसुंभ का तैसा इहु संसारू।
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार।। 4।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

100

।। राग केदारा ।।

प्रीति सधारन आव।
तेज सरूपी सकल सिरोमनि, अकल निरंजन राव।।टेक।।
पीव[1] संगि प्रेम कबहूं नहीं पायौ, कारनि कौंण[2] बिसारी।
चक को ध्यान दधिसुत कौं होत है, त्यूँ तुम्ह थैं मैं न्यारी।।1।।
भोर भयौ मोहिं इकटग जोवत, तलपत रजनी जाइ।
पिय बिन सेज क्यूँ सुख सोऊँ, बिरह बिथा तनि माइ।।2।।
दुहागनि सुहागनि कीजै, अपनैं अंग लगाई।
कहै रैदास प्रभु तुम्हरै बिछोहै, येक पल जुग भरि जाइ।।3।।

101

।। राग केदारा ।।

दरसन दीजै राम दरसन दीजै।
दरसन दीजै हो बिलंब न कीजै।।टेक।।
दरसन तोरा जीवनि मोरा, बिन दरसन का जीवै हो चकोरा।।1।।
माधौ सतगुर सब जग चेला, इब कै बिछुरै मिलन दुहेला।।2।।
तन धन जोबन झूठी आसा, सति सति भाखै जन रैदासा।।3।।

102

।। राग सूही ।।

सो कत[1] जानै पीर पराई।
जाकै अंतरि[2] दरदु न पाई।।टेक।।
सह की सार सुहागनी जानै। तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै।
तनु मनु देइ न अंतरु राखै[3]। अवरा देखि न सुनै अभाखै।।1।।
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी। जिनि नाह निरंतहि भगति न कीनी[4]।
पुरसलात का पंथु[5] दुहेला। संग न साथी गवनु इकेला[6]।।2।।
दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ। बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ।
कहि रविदास सरनि प्रभु तेरी। जिय जानहु तिउ करु गति मेरी।।3।।

पाठांतर 100—1. पिउ, 2. कवन।
पाठांतर 102—1. कहा, 2. दिल, 3. पिय हीना, 4. नेह निरति करि सेव न कीना, 5. स्याम प्रेम का, 6. चलन अकेला कोई संग न हेला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

103

।। राग सूही ।।

इहि तनु ऐसा जैसे घास की टाटी।
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी।।टेक।।
ऊँचे मंदर साल रसोई। एक घरी फुनि रहनु न होई।।1।।
भाई बंध कुटंब सहेरा। ओइ भी लागे काढु सवेरा।।2।।
घर की नारि उरहि तन लागी। उह तउ भूतु करि भागी।।3।।
कहि रविदास सभै जग लूटिआ। हम तउ एक राम कहि छूटिआ।।4।।

104

।। राग मारू ।।

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै।।टेक।।
जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तु हीं ढरै।
नीचह ऊँच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै।।1।।
नामदेव कबीर तिलोचनु सधना सैनु तरै।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहि हरि जीउ ते सभै सरै।।2।।

105

।। राग मारू ।।

हरि हरि हरि न जपसि रसना।
अवर सभ छाड़ि बचन रचना।।टेक।।
सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधैन बसि जाके रे।
चारि पदारथ असट महा सिधि नव निधि करतल ताकै।।1।।
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही।
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही।।2।।
सहज समाधि उपाधि रहत होइ उड़े भागि लिव लागी।
कहि रविदास उदास दास मतित जनम मरन भै भागी।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

106

।। राग बसंत ।।

तू कांइ गरबहि बावली।
जैसे भादउ खूंब राजु तू तिस ते खरी उतावली।।टेक।।
तुझहि सुझंता कछू नाहि। पहिरावा देखे ऊभि जाहि।
गरबवती का नाही ठाउ। तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ।।1।।
जैसे कुरंक नहीं पाइओ भेदु। तनि सुगंध ढूढ़ै प्रदेसु।
अप तन का जो करे बीचारू। तिसु नहीं जम कंकरू करे खुआरू।।2।।
पुत्र कलत्र का करहि अहंकारू। ठाकुर लेखा मगनहारू।
फेड़े का दुखु सहै जीउ। पाछे किसहि पुकारहि पीउ-पीउ।।3।।
साधू की जउ लेहि ओट। तेरे मिटहि पाप सभ कोटि-कोटि।
कहि रविदास जो जपै नामु। तिस जातु न जनमु न जोनि कामु।।4।।

107

।। राग मल्हार ।।

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास समतुलि नहीं आन कोऊ।
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ।।टेक।।
जा कै भागवतु लेखी ऐ अवरु नहीं पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा।
बिआस महि लेखी ऐ सनक महि पेखी ऐ नाम की नामना सपत दीपा।।1।।
जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे वधु करहि मानी अहि सेख सहीद पीरा।
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा।।2।।
जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा।
आचार सहित विप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासानुदासा।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

108

।। राग मल्हार ।।

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते।
साध संगति पाइ परम गते।।टेक।।
मैले कपरे कहा लउ धोवउ, आवैगी नीद कहा लगु सोवउ।।1।।
जोई जोई जोरिओ सोई-सोई फाटिओ।
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ।।2।।
कहु रविदास भइयो जब लेखो।
जोई जोई कीनो सोई-सोई देखिओ।।3।।

109

।। राग गौड़ ।।

ऐसे जानि जपो रे जीव।
जपि ल्यो राम न भरमो जीव।।टेक।।
गनिका थी किस करमा जोग, परपूरुष सो रमती भोग।।1।।
निसि बासर दुस्करम कमाई, राम कहत बैकुंठ जाई।।2।।
नामदेव कहिए जाति कै ओछ, जाको जस गावै लोक।।3।।
भगति हेत भगता के चले, अंकमाल ले बीठल मिले।।4।।
कोटि जग्य जो कोई करै, राम नाम सम तउ न निस्तरै।।5।।
निरगुन का गुन देखो आई, देही सहित कबीर सिधाई।।6।।
मोर कुचिल जाति कुचिल में बास, भगति हेतु हरिचरन निवास।।7।।
चारिउ बेद किया खंडौति, जन रैदास करै डंडौति।।8।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110

।। अन्य ।।

माधवे इहै सोच जिये मोर।
नाना भेष लीये हम देखे, कौंन भगति हित तोर।।टेक।।
कहियत रांम सुनियत फुनि रांम, अस देखें बहु लोई।
बिहबल बिकल सेऊ हम देखे, सीतल बिरला कोई।।1।।
श्रुति सुम्रिति वेद बिबिधि बिधि, पाप रहत जस सोई।
कहै रैदास पतित पांवन के मरम दुखित है सोई।।2।।

111

जो तुम गोपालहि नहिं गेहौ।
तो तुम का सुख में दुख उपजै, सुखहि कहाँ ते पैहौ।।टेक।।
भूल्यो नाथ सकल जग डहको, झूँठो भेख बनैहौ।
झूँठे ते साँचे तब होइ हौ, हरि की सरन जब ऐहौ।।1।।
कन रस बत रस और सबै रस, झूँठहि मूड़ डोलै हौ।
जब लगि तेल दिया में बाती, देखत ही बुझि जैहौ।।2।।
जो जन राम नांम रँग रातें, और रंग न सुहै हौ।
कह रैदास सुनो रे कृपा निधि, प्रान गये पछितैहौ।।3।।

112

धन्य हरि-भक्ति, त्रैलोक यशपावनी।
करौ सत्संग इह विमल यशगावनी।।टेक।।
वेद तें पुराण, पुराण तें भागवत्, भागवत् तें भक्ति प्रकट कीन्हीं।
भक्ति तें प्रेम, प्रेम तें लक्षणा, बिन सत्संग नहिं जात चीन्हीं।।1।।
गंगा पाप हरै, शशि ताप अरु कल्पतरु दीनता दूरि खोवै।
पाप अरु ताप सब तुच्छ मति दूरि करि, अभी की दृष्टि संत जोवै।।2।।
विष्नु भक्त जिते, चित्त पर धर तिते, मन बच कर्म करि विश्वासा।
संत धरणी धरि, कीरति जग बिस्तरी, प्रणत जन चरण रैदास दासा।।3।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113

अब कैसे छूटै, राम नाम रट लागी।।टेक।।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।।1।।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।।2।।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।।3।।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सुहागा।।4।।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।5।।

114

।। आरती ।।

आरती क्या लेकरि जोवै[1], सेवग[2] दास अचंभै होवै।
बांवन कंचन दीप घड़ावै, जड़ि बैरागर द्रिष्टी[3] न आवै।।1।।
कोटि भांण की सोभा रूमै[4], कहा आरती अगनिर धूमैं[5]।।2।।
पांच तत यहु नृगुणी माया, जी दीसै सो सकल उपाया।।3।।
कहै रैदास मैं देख्या माँही, सकल जोति रो समि नाँहीं।।4।।

115

।। आरती ।।

संत उतारैं आरती देव सिरोमणिये।
उर अंतरि तहां पैसि[1], बिन रसना भणीयें[2]।।टेक।।
मनसा मंदिर माहिं धूप धूपाइये।
प्रेम प्रीति की माल राम चढ़ाइये।।1।।
चंहु दिसि दिवला बालि[3] जगमग होइ रह्यौ ए।
जोति जोति सम जोति, जोतिहिं मिलि रह्यौ ए।।2।।
तन मन आत्म वारि सदा हरि गाइयै।
भणत जन रैदास, तुम्ह सरणाइयै।।3।।

पाठांतर 114—1. कहाँ लौ जोवै, 2. सेवक, 3. दीप धरावै, बैरागी दृष्टि, 4. कोटि भानुजा की सोभा रोमै, 5. होमै।
पाठांतर 115—1. पैसे, 2. भणिए, 3. बाति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

116

।। प्रह्लाद चरित ।।

शहर बड़ो मुल्तान, जहां एक कुलवंत राजा।
तहं जनमें प्रह्लाद, सरे सुर मुनि के काजा।।
पूछो विप्र बुलाइ कै, "जनम्यो राजकुमार।
या छौरे प्रह्लाद को, गुण तें पढ़ाइये"।।1।।
"मैं पढ़यों राम को नाम, और दूजा नहीं जानैं।
रर्रा मम्मा छांडि, तीसरो अंक न आनौं।।
कहा पढ़ावै बावरे, और सकल जंजार।
भौ सागर जम लोक ते, मोहि कौन उतारै पार"।।2।।
तब राजा परचरयौं रोस, अति मन में कीन्हों।
"मेरो बैरी राम सोइ तैं, चित धर लीन्हों।।
या पढ़िबो तू छांड़ि दै, कह्यौ हमारो मान।
टूक-टूक करि डारि हौं, जब रे सुणों हरि कान"।।3।।
"जो बरजूयौ सौ बार कह्या तेरो नहिं मानौं।
और बात कौ ख्याल मन कबहु न आनौं।।
पूर्ण ब्रह्म है सकल मैं, जाको यह विस्तार।
जाके राम सहाय हैं, कौण सकैगो मार"।।4।।
राज सभा बुलाइ बैठि एक मंत्र विचारो।
लै देखी परतीत जादू गिरवर ते डारो।।
सकल इति मिति लैं चले दीन्हों सैल चढ़ाइ।
जँह पंछी की गंध नहिं, तहं ते दियो गिराय।।5।।
वसुधा भई अधीन, दीन ह्वै दरसन कूँ आई।
मस्तक चरन छुआय लियो, ह्दै सों लाई।।
"कहा भक्त कौ त्रास है आदि अंत नहिं और।
अब की सेवा चूक है, तौ तीन लोक नहिं ठौर"।।6।।
मूरति अधिक अनूप देख माता मुख हेरै।
देखि करम के जोग आज प्रह्लादहिं टेरै।।
"हाथ जोर बिनती सुंण मेरे राजकुमार।
एक घड़ी हरि छोड़ दै, उबरै अब की बार"।।7।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माता मेरी लाग प्रीति अब तोरी नहिं टूटै।
अंतर रही समाय, अंत ही अंत न छूटै।।
माली सींचे केवड़ा, बिन सींचे कुम्हलाय।
एक घड़ी हरि छांड़ दूँ, तड़पि तड़पि मरि जाय"।।8।।
असुर भयो मति हीन जबै लौ पावक दीन्हों
अगति छाल पर जरे, तहां डिढ़ आसण कीन्हों।।
सकल देव रक्षा करें तहां पावक नहिं जाई।
बैठी सीत समंद में जानौं मीन-मकर जल न्हाई।।9।।
ना जाने प्रह्लाद कहा कछु चेटक कीन्हों।
असुर भयो मति-अंध जबै जल कूपहिं दीन्हों।।
सकल संत रिच्छा करें, ध्रुव नारद के साख।
जाके राम सहाय हैं, तहाँ भावै कहाँ राख।।10।।
हसत हसत प्रह्लाद तवै, चटसाल पधारे।
रर्रा मम्मा दोऊ अंक, औसर पर जाइ उचारे।।
लै परतीत परचै भयो, उपज्यो तन विश्वास।
और सकल संसार ते, राजा भयो उदास।।11।।
हाथ जोर प्रह्लाद जबै देवत में आये।
खोजत खोजत असुर वहाँ ही जाइ सताये।।
"जो तोहि राखै सो कहाँ, मैं तोहि छांड़्यो ताहि।"
कोमल बचन कुंवरि उठि बोले "यों पति खंभा मांहि।।12।।
करि गहि लीन्हो खड्ग बांधि सन्मुख हुई ठाड्यो।
"जो तेरो है राम यहाँ क्यों नाहि छुड़ावहि तोहि।।13।।
"राजा गरब न बोल, राम है गरब प्रहारी।
पूर्ण ब्रह्म है सकल में, वे ई मन के ईस।
मो मैं, तो मैं, खड्ग-खंभ में पूरि रहे जगदीस"।।14।।
"निसवासर नहीं मरे बुद्धि बल करों उपाई।
मारौ सोई मारि जो, रन सो बाहर माई।।
अंदर बाहर न मरै, क्यों कर आवै हाथ।
मति ब्रह्मा की का कह्यो, सो तो दीनानाथ"।।15।।
"नरसिंह उठे पाल जग, गरव सब ही मिटि जाई।
धरि धरि रहे समाय, ठौर खाली नहिं काई।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह पूरण सकल में, कहां बताऊं दूर।
मिल धरिवे को ठौर नहिं, रह्यौ सकल भरिपूर"।। 16।।
अस्त भयो है मान, उदै रजनीकर कीन्हा।
खम्भा में ते निकस, जांघ जोधा को लीन्हा।।
नख सो उदर बिडारिया, तिलक दिया महराज।
सप्त दीप नव खंड में, तीन लोक भई गाज।। 17।।
जहां जगत को भीर तहां सब कारज सारे।
हमसे अधम उधारि कीये नर कन से न्यारे।।
सुर मुनि गंधर्व, पढ़ै ब्रह्म निवास।
मनसा वाचा कर्मणा, गावै जन रैदास।। 18।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

117

।। साखी ।।

1. हरि सा साहिब[1] छाड़ि करि, करैं आंन की आस।
ते प्रांणीं दोजगि[2] पड़ैं[3], सति भाखै रैदास।।

2. जा देखें घिण[1] उपजै, नरक कुंड है बास।
प्रेम भगति तैं उधरै, प्रगट[2] जानै[3] रैदास।।

3. रैदास तूँ काँवछि[1] फली, तुझै न छीवैं कोइ।
तैं निज नांव न जाणियां भला कहाँ ते होइ[2]।।

4. रविदास जनम कारने, होत न कोऊ नीच।
नर को नीच करि डारि हैं, ओछे करम को कीच।।

5. जन्मजात कूँ छाड़ि कैं, करनी जान परधान।
इहै बेद को धरम है, करै रविदास बखान।।

6. बाम्हन खत्तरी बैस सूद, रविदास जनम ते नाहिं।
जो चाहे सुबरन कोउ, पावइ करमनि माँहि।।

7. रविदास ब्राह्मन मत पूजिए, जो होवै गुन हीन।
पूजिए चरन चाण्डाल के, जो होवै गुन परवीन।।

8. रैदास कहै जाकै हिंदै, रहै रैन दिन राम।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न व्यापै काम।।

9. जाति-पाँत के फेर में, उरझि रह्यौ सब लोग।
मनुष्यता को खात है, रविदास जात को रोग।।

10. जात जात में जात है, ज्यों केलन में पात।
रविदास न मानस जुड़ सकै, जौ लौ जात न जात।।

11. रविदास हमारो साँइया, राघव राम रहीम।
सब ही राम को रूप हैं, केसो कृष्न करीम।।

12. मस्जिद सो कुछ घिन नहीं, मंदिर सो नहिं प्यार।
दोऊ मँह अलह राम नहिं, कह रविदास विचार।।

13. एक नज़र सूं सबको देख, सृष्टि का सिरजनहारा।
सब घट व्यापक अलख निरंजन, कह रविदास विचारा।।

पाठांतर 117—1—1. हीरा, 2. ते नर जमपुर जाइसें, 3. जाहिंगे।
2—1. [illegible]
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
3—1. काँवच, 2. क्यूं र भलेरा होइ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

14. अंतरगति राचैं नहीं, बाहर कथैं[1] उदास।
ते नर जमपुर[2] जाहिंगे, सत भाखै रैदास।।
15. रविदास एकै ब्रह्म का, होइ रह्यौ सकल पसार।
एकै माटी सब कूँ सिरजै, एकै सब कूँ सिरजनहार।।
16. माथे तिलक हाथ जप माला, जग ठगने कूँ स्वाँग बनाया।
मारग छाँड़ि कुमारग डहके, साँची प्रीति बिन राम न पाया।।
17. दीन दुखी की सेव मँहि, लाग रह्यो रविदास।
निस बासर की सेव सों, प्रभु मिलन की आस।।
18. धुआँ तमन मा का धरा, धूम तपन को त्याग।
रविदास मिलि है मोख्धाम, सेवा ही तम आग।।
19. स्रम कउ ईसर जानि कै, जउ पूजै दिन रैंन।
रविदास तिन्हहिं संसार मँह, सदा मिलै सुख चैन।।
20. रविदास श्रम करि खाइहि, जो लौ पार बसाइ।
नेक कमाई जउ करहि, कबहु न निहफल जाइ।।
21. नेक कमाई जउ करहि, ग्रह तजि वन नहिं जाय।
रविदास हमारों राम राय, ग्रह मंह मिलि है आय।
22. जिह्वा सों ओंकार जप, हत्थन सो कर कार।
राम मिलहिं घर आइ के, कह रविदास विचार।।
23. सत, संतोष अरु सदाचार, जीवन को आधार।
रविदास भए नर देखते, जिन तियागे पंच विकार।।
24. पराधीनता पाप है, जान लेहु रे मीत।
रविदास दास पराधीन सो, कौन करे हैं प्रीत।।
25. हरि गुरु साथ समान चित, बिन आगम ततमूल।
इन बिचि अंतर जिमि परी, करवत सहज कबूल।।
26. ऐसो चाहो राज में, मिलै सभन को अन्न।
छोटे बड़ो सब सम बसै, रविदास रहे प्रसन्न।।
27. सब सुख पावै जासु तें, सो हरि जू को दास।
कोउ दुख पावै जासु तें, सो न दास रैदास।।

पाठांतर 117—14—1. बाहरि, 2. नरकहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28. पराधीन कौ दीन क्या, पराधीन बै दीन।
रविदास दास पराधीन को, सब ही समझै हीन।।

29. थोथी काया थोथी माया, थोथा हरि बिन जनम गँवाया।
थोथी पंडित थोथी बानी, थोथी हरि बिन सबै कहानी।।

30. रविदास राति न सोइया, दिवस न करिये स्वाद।
अह निसि हरि जी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिवाद।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट 1

शब्दकोश

अगमगवन	=	आवागमन
अघमोचन	=	पापों को दूर करना
अचरीअत	=	आचरण करना
अछत	=	अक्षत
अजातु	=	जिसकी कोई जाति न हो, हीन जाति
अजामिल	=	पुराण वर्णित वेश्या-प्रेमी तथा पातकी-ब्राह्मण, जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेने से सद्गति पा गया था
अनत	=	अन्यत्र
अनभै	=	निडर, अनुभव
अनभई	=	अनहोनी, अलौकिक
अनाहद	=	हठयोग के षट्चक्रों में से एक। नाद-योगियों को सुनाई देने वाली एक आंतरिक ध्वनि
अनिन	=	अनन्य
अबिगत	=	अज्ञेय, अविनाशी
अरंड	=	अंडी, रेंड
अरदास	=	प्रार्थना
अरुब्यंद, अरविन्द	=	कमल
अरोहन	=	आरोहण
अलह, अलख	=	निर्गुण
अवघट	=	दुर्गम
अवर	=	अपर, अन्य
अवलंबन	=	सहारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवलि	=	पंक्ति
असटदशा	=	अट्ठारह
असाधि	=	असाध्य, असाधु
अष्टादश व्याकरण	=	पाणिनी की अष्टाध्यायी
अहला	=	बहुत मीठा
आछोप	=	अछूत
आदम	=	मूल पुरुष
आपा	=	अहंकार
अयाना	=	अज्ञानी
आर	=	कील
आरत	=	आर्त्त
आलजु	=	निर्लज्ज
आसिरा	=	आश्रय
औघट	=	दुर्गम
इब	=	अब
इलूम	=	विद्यारहित
इलल	=	प्रतिज्ञा, वचन
उदकि	=	पानी
उदास	=	तटस्थ, खिन्न, विरक्त
उभै	=	उभय, दोनों
उभौ	=	खड़ा, स्थिर
उश्न	=	उष्ण, गर्म
ओपम	=	उपमा
औसांण	=	अवसान
कंकरु	=	किंकर, दास, दूत
कुंचर	=	कुंजर, हाथी
कतेब	=	पुस्तक, ग्रंथ
कदे	=	कभी
कम दिला	=	बड़े दिल वाला
कमषिज	=	कमसिन, अल्पवयस्क
क्रम	=	कर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता	=	कर्ता
कलाली	=	कलाल, शराब बेचने वाला
कवलापति	=	कमलापति, विष्णु
कमि	=	कमीना
कसूंभ	=	कुसुमी रंग, केसर का रंग
कागरा	=	कागज
काढु	=	निकालना
कार	=	सेवा, कार्य
कीरा	=	क्षुद्र कीड़ा
कुलखेति	=	कुरुक्षेत्र
कुभांती	=	निम्न जाति
कुटक	=	आभूषण
कुरंक, कुरंग	=	कस्तूरी हिरण
कैसौ	=	केशव
कौतिग	=	कौतुक
खतरी	=	क्षत्रिय
खतु	=	षट्
खलात, खलाअत	=	पाप कर्म, दुराचार
खलास	=	मुक्त
ख्वाब	=	स्वप्न
खस्त	=	बदहाल
खालिक	=	सृष्टिकर्ता, ईश्वर
खिआन	=	प्रसंग, आख्यान
खिजमतगार	=	सेवक
खिण	=	कभी
खीनी	=	क्षीण होना
खेदन	=	शोक करना
खूंब	=	खुंभी, कुकुरमुत्ता
गमि	=	दुःख, शोक, चिंता
गरक, ग़रक़	=	निमग्न, नष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रब	=	गर्व
गदमूल	=	रोग की जड़ को पैदा करता है
गाफिल	=	काहिल, आलसी
गनीं	=	धनी
गरीबनिवाजु	=	दीनदयालु
गारड़ी	=	गारुड़ी, विष-वैद्य
गालै	=	छल, फरेब, वाचालता
गिरह आसन	=	महल
गिल्यौ	=	एक मीठे फल का नाम
गुनहगार	=	पापी, दोषी
गुफ्तार	=	वाणी, बोली
गुमराह	=	पथ से भटका हुआ, भ्रमित
ग्रेह, ग्रह	=	गृह
गोब्यंदे	=	गोविंद, कृष्ण
गोस, गोश	=	एकांत
घिन	=	घृणा
चउतीस अखर	=	वाग्विलास, ज्ञान, बोध
चातृगा	=	चातक
चोभा, चोबा	=	खंभा
छीपा	=	निम्न जाति, छपाई का काम करने वाली जाति, दर्जी, नामदेव
छेदन	=	काटना
छोति	=	अशुद्ध, छूत
जजनि	=	यज्ञ
जलधि/जलध	=	बादल
जवाल	=	पतन, अवनति
जात	=	जाति
जात	=	जाती है
झाल	=	जाक
झीनां	=	धूमिल, जीना, सीढ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाँडा	=	व्यापार हेतु सामान से लदा बैलों का समूह
डूंगर	=	छोटी पहाड़ी
डंडौत	=	दंडवत, डंडवत्
डहकाया	=	वंचित होना, बरबाद होना
डहकै	=	भटकना
ढला	=	मृत
ढरै	=	प्रसन्न या द्रवित होना
ढिलडै	=	ढीला पड़ना
ढेढ	=	नीच
तकसीर, तक़्सीर	=	दोष, अपराध
तर तारि	=	ताड़ी का वृक्ष
ताड़न	=	मारना, प्रताड़ना
थंभि	=	सम्भाल
थोथरी	=	खोखली
दंग	=	आश्चर्य
ददि	=	श्वापद, हिंसक पशु
दरमा	=	द्वार, भय, विदारण
दरहाल	=	तुरंत
दादरि	=	पेशगी की रकम
दादिरा	=	दादुर, मेढक
दानां	=	बैलों से दांय कराकर गेहूँ निकालना
दीदार	=	दर्शन, साक्षात्कार
दुआदस शिला	=	द्वादश ज्योतिर्लिंग (सोमनाथ, किष्किंधा, पुरी, नर्मदा, देवगढ़, पूना, रामेश्वरम्, द्वारका, काशी, गोदावरी, अमरनाथ, औरंगाबाद।)
दुतर	=	दुस्तर
दुनी	=	संसार
दुइ पख हीनी	=	दोनों लोकों से वंचित
दुहागनि	=	दुर्भाग्यशाली
दुहेला	=	कठिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोजगि, दोज़ख	=	नरक, जहन्नुम
द्यौस	=	दिवस
नषेध	=	निषेध
नाली दोज	=	जूता सीने वाला, चमार
निवाज	=	निमाज
परचै पिंड	=	पिंड का भेद जानना
पनंग	=	शेषनाग
पांवन	=	पवित्र
पिपलक	=	चींटी
पुगी	=	पूरा करना
पुरबला	=	पूर्व जन्म के
पुरवन	=	पूरा करना
पुरसलात	=	यमदूत
पुरैन, पुरइन	=	कमल
पैज	=	प्रतिज्ञा
प्रसेद	=	प्रस्वेद, पसीना
फंद खाना	=	कपट जाल, माया जाल
फन खता	=	पापी, दोषी, बाजीगर
फन खाने	=	नश्वर
फरेस्ता, फरिश्ता	=	देवता
फुरमान	=	आज्ञा
फेड़े	=	कुकर्म
बंदा	=	भक्त
बंदिगी	=	भजन, प्रणाम
बउरे	=	पागल
बखान	=	वर्णन
बठाण	=	बैठक
बदबखत	=	दुर्भाग्यशाली
बधु	=	वध
बनजि	=	व्यापार
बनराइ	=	वन राजि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनिजारौ	=	वणिज या व्यापार करने वाला
बपुरा	=	बेचारा, दीन, अशक्त
बपुरौ	=	बेचारा, दीन, अशक्त
बहुरो	=	फिर, पुनः
बाइ	=	वायु
बरन-अबरन	=	वर्ण-अवर्ण, ऊँच-नीच
बिआस	=	व्यास। महाभारत के रचनाकार
बिगूचा	=	दुखी, उलझन, असमंजस
बिखिआत	=	विख्यात, प्रसिद्ध
बिखिया	=	विषय वासना
बिड़द	=	विरुद
बिलाइ	=	विलीन
बिसथरिओ	=	विस्तारित
बिहंडनकारी	=	विखंडनकारी, विघटनकर्ता
बीठल	=	शिवलिंग को सिर पर धारण किए हुए विष्णु का स्वरूप
बूड़ी	=	डूबी
बेअकल	=	मूर्ख, अज्ञानी
बेअदब	=	अविनयी, संस्काररहित, गुस्ताख
बेकरार	=	बेचैन
बेगमपुर	=	दुःखरहित नगर
बेनजरि	=	दृष्टिहीन, अज्ञानी
बेबखत	=	असमय, अकाल, दुर्भाग्यशाली
बेमिहर	=	निर्मम
बैसनो	=	विष्णु के अनुयायी, वैष्णव
भवंगा	=	भुजंग, सर्प
भांण	=	भाँड
भाटी	=	भट्टी
भिखत	=	प्रसिद्ध
भिस्त	=	बिहिश्त, स्वर्ग
भुइअंग	=	भुजंग, सर्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदर	=	महल
महओदधि–महाउदधि	=	महासागर
मखतूल	=	काला मुलायम रेशम
मजनु	=	मज्जन, स्नान
मजीठ	=	एकलता जिसकी जड़ों और डंठलों को उबालकर लाल रंग निकाला जाता है
मधुकीट भारी	=	मधु कैटभ को मारने वाले, विष्णु
महरम	=	वर्जित, निषिद्ध
महसूर	=	घेरे में पड़ा हुआ
माइआ	=	माया
मेषी	=	मादा भेड़
मोख्धाम	=	मोक्ष धाम
रजांना	=	जीविका
रजांनी	=	आशावादी
रमसि	=	रमना
राघौ	=	राघव, राम
रिजकअ, रिजकु	=	जीविका
रिजकु	=	रक्षा करना
रैणि	=	रजनी
लुभतु, लुब्धक	=	शिकारी
लुनिये	=	काटना
लूंण खड़ी	=	सुहागा
वारुनी, वारुणी	=	शराब
वोखदी	=	औषधि
श्रपनी	=	सर्पिणी
श्रबंगी	=	सर्वांगी
सुनि	=	शून्य, आकाश, हठयोग का गगन मंडल, सहस्रार
संसै	=	संशय
सगल, सकल	=	समस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपत, सप्त	=	सात
समंदि	=	समुद्र
समसरि	=	समान, समतुल्य
सरपर	=	निश्चय
सरबगि	=	सर्वज्ञ, सब कुछ जानने वाला
सरि	=	समान
सरोदिका	=	सरोवर आदि
सलल	=	सलिल, जल
स्यंघ	=	सिंह
सहीद	=	सय्यद
साइर	=	सागर
साइयाँ	=	स्वामी
साँढै	=	सँवारना
सारहीं	=	सारथि
साल रसोई	=	पाकशाला
सासा	=	संशय, श्वास
सीत	=	शीत
सुआन–श्वान	=	कुत्ता
सुठल	=	सुंदर
सुपच–श्वपच	=	चांडाल
सुबरन	=	स्वर्ण, सोना
सुमृति	=	स्मृति
सुरतर	=	कल्पवृक्ष
सुलतान	=	बादशाह
हद	=	सीमा
हरन	=	स्वर्ण
हनोज	=	अभी तक
हाँढै	=	भटकना
हाटिओ	=	बाजार
त्रायण	=	त्रासण, दुःख देना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट 2

कबीर-रैदास संवाद

रैदास संत कवि सेन

नहीं नहीं हो माधौ हित मोरा। मैं कैसे दरसण पाऊँ राम तोरा।।1।।

कबीर कहै जी

एक ही ब्रह्म एक मलमूत्रा, एक लोही एक गूदा।
पूरण ब्रह्म सकल घट व्यापक, कुंण बांभण कुंण सूदा।।2।।

रैदास कहै जी

कुमति तणां दल बादल फूटा, सुमति तणां प्रकासा।
हिरदै ग्यांन ध्यांन धरि देखौ, सति भाखै रैदासा।।3।।

कबीर कहै जी

ब्रह्म ग्यांन बिन ब्रह्म ध्यांन बिन्, हृदा सुध न होई।
पूरण ब्रह्म सकल घट व्यापक, और न दुतीया कोई।।4।।

रैदास कहै जी

तुम एक ही एक कहा कहौ स्वामी, दूजी प्रकृति कह जाई।
दूजी प्रकृत मैं रूप धर्‍या है, साधां एह बताई।।5।।

कबीर कहै जी

जेता फूल र तेती बासनां, जेता पवन र पांणी।
जे या उतपति प्रलै होती, तौ प्रकृति कहाँ समाणी।।6।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास कहै जी

प्रकृति समांणी परम पुरुष मैं, सो बनराबन मैं आया।
गोपिन के संगि ग्वालैनि के संगि, चुटकी दे दे गाया।।7।।

कबीर कहै जी

ना वै नाचे नां वै गावै, ना वै बेणि बजावै।
पुरष न नारि नाथ नारायण, वै औतार न आवै।।8।।

रैदास कहै जी

जे लीला औतार न होती, तौ जीव कहाँ निसतरते।
अंध-धंध की खबरि न होती, सब जीव नरक परते।।9।।

कबीर कहै जी

कहाँ नरक है, कहाँ सुरग है, कौ आया कौ देख्या।
हंस बटाऊ कीया पयांना, चलत न काहू पेख्या।।10।।

रैदास कहै जी

ठाढा देख्या कदम की छहियां, कंवल नाल कर लईयां।
पीताम्बर बैजंती माला, मोर मुकट सिर दईयां।।11।।

कबीर कहै जी

अष्ट कंवल दल हृदा भीतरि, जे यौं मन पतियाये।
त्रिकूटी संगम दिढ़ करि राखे, तौ आवागवण चुकावै।।12।।

रैदास कहै जी

तुम आवागमण ह्वैण द्यौ स्वामी, गांवण द्यौ गोपाला।
वाके रूप की छली बृज बनिता, मोहण नंद कै लाला।।13।।

कबीर कहै जी

कहाँ नंद अरु कहाँ के लाला, कहौ कहाँ तैं आया।
अलख पुरस अबिनासी पूरण, कहू क बिरलां पाया।।14।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास कहै जी

चहुँ दिस नंद रू चहुँ दिस लाला, चहूँ दिस बेदां गाया।
जहाँ-जहाँ पाप प्रगट्या स्वामी, तहाँ-तहाँ उठि ध्याया।।15।।

कबीर कहै जी

नहीं तहाँ पाप, पुनि भी नाहीं, नहीं तहाँ बेद र बाणी।
कहै कबीर सुनो रैदासा, जोति में जोति समाणी।।16।।

रैदास कहै जी

कौंण पचि मरै गुड़ी कै वोटै, कौंण गहै पियाला।
बड़ी लूटि मैं रतन खजाना, रांम कृष्ण औतारा।।17।।

कबीर कहै जी

जा कूँ तुम औतार कहत हौ, सो होत जम झौर्‍या।
अबिनासी का मरम न पाया, त्रिगुण नदी में बोर्‍या।।18।।

रैदास कहै जी

नृगुण, सुगुण एक गुसाँई, जा मैं रेख न रोपा।
सो हम देख्या बनराबन मैं, नंद घरां नंद गोपा।।19।।

कबीर कहै जी

कहाँ नंद अरु कहाँ जसौदा, कहौ कहाँ का जाया।
निराकार निरलेप निरंजन, नृगुण बेदां गाया।।20।।

कबीर कहै जी

वै हैं करता वै हैं भरता, ये केवल वे कृष्णां।
निराकार आकार एक ही, सो रटि ल्यौ हो रसनां।।21।।

कबीर कहै जी

कानी कथा न रीझूं राचूँ, साँची सिर पर राखूँ।
निराकार कूँ नवणि हमारी, अघट अमी रस चाखूँ।।22।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास कहै जी

सुणौं कबीर पीर मति वै ही, वै बलि काज संवारण।
कंस केस हिरणाकुस हतिया, भक्त प्रहलाद उधारण।।23।।

कबीर कहै जी

देह धरै ताकूँ नहीं धीजूं, अलख न औतरि आवै।
सुनि मंडल मैं जोति झिलमिलै, सो म्हारै मनि भावै।।24।।

रैदास कहै जी

भगत हेत उन देह धरी है, ब्रह्म बिड़द के काजा।
रावण कुल कुटुंब सब काट्यौ, दियौ बभीषण राजा।।25।।

कबीर कहै जी

वै मरै न मारै तिरे न तारै, वै अबिनासी ऐसा।
पुरष न नारि नाथ नारायण, नांऊँ भानां वैसा।।26।।

रैदास कहै जी

वै मरे न मारै तिरे न तारै, बानै कौंण बिड़द दे गाजै।
पुरुष न नारि नाथ नारांयण, कहौं किस विधि पाजै।।27।।

कबीर कहै जी

बिड़द बहुत है अकथ कथत है, जिन खोज्या तिन पाया।
घट घट मैं अघट अबिनासी, अलख निरंजन राया।।28।।

रैदास कहै जी

तुम भूला ब्रह्म हौं ग्यांनी, वा का मरम न पाया।
अंजन छौड़ि निरंजन गाया, मिथ्या जन्म गमाया।।29।।

कबीर कहै जी

गुरु भूलै तौ सिष समझावै, सिष भूलै गुर तारै।
कहै कबीर सुनौ रैदासा, समझि भजौ निरंकारै।।30।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास कहै जी

मैं तौ निगम नृति होइ बूड़्या, सो तौ सब यूँ भाखै।
बेद कतेब कौ कह्यौ न मानै, टेक आपणी राखै।।31।।

कबीर कहै जी

बेद कतेब खोजि सब देख्या, ऐ सब ऊली आसा।
यौ संसार नरक सब बूड़ौ, करि करि बेद बिसवासा।।32।।

रैदास कहै जी

घटत न बधत घणां नहीं थोड़ा, वै चंचल वै थीरा।
तरुन बृध बालपन वै ही, वै पाजी वै पीरा।।33।।

कबीर कहै जी

घटत न बधत घणां नहीं थोड़ा, वै निहचल निहकांमी।
अणहोता हू बाहरि नांही, यसा हमारा स्वांमी।।34।।

रैदास कहै जी

तुम साची कही सही सति वाही, सबलां सज्या लगाई।
सबल सिधार्‌या निबला तार्‌या, सुनौ कबीर गुर भाई।।35।।

कबीर कहै जी

राग दोष सुख दुख तैं न्यारा, वै नृवराति भ्रम न भौगी।
प्रवर्ति नहीं पुरष परमांनंद, वै जोति सरूपी जोगी।।36।।

रैदास कहै जी

साध बेद भागौत बतावै, सुर नर बहुत संधारा।
भगत-बछा भगता बसि हूवा, मति मेटौ औतारा।।37।।

कबीर कहै जी

ब्रह्मा बिष्णु सेस अरु संकर, सुर नर जाकी सेवा।
अनंत लोक के ग्वाल गुसांई, ऐसा हमारा देवा।।38।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैदास कहै जी

तेरी माइ तुरकणी बाप जुलाहा, पुत्र भया ब्रह्मग्यांनी।
बेद कतेब कौ कहयौ न मानैं, बात आपनी ठांनी।।39।।

कबीर कहै जी

तेरी माइ चमार बाप चमारा, कहा भक्ति तुम कीनी।
रांम नांम का मरम न जान्याँ, माथै बेठि तुम लीनी।।40।।

रैदास कहै जी

हंस चढ़या ब्रह्मा जी आया, साखी बेद बुलाया।
सति भक्ति रैदास करी है, कबीर भेद न पाया।।41।।

कबीर कहै जी

झूठा साखी झूठा ब्रह्मा, झूठा बेद पुरानां।
जा जा ब्रह्मा घरां आपनैं, तुम भी भेद न जानां।।42।।

× × × × × ×

सिंघ बांहणी बाद करत है, बोलत मधुरी बांनी।
सति भक्ति रैदास करी है, कबीरा भक्ति न जानी।।43।।

कबीर कहै जी

तू आठें सातें गला कटावै, घर-घर खाती डोलै।
जा जा जगत की जननी, कूड़ी साखि क्यू बोलै।।44।।

दुरगा कहै जी

भोपति अनड़ मैं छत्र नवाया, हू र कृष्ण घरि दासी।
बकत होइ बनां जाइ बैठा, दे गले मार्या पासी।।45।।

कबीर कहै जी

जो तुम मारया नरक गरास्या, जा कै माया माता।
कनक कांमनी दोऊ त्यागी, करि चै जौ ले लाता।।46।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुरगा कहै जी

तीन लोक मैं बसि करि राख्या, हू र सकल को माई।
सुर नर दांणां देव भिख्यारी, हूं र किनूं नहीं खाई।।47।।

कबीर कहै जी

तैं निगुरा बाख्या भेद बिन भूंदू, हम उबरया हारि लागी।
तौ सेयां जे गति मुक्ति है, तौ पीपै क्यूँ त्यागी।।48।।

× × × × × ×

बृष चढ़्या सिब बाद करत है, बोलत इंम्रत बाणी।
सति भक्ति रैदास करी है, कबीर भक्ति न जाणी।।49।।

कबीर कहै जी

तूँ तौ भूत प्रेत कौ दाता, कबि तैं भक्ति कमाई।
जा जा संकर घरां आपणैं, मिथ्या कांइ भ्रमाई।।50।।

× × × × × ×

चाल्या सिब जहाँ गया जी, जहाँ गरड़ गुपाला।
हम कौ भूत प्रेत करि थाप्या, जुलाहा भेद अपारा।।51।।

कबीर कहै जी

तुम तौ सिंभू अजूंनी बाद करत हौ, कहाँ चकबे वै भोला।
डाल पांत के पंछी बोलै, क्यूँ मेटत हौ मूला।।52।।

× × × × × ×

चहुँ दिस ऊभी दुरगा कोपै, महादेव खरा रिसांनां।
पलक मैं परलै करि रालां, चहुँ जुगां हम मांनां।।53।।

कबीर कहै जी

कहा तुम मारौ कहा तुम तारौ, को तेरा मार्या मरि है।
तुम तौ सिंभू अजूंनी बाद करत हौ, हम तुम सैं नहिं डरि हैं।।54।।

संकर कहै जी

दस औतार हूवा मो आगे, देह धरु नहीं छौड़ा।
तुम लघु मनिष कुचल कबीर, न करि हमारी होड़ा।।55।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर कहै जी

दस औतारां कारजि कीया, देह धरि धरम दिढ़ाया।
भसमासुर आगैं तूं भागौ, तब हरि आंणि छुड़ाया।।56।।

संकर कहै जी

तीन लोक समांनी मेरे, कहाँ सरभर उहाँ कीनी।
रांवन आइ पाइ जब लागौ, तब वा कूँ लंका दीनी।।57।।

कबीर कहै जी

तुम र भरौसै रांवन बूड़ौ, करि करि सेब तुमारी।
कुल के सब कुटुंब कटाए, भृंदु बुरी बिचारी।।58।।

संकर कहै जी

हूँ र अजूंनी रिधि सिधि कौ दाता, हूँ भगवंत भंडारी।
तू कुचल कमीण कबीरा, ना करि होड़ हमारी।।59।।

कबीर कहै जी

तुम परमोध्या तिरया न कोई, सुणि हो संकर स्वामी।
भक्ति-मुक्ति सू न्यारां रहि गया, हरि सूँ हुई हरामी।।60।।

रैदास कहै जी

कौंण तेरै ग्यांन है कौंण तेरे ध्यांन है, यौ मन बेद र बांणी।
कौंण ले कौंण आगे झूझै, या मति कौंण सूँ जांणी।।61।।

कबीर कहै जी

मन ही ग्यानं है मन ही ध्यांन है, यौ मन बेद र बाणी।
यौ मन ले मन आगैं झूझै, या गति मन सूँ जांणी।।62।।

रैदास कहै जी

सो तुम गावौ सो हूँ गाऊँ, तेरा ग्यांन बिचारूँ।
कहै रैदास कबीर गुर मेरा, भरम करम धोइ डारूँ।।63।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर कहै जी

भरम ही डारि करम ही डारि दे, डार दे जीव की दुबध्याई।
आत्मरांम करौ बिसरांमां, हम तुम दोन्यूँ गुरभाई।।64।।

रैदास कहै जी

माखन मथि रु तत दिखलाया, भरम करम सब जाई।
कहै रैदास पीर गुर मेरा, या मत तुम सूँ पाई।।65।।

कबीर कहै जी

नृगुण ब्रह्म सकल कौ दाता, सो सुमरौ चित लाई।
को है लघु दीरघ को नांही, हम तुम दोन्यूँ गुरभाई।।66।।
× × × × × ×
चल्या-चल्या विष्ण जी आया, जहाँ कबीर रैदासा।
उठौ कबीर सनमुख ह्वै देखौ, करौं कौंण की आसा।।67।।

कबीर कहै जी

कहै कबीर जी सुणो विष्णु जी, तुम हौ चतुर ववेकी।
हम तौ बुरा भला जन तेरा, या तत बस्त किन देखी।।68।।
× × × × × ×
गरड़ चढ़े गोपाल कहत है, सति भक्त म्हारै दोई।
सति भक्त हमारे दोई, सति कबीर धनि रैदासा।। गावैं सैनां सोई।।69।।

।। इति श्री सैंन बिरचित कबीर अरु रैदास संवाद संर्पण ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट 3

भक्तमाल[1]

मूल (नाभादास)

संदेह ग्रंथ खंडन निपुन वानी विमल रैदास की।
सदाचार श्रुति शास्त्र वचन अविरुद्ध उचार्‍यौ।।
नीर खीर विवरन वरन परम हंस निडर धार्‍यौ।।
भगवत कृपा प्रसाद परम गति इहि तन पाई।
राज सिंहासन बैठि ज्ञाति परतीति दिखाई।
वरणाश्रम अभिमान तजि पद रज वंदहि जास की।।
संदेह ग्रंथ खंडन निपुन बानी विमल रैदास की।। 59।।

टीका (प्रियादास)

रामानंद जू कौं सिष्य ब्रह्मचारी रहै एक गहैं वृति चूकटी की कहै तासों वानियौं। करौ अंगीकार सीधौ कही दस वीस वार बरषै प्रवध धार तामैं वापैं आनियौं।। भोग कौं लगावै प्रभु ध्यान नहीं आवै अरे कैसें करि ल्यावै जाय पूछी नीच मानियौं।। दियौ श्राप भारी वात सुनी न हमारी घट कुल मैं उतारी देह सोई याकौं जानियौं।। 255।।

माता दूध प्यावै याकौं छुयौ हूँ न भावै सुधि आवै सव पाछिली सु सेवा कौ प्रताप है। भई नभ वांनी रामानंद मन जांनी वडौ दंड दियौ मांनी वेगि आये चले आप है।। दुखी पित मात देखि धाय लपटाये पाइ कीजियै उपाय किये सिष्य गयौ पाप है। स्तनपान कियौ जियौ लियौ उन्हैं ईश मानि निपट अज्ञ, न फेरि भूले भयौ ताप है।। 256।।

वडेई रैदास हरिदासनि सों प्रीति करी। पिता न सुहाइ दई ठौर पिछवारहीं।।

---

1. हस्तलिखित प्रति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुतौ धन माल कम दियौ हू न हाल तिया पति सुख जाल अहो किये जव न्यारहीं।। गाँठै पग दीसी कहूँ वात न प्रकासी ल्यावै खाल करै जूती साधु संत कौ संभारही। डारि एक छांनि कियौ सेवा कौ स्थान रहै चौडे आप जान वांटि पावै हीयैं धार हीं।। 257।।

सहै अति कष्ट अंग हियैं सुख सील रंग आए हरि हरि प्यारे लियौ भक्त भेष धारि कैं।। कियौ वहु मान खान पांन सों प्रसन्न ह्वै कैं दीनौ कह्यौ पारस है राखियो संभारि कैं। मेरे धन रांम कछू पाथर न सरै कांम दांम में न चाहों, चाहों डारौं तन वारि कैं। रांपी एक सोनों की खौदियो करि कृपा राखौ। राखौं यहू छान का मांझ लेहौ जू निकारि कैं।। 258।।

आये फिरि स्याम मास तेरह बितीत भये प्रीति करि वोलै कहौ पारस की रीति कौं।। वाही ठौर लीजै मेरौ मन न पतीजै वह चाहौं जोई कीजै मैं तौ पावत हौं भात कौं।। लै कै उठि गये नये कौतक सो सुनीं पावैं सेवत मुहर पाँच नित ही प्रतीत कौं।। सेवा हूँ करत डर लागौ निस कह्यौ हरि छांड़ौं अर आपंनी औ राखौ मेरी जीति कौं।।259।।

मान लई बात नई ठौर लै बनाय, चाय संतनि वसाय हरि मंदिर चिनायौ है।। विविधि वितांन तान गनों जो प्रमान हौइ भोइ गई भक्ति पुरी जग जस गायौ है।। दरस आवैं लोग नाना विधि राग भोग रोग भयो विप्रन कौं तन सब छायौ है। वडेई खिलारी वे रहे हैं छान डारी।। करी घर पैं अटारी फेरि द्विजनि सिखायौ है।।260।।

प्रीति रस रास सौ रैदास हरि सेवंत हैं घर में दुराय लोक रंजना जु टारी हैं। प्रेरि दिये हृदै जाय द्विजानि पुकारि करी भरी सभा नृप आगैं कह्यौ मुख गारी हैं। जन को बुलाय समझाय न्याय प्रभु सौंपि कीनों जग जसु साधु लीला मनुहारी हैं। जिते प्रतिकूल में तौ माने अनकूल या तैं संतनि प्रभाव मनि कोठरी की तारी है।।261।।

वसत चितौर मांझ रानी एक झाली नाम। नाम विन कांन झाली आनि सिष्य भई है। संग हुते विप्र सुनि छिप्र तन आगि लागी। भागी मति नृप आगें भीर संग गई है। वैसेई सिंहासन पै आय कैं विराजे प्रभु। पढै वेद वानी पै न आये एह नई है।। पतित पावन नाम किजियै प्रगट आज। गायौ पद गोद आय से बैठे भक्ति लई है।।262।।

गई घर झाली पुनि वोलि कैं पठायें अहौं जैसें प्रतिपाली आव तैसे प्रतिपारियै।। आप हू पधारे उन बहु धन पट वारे विप्र सुनि पाव धारे सीधौ दै निवारियै।। करि कैं रसोई द्विज भोजन करन बैठे द्वै द्वै मध्य एक यौं रैदास कौं निहारियैं। देखि भई आखें दिन भाखें सिख लाखें भये स्वर्ण कौ जनेऊ काट्यौ त्वचा कीनी न्यारियै।।263।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट 4

।। रैदास परचई ।।

मध्यकालीन संतों से संबद्ध परचई-साहित्य अपना विशिष्ट महत्त्व रखता है। अनेक संतों की परचई उनके शिष्यों-प्रशिष्यों द्वारा लिखी गई हैं। रामानंद की शिष्य-परंपरा के लेखक अनंतदास ने कई परचई लिखीं, उनमें निम्न प्रमुख हैं—1. रंका-बंका की परचई, 2. धना की परचई, 3. भक्त रैदास की परचई, 4. कबीर जी की परचई, 5. नामदेव की परचई, 6. पीपा जी की परचई।

'पीपा जी की परचई' के अंत में अनंतदास ने अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए लिखा है—

श्री रामानंद के अनंतानंदा। सदा प्रगट ज्यों पूरण चंदा।।
ताके कृष्णदास अधिकारी। सब कोई जाने दूधाधारी।।
ताके अग्र आगरो प्रेमू। लै बैठे सुमिरन को नेमू।।
अग्र को शिष्य-विनोदी भाई। ताकी दास अनंत पै आई।।
ता परसाद परचई भाखी। सुनौ संत जन साची साखी।।

इस छंद के अनुसार अनंतदास रामानंद की शिष्य-प्रशिष्य परंपरा में 'भक्त-माल' के रचनाकार नाभादास के गुरु-भाई विनोद दास के शिष्य थे। इनका समय सत्रहवीं शती का पूर्वार्द्ध अर्थात् संवत् 1600 के आसपास माना जाता है।

प्रस्तुत परचई एक हस्तलिखित परचई-संग्रह से ली गई है जिसमें पीपा जी की परचई के अंत में उसका प्रतिलिपि काल इस प्रकार दिया हुआ है—"इति श्री पीपा जी की परचई संपूरण समाप्त। शुभ कल्याण भवतु संबत् 1726 वर्षे आसौज सुधि सकल पक्षि 2 गुरबार।" इस संग्रह के अंत में माधवदास का 'राम रासौ' दिया गया है जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है—"इति श्री माधवदास जी रो कहियौ राम रासौ समाप्त : शुभ भूयात् लेखक पाठकूयौ कल्यांणमस्तु संवत् 1750 वर्षे बैसांख मासे तिथौ दुतिया गुरवासु रोहणी नाम नक्षत्रे धर्ममूर्ति राम जी सुभस्थान लिवाली मधे इंद पुस्तग लिख्यौ : संत हरीदास लिखतं आत्म पठनार्थे बांचै तिनकौ राम राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंच्या जी।"

इससे स्पष्ट है कि संत हरिदास ने इस संग्रह को संवत् 1725 से 1750 के मध्य तैयार किया था। पीपा तथा रैदास की परचई उससे पूर्व लिखी जा चुकी थीं। हरिदास ने उनकी प्रतिलिपि तैयार की थी।

।। सिधि श्री प्रमातमनेन्म। श्री गुरबेन्म गणेसाय नमः ग्रंथ रैदास जी की परचई लिखतं।।

नगर बांनारसी ऊतिम गाऊँ। पाप न नीरौ आवै कांउ।
मूंवां न कोऊ नरकै जाई। संकर रांम सुनावै आई।।1।।
श्रुति-श्रुमृत का है अधिकारा। तहाँ रैदास लीया औतारा।
पूरब जनम बिप्र हूँ होता। मांस न छाड़्यौ निसदिन श्रोता।।2।।
तिन अपराधि नीच कुलि दीया। पहिला जनम चीन्हि तिनि लीया।
जाति चमार पिता अरु माई। साखित कै घरि जनम्यौ आई।।3।।
कलपत कलपत बेटा जाया। बड़े के भुवन अजाये आया।
मंगल गीत न कांमनि गावैं। दुख ते भये बाजे न बजावैं।।4।।
लोई बेद सु ले ले आवैं। जंत्र मंत्र वोखदी करावैं।
बालक मरत राखि दे कोई। हमारे जांन धनंतर सोई।।5।।
जो फुरमावै सो हम करि हैं। बहुत सौंज ले आगे धरि हैं।
अैसी भाँति भयै दिन चारी। अति अंदोह करै महतारी।।6।।
कुटंब सहत पिता दुख पावैं। रैदासहि निज मरिबौ भावै।
जीवत सौं मरिबा हैं नीका। हरि सौं बिमुख जीवन है फीका।।7।।
हरि बिसरे तै जे जन जीवै। जम की सजा सहै विष पीवै।
कहा दलिद्री कहा धनवंतू। कहाँ है दुर्बल कहाँ बलिवंतू।।8।।
कहा मूरिख कहा पंडित करई। राजा रंक न हरि बिन तरई।
निज मरिबौ रैदासा बिचारा। हरि करुनांमैं राखनहारा।।9।।
हरि जी कथा कही समझाई। जो पीछें तैं होती आई।
कृपावंत है कै दक्ष्या देहू। बालिक मरत राखि हरि लेहू।।10।।
अरध राति हुई आकास बांनी। तब रामानंदि मन मैं जानी।
चमरा के घर बेटा जाया। सो मेरा जन औतरि आया।।11।।
तब रामानंद कीया बिचारा। समुझायो सु सकल परिवारा।
जौ तुम भगत होइ रे भाई। तौ हरि बालक देइ जिवाई।।12।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब चमरा उठि लाग्यौ पाई। जो चावै सौ करौ गुसांई।
तब रांमांनंद बिलंब न कीनौं। माथै हाथ चमरा के दीनौं।।13।।
माला तिलक दे भद्र करायौ। पीछै ले भंजन सबै डराये।
सब ही कै मनि भया उल्हासू। अस्थन पांन करै रैदासू।।14।।
देहिं बधाई बाजे बाजे। घरि घरि मंगल कलस बिराजे।
अति आंनंद बधावो सबकैं। जीवन सुफल भयौ है अब कैं।।15।।

दोहा—जन्म कहत रैदास कौ। सुख पावै भगवंत।
करम के बंधन सब कटे। गावै दास अनंत।।1।।

इहि विधि हरि भगतन हितकारी। जुगि जुगि जन की बिपति निवारी।
दिन दिन बड़ौ भयौ रैदासू। दिन दिन हिरदै हरि कौ वासू।।1।।
बरष सात कौ भयौ है जब ही। नौधा भगति चलाई तब ही।
अरु भगतन की सेवा करई। सतगुरु कही सु सीख न टरई।।2।।
समां सात को चलि गइया। बहुत प्रीति केसौ सौं भइया।
बालपनां मैं कहते नीकौ। सब कुटंब ही लाग्यौ फीकौ।।3।।
बड़ौ भयौ तब न्यारौ कीयौ, बाँटे आयौ सो बाँटि न दीयौ।
राख्यौ बाखरि के पछिवारै। कछू न कह्यौ रैदास बिचारै।।4।।
सीधौ चांम मोलि लै आवै। ताकी पनहा अधिक बनावै।
टूटे फाटे जरबा जोरै।। मसकति करि काहू न निहोरै।।5।।
अैसें लाभ सहज मैं होई। करम अकरम न जानैं कोई।
न्यारै मंदिर भोग लगावै। तहाँ न कोई मंधिम आवै।।6।।
पूजा अरचा अधिक अचारू। जांनैं भक्ति रीति ब्यौहारू।
बरष सात अैसी बिधि गइया। कसणी बहुत सरीरहि सहिया।।7।।
तब हरि भगत रूप है को आयौ। जन रैदास बहुत मनिं भायौ।
आदर करि आसन बैठारे। दीन बचन कहि चरन पखारे।।8।।
धरी येक हरि कथा चलाई। ता पीछे जिवनार बनाई।
भोजन करि बैठा हरि जब ही। सुख दुख बात चलाई तब हीं।।9।।
कहि रैदास आपनौं मरमू। कैसें रहै तुम्हारौ धरमूं।
संपति कछू न देखौं नैनां। कैसें देह पावत है चैनां।।10।।
तब रैदास कहै समझाई। मेरे संपति राघौ राई।
कोटि लिछमी जाके चरनां। दुख दालिद्र न ताके सरनां।।11।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अैसी बात कही रैदासू। केसौ कै मनि भयौ उल्हासू।
सुनि रैदास बचन येक मेरौ। अब ही दालिद्र मारौं तेरौ।।12।।
बालपनां तै हूँ बैरागी। ग्यांन पाइ कैं माया त्यागी।
फिरत फिरत तेरे घरि आयो। काल्हि बाट मैं पारस पायो।।13।।
मेरे कांमि न आवै एहू। दया करैं मैं तुमकौ देहू।
ताकौ दोस न लागै कोई। दूनी भगति तुम्हारे होई।।14।।
अैसैं कंचन करि करि लेहु। मन मांनैं ताही कौं देहू।
ताकौ दोस न लागै कोई। दूनी भगति तुम्हारे होई।।15।।

दोहा—बचन सुनत भगवंत कौ, मौन रह्यौ रैदास।
कै सत टारन आइयौ, कै भगति करन कौ नांस।।2।।30।।

धरी येक रैदास न बोल्या। हरि गांठी तैं पारस खोल्या।
तू जिनि जानैं डहकै मोही। निहचै कीये देत हौं तोही।।1।।
ए देखौ पारस के चिहनां। सूई येक ले कीया सोना।
अैसौ सदा न होई आंनू। या मैं नाही जांन बिनानू।।2।।
तब रैदास बोलि बैनां। याहि न देखौ कबहू नैनां।
कनक कांमनी नींदत साधू। हाथ छीया लागै अपराधू।।3।।
जै कंचन तैं सीझै काजू। तौ कत राजा छाड़ैं राजू।
भिख्या मागैं भोजन कर ही। कनक कांमिनी तैं नित डरहीं।।4।।
छाजन भोजन डरपत लेही। जदपि दुख पावत्य है देही।
ताकौ संग्रह कैसें कीजै। सत छाड़े केतक दिन जीजै।।5।।
तब हरि जी बोलै सति भाऊ। कंचन दोस न दीजे काऊ।
कनक सु मंदिर है बैकूंठा। कंचन सोहै सुर के कंठा।।6।।
कंचन की द्वारिका बिराजै। कंचन सब देवनि कौं छाजैं।
कंचन भजन हरि की सेवा। कचंन दीयौ सुदामाहि देवा।।7।।
कंचन राम प्रीति करि लीजै। कंचन काढि महोछौ कीजै।
कंचन लै बैकूंठि बसावै। जै कंचन कौ भेद सु पावै।।8।।
कंचन खरचि पाप जौ कीजै। तौ कंचन कौ दोस न दीजै।
कंचन ले जै जूवां खेलै। तौ सहजै जनम नरक कौ पेलै।।9।।
कचंन ले कलाल के जाई। सुरा पांन पिया नरकि पराई।
कंचन दे आभख जौ खाही। तौ सहजैं नरकि आप ही जाही।।10।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंचन दे मानसहि मरावै। तौ गति मोख कहाँ तै पावै।
कंचन दे पर त्रिया सौं राचैं। सस्त्रहि मारत कोई न बाचैं।।11।।
कंचन की अकोड़ जे लीजै। अपराधी कौ आदर कीजै।
कंचन धरिये धरिनि दुराई। औरहि देइ न आपन खाई।।12।।
तौ कंचन कैसें निसतारै। देखत जनम आपनौ हारै।
अैसे बचन कहे हरि जब ही। जन रैदास बोलिया तब ही।।13।।
काहे हाथि हमारे धरहू। क्यूँ न महोछा तुमही करहू।
हमहि भया तुम उपरि भाऊ। अब रैदास तुम मन न डुलाऊ।।14।।

दोहा—नांही करे न बचिये, तूठौ कंवलाकंत।
सुख सागर हरि सरन है गावै दास अनंत।।3।।44।।

पारस ले पांवन परि धरियौ। तब रैदास पछौंड़ो परियौ।
बोले जन रैदास बिचारी। हूँ राखत हौं कानि तुम्हारी।।1।।
जै तुम टेक आपनी करहू। बसतर बाँधि छांनि मैं धरहू।
नांगे भूखें आवे काजा। लेहू छोड़ि न करहू बाजा।।2।।
घरि भीतरि डांडे की संधी। केसौ पारस धरियौ बांधी।
हंस देखत यू खरा लजाई। पीछैं कंचन खरचै खाई।।3।।
यहु बिचार करि केसौ गईयौ। बरस दिनां पारस कौं भईयौ।
जन रैदास न देख्यो काऊ। मांस तेरहै बहुरि आऊ।।4।।
काहे स्वामी काढ़ि न लीनां। कूण दोस पारस कौ दीनां।
जब रैदास कहै कर जोरै। मैं छाड्यौ पारस कैं भोरै।।5।।
पारस मेरे हरि कौ नांमूं। पाथर सौं मोहि नाहीं कांमूं।
हरि पारस कचंन की रासी। और एकल माया की पासी।।6।।
अंगीकार रैदासिन कीनौं। तब हरि अपनौ पारस लीनौं।
ले पारस रमिं चले मुरारी। बहुरि केसौ येक बुधि बिचारी।।7।।
सुपिनांतर मैं बीनती करई। मुहर पाँच संपट मैं धरई।।
लेहु कनक जिनि करहु कुभाऊ। पूजौ भक्त हिर्दै धरि भाऊ।।8।।
तब रैदास भया सुख भारी। मानौं बचन कहै जु मुरारी।
भोर भये देखै जागी। दीनीं संपति मैं कब माँगी।।9।।
तब तैं पंच पंच दिन पावै। ते सब काम महौछे लावै।
मंदिर महल कीनां बहुतेरा। तहाँ तहाँ भगतन का डेरा।।10।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै कथा कीरतन बारू। आंन कथा नाहीं पै सारू।
नगर के लोग दरसन कौं आवैं। तिन सौं बांभन खरे रिसावैं।।11।।
काहू कौ धन लह्यौ चमारा। खाइ न जानैं मूढ़ गँवारा।
ढचर करै लोगनि बौरावे। सुद्र सु अपनी पूजा लावै।।12।।
सीख दैन कौं नाहीं कोई। बहुत अनीति नग्र मैं होई।
मधिम कुल अरु मधिम धांमां। मधिम कुटंब अरु मधिम नांमां।।13।।
मधिम आप अरु मधिम कांम। सो क्यू पूजै सालिगराम।
बेद पुरांन कहै समझाई। सुद्र सिला नहिं छीवहि भाई।।14।।
अैसै बाभन कोप करंही। तब रैदासहि बरजन जांही।
जै तू रह्यौ नग्र महि चाहै। तौ तू जिनि काहू कौ बाहै।।15।।
सूध्यै सुमिरत रहु हरि नांमू। तू जिनि पूजै सालिगरांमू।
बरजै तिनहि नग्र कौ राजा। तिनकी बांभन करहि न लाजा।।16।।

दोहा—राजनीति मांनैं नहीं। भये अधिक अहंकारि।
बांभन बरज्या नां रहे। मरन कहैं दरबारि।।60।।

दुबे तिवारी चौबे आये। ब्यास आचारिज पाठिक धाये।
बाला बूढ़ा सबै सकेला। करै बाद रैदास अकेला।।1।।
बैठो जहाँ बघेलो राई। तिनकै राजनीति चलि आई।
सगरौ नग्र तमासै आयौ। दान कीये बिन कौतिग पायौ।।2।।
भौमिया लोग पंच मिलि बरजै। संक न मानैं बांभन गरजै।
तब रैदास बाहिरौ आयौ। राजा परिजा कै मनि भायौ।।3।।
बैठौ भोमि दुलीचा डारी। मानौं चन्द्रमा करी उजियारी।
आस्य पासि तारागन सोहै। भजन प्रताप बापुरौ कहै।।4।।
सीतल बचन कहै रैदासू। कून चूक मोहि देहि त्रासू।
बांभन बोलै सुनि रे सूद्रा। तैं क्यूँ धरम हमारा नींदा।।5।।
हम गुर पूजि आहि सबके रे। लोक बचन मानत हैं हमरे।
तू किन मानैं सीख हमारी। तोहि पाप लागत है भारी।।6।।
सालिगरामहिं लावहि हाथू। तब काँपत है श्री जू नाथू।
जल असनान करावत तब ही। सुरा पान जान्यौ ढार्‌यौ तब ही।।7।।
तुरसी चंदन अरपै फूला। ताका दोष पापहि कहिं तुला।
बाल भोग तैं ढारै आँसू। राज भोग मानौ लागै माँसू।।8।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धूप दीप आरती कै भाऊ। तातैं भलौ न मानैं काऊ।
सुरति सुमृति की राखौ रीती। साधू ज़न कै हारि न जीती।।9।।
अैसा धरम कहा लै करहू। जातैं नरक कुंड मैं परहू।
भजन तुम्हारो कहिये येहू। सब काहू कौं भजन देहू।।10।।
हरि सुमिरन हिरदै जिनि टारौं। कलपत पांचौ इन्द्री मारौ।
पर उपबाद करौ जिनि काऊ। हरषि हरषि हरि के गुन गाऊ।।11।।
इतने बचन हमारे मानौ। जो तुम भलौ आपनौ जानौ।
तब रैदास कहै समझाई। तुम सों भगति दूरि है भाई।।12।।
जूठा फल भीलरी खवाया। प्रीति जानि हरि के मन भाया।
तातैं पापहि हूँ न डरऊ। भाव सहित नाराइन गाऊँ।।13।।
बांभन बोलै सुनि रैदासा। तू जिनि करै मुकति की आसा।
त्रेता सुद्र तपस्या करई। ताके पातिग बांभन मरई।।14।।
सो रघुनाथ मार्‍यौ बानां। बांभन जीयौ सुद्र गयौ प्रांनां।
तप तीरथ की करहि न आसा। हम तौ सदा कृस्न के पासा।।15।।
ऊँच नीच की संक्या नांहीं। हरि ग्वालनि की जूठनि खांही।
ता जूठनि कौं ब्रह्मा आयौ। पाई नहीं कृष्न भरमायौ।।16।।
संतन कौ अैसो परसादू। हरि कृपा तैं करौ संबादू।
बेद भागवत बोलै साखी। दास अनंत कथा मैं राखी।।17।।

दोहा—भगति पियारी राम की। मरम न जानैं कोइ।
जे जानै ते उबरे। बरन बिबर्जित होइ।।5।।77।।

बांभन बोलत नैंक न डरहीं केसौ कांनि हमारी करही।
भिग्र रषीस्वर मारी लात। सोभा अधिक भई हरि गात।।1।।
परसरांम सब खत्री मारा। राज हमहि दीयौ इकबीस बारा।
अरु पांडौं के हीये न टरते। सहस अठासी भोजन करते।।2।।
तब रैदास कहै सुनि पांडे। लात मारि करि भये न चांडे।
जानैं नहीं राज की रीती। तातैं बहुरि भई बिपरीती।।3।।
सहस अठ्यासी सरयौ न काजा। सुपच कै सांचि पंचाइन बाजा।
तुम्हरे पूजै कौ फल येहू। सेवा करत नरक मैं देहू।।4।।
नघु राजा तुम नरकि पठायौ। दीयौ सराप कृष्न मुकतायौ।
फुनि दुरबासा गुरु तुम्हारा। हरि भगतन कै सरन उबारा।।5।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी सुनि बांभन परजरिया। जानौ बैसांदर घृत परिया।
सुरही सुकरी समि क्यूँ होई। दूध बिचारि खाइ सब कोई।।6।।
गई न बिगंधि गंग मैं मंछा। स्वान माजन क्यूँ होइ बंछा।
हंस काग कौ कैसी सारी। कंचन काच सु लेहु बिचारी।।7।।
खलि कपूर कौं अंतर होई। लोक बेद जानैं सब कोई।
यंद्रीजीत सुद्र जै होई। ताके पाव न पूजै कोई।।8।।
बांभन जो भिष्ट ह्वै जाई। तौऊ समानैं रानां राई।
इतनी सुनि रैदासा रिसानां। हरि परित्यागे राजा रानां।।9।।
जरजोधन कौ कीनौ त्यागू। लीयौ बिद्रु घरि सतवा सागू।
नाहिंन राम तुम्हारे बाटैं। सब कोइ ले सिर कै साटैं।।10।।
सालिगरामहिं आनिं बिराजै। लेहु बुलाइ न काहू साजै।
जासौं प्रीति जहाँ चलि जाई। अैसी मति रैदास उपाई।।11।।
बांभन कहै बेगि लै आऊ। जै तेरे मन मैं सति भाऊ।
तब रैदासहिं उपजी लाजा। स्यंघासन परि आनि बिराजा।।12।।
जो तुम सांचे त्रिभवन राई। तौ जन की गोद बैठिये आई।
बांभन कहै आव प्रभु मेरे। अहो ब्रह्मदेव हम तेरे।।13।।
करैं बेद धुनि दीरघ बांनीं। तिनकी केसौ नैंक न मांनी।
गावत्री सुमिरैं चित लाई। और धरम सब कीये सहाई।।14।।
इत रैदास येक पद लीनौं। सब दिन गायौ भोग नहीं दीनौं।
साढ़े तीनि पहर गये बीती। नां काहू की हारि न जीती।।15।।
दे पद भोग रह्यौ रैदासू। प्रेम उमगि जल ढारे आँसू।
अति करुनां देखी हरि जब ही। सालिगराम गोद गयौ तब ही।।16।।
जन रैदास रह्यौ उर लाई। राजा परिजा कै मनि भाई।
जै जै सबद करै सब कोई। बांभन हारि चले मुह गोई।।17।।
मुख न दिखावहि रहे लुकाई। जानौ षट मास तिजारी आई।
जीते जन रैदास निगरबी। विप्र भये ब्यंजन की दरबी।।18।।
जुग जुग जन थापे भगवाना। भगति प्रताप अनंत बखाना।
भगतन की प्रभुता हरि गावै। तिनकी सरभरि कौन करावै।।19।।

दोहा—दास अनंत भगति करै। जाति पाँति कुल खोई।
ऊँच नीच हरि नां गिनैं। भगति कीये बसि होई।।96।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरस पाँच के अंतर भइया। बहुरि कथा चीतौ रहि गइया।
झाली रानी मति की सूरी। दांन धरम सत संजम पूरी।।1।।
भोग सकल कीजत हैं ताकै। माला मंत्र नहीं गुर जाकै।
सहजै ऊपजि भई मन यंछ्या। हरषवंत भई चाहै दछ्या।।2।।
भगत येक पूछियौ बुलाई। कापैं दछ्या लीजै जाई।
तब ही भगति कीया उपदेसा। मन मैं ढूँढ़े चार्‌यू देसा।।3।।
बहुत भगत का कहूँ बखानीं। येकै भगत बताऊँ रानी।
कासी नग्र बेगि तुम जाहू। जै मेरे बचननिं पतियाहू।।4।।
जाति जुलाहा नांव कबीरा। जन सुख देव कौ आहि सरीरा।
त्रिगुन ब्रह्म लीयौ पहिचानी। ताकी दछ्या लीजै रानी।।5।।
और येक रैदास चमारा। जन नारद लीयौ औतारा।
सुद्र कहूँ तौ आवै लाजा। दरसन काजै कलपैं राजा।।6।।
पंडित मरम न जानैं कोई। बिस्न अंस औतारे हैं दोई।
इतनी सुनि रानी सुख भइया। बांनारसी कौं डेरा दइया।।7।।
बांभन संगि चले मनि जानी। हम पैं दक्ष्या लै है रानी।
झाली रोकय बरंबट जांहीं। येक दक्ष्या अरु गंगा न्हांही।।8।।
दिना बीस मैं कासी आया। रानी गुपत संदेस पठाया।
देहु जनांवं कबीरहि जाई। झाली दक्ष्या लैनैं आई।।9।।
तब कबीर मनि उपजी लाजा। मेरे कांमि न रानी राजा।
फाटी कांमरि वोढी जब ही। झाली जाइ पहूँची तब ही।।10।।
देखे सब निरगुन बैरागी। ते बैठे हैं माया त्यागी।
देखी परम कुटी संथरीया। तिन उपरि फाटी कांथरिया।।11।।
पूजा अरचा देवी न देवा। सहज समाधि लगावैं सेवा।
थारी गडव न दरब न चीरू। दूजे दिन कौं रहे न नीरू।।12।।
सारी सौंज देखी जब रानी। फिरी पीछैं मन मैं पछितानी।
चलो जहाँ रैदासा चमारू। वहू कौ देखैं ब्याहारू।।13।।
पहुँचे तहाँ न लाई बारा। देखे ऊँचे पौलि पगारा।
देखि दिवाला भयौ अनंदा। जहाँ सदा बैठे गोब्यंदा।।14।।
उपरि साठिक चँदवाँ तानीं। ऐसी सुख न देख्यौ रानी।
सोनैं भंजन कपरा पाटा। बहुत सुगंध भरे हैं माटा।।15।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झालरि झायूंझ पखावज ताला। बरन बरन फूलनिं की माला।
देखे तहाँ स्वामी रैदासा। बहुत महंत बिराजै पासा।।16।।
ऊँचे बस्तर सुंदर गीता। मुख तैं निकसै सुंदर बाता।
गरब गयौ रानी कौ तब ही। कीये डंडौत भगत जहाँ सब ही।।17।।

दोहा—चरन गहे रैदास के। दीनौं माथै हाथ।
रानी कै मनि मानियौ। भय भगत सौं साथ।।113।।

बांभन मरम न जानैं कोई। अैसैं दक्ष्या लीनी गोई।
बहुत द्रब ले आई झाली। सो सब खरच्यो घर कौं चाली।।1।।
कोस पाँच जब छाड्यौ नगरू। तब हीं बांभन मांड्यौ झगरू।
सुनि पिरोहिति लीनी माला। बांभन कोपि भये सब काला।।2।।
अगनि रूप मनि उपजी रीसा। पाथर लै ले फोरहि सीसा।
गही बाग पलटाइ रानी। कासी बहुरि पहूँचे जानी।।3।।
बांभन कोपें देहिं सरापू। निरफल ह्वै ज्यौ तेरौं जापू।
येक जु पतराभै सों मारहिं। येक जु तोरि जनेऊ डारहि।।4।।
येक जु रानी लोहू छाटैं। केस उपारै पहुचे काटैं।
येक जु बैठे घांम जु खांही। येक जु धरती परि परि जाहीं।।5।।
येक जु जीभ दाँत सौं मारैं। ये जु अपना बस्तर फारै।
येक जु दौरि दिवाले जांहीं। येक जू बिस की गाँठि चबाही।।6।।
येक जु पेटि कटारी मारै। येक कहै हत्या देहा रै।
मरन रच्यौ चमरा की पौरी। सुनत बघेलो आयौ दौरी।।7।।
मकनां दे दे आइ रानी। तब झाली मन मैं पछितानी।
भलौ करत बुरौ जै होई। करता सौं बस नाहीं कोई।।8।।
कासी नगर सबै चलि आये। पहले परचे सबनि सुनाये।
मारे मरे न सीझै काजा। सुनौ निहाइति बरजै राजा।।9।।
निज हरि भगत सेन्य है नाऊ। बांधौगढ़ तै सो चलि आऊ।
ताकौ बीच न बांभन मानैं। करि मचलई मरिबौ ठानैं।।10।।
भगत येक रैदास पठायौ। सो कबीर कौं बूझन धायौ।
बांभन पौरि हमारी मरहीं। देहु मतौ हम कैसी करहीं।।11।।
कहै कबीर न मानैं सीखा। जिनि खाई राजन की भीखा।
ब्रह्म सिखवै तौऊ न मानैं। हमहि तुमहि कमीन करि जानैं।।12।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सालिगरामहिं सौपौं न्याऊ। जै तुम अपनौं पल्लौ छुड़ाऊ।
जुगि जुगि जन की बोलै साखी। जिनि डरपौ हरि लेहै राखी।।13।।
अैसी सीख कबीर पठाई। सो रैदासि बहुत मनि भाई।
बांभन हठहि करै अपघाता। ग्यान ध्यान की सुनैं न बाता।।14।।
तब रैदास कहै समझाई। कैसो कहै सु मानौं भाई।
सालिगराम बिराजै आंनीं। यहु मति सबही कै मनि मांनी।।15।।

दोहा—झगरौ सगरौ मिटि गयौ। सुमिरन लागै संत।
सोई साँचो मानिये। जो बोलै भगवंत।।128।।

जैसौ परपंच पहिलौ भइया। तैसौ बांभन बहुरौ ठईया।
बेद मंत्र गावत्री जापू। पहर सवा द्वै कीयौ बिलापू।।1।।
इति हरि भगत सेनि रैदासू। हरि गुन गाँवैं ढारैं आँसू।
चढ़े बिवान देवता आवा। गन गंध्रप सौं अंबर छावा।।2।।
बोलै सालिगराम बिचारी। सबै सुनत है नर अरु नारी।
साँचौ साँचौ जन रैदासू। झूठे बांभन देहि जु त्रासू।।3।।
तीनि बार यूँ बोलै केसौ। तब सब ही कौ गयौ अंदेसौ।
जै जै कार भयो जग माँही। कौतिग हार सबै घर जांहीं।।4।।
जुगि जुगि जीति भगत की भईया। फूल बरषि गण ग्रंधप गया।
बांभन चले जुवा सौ हारी। ऊँचे कुल कौं आई गारी।।5।।
चले खिसांनां दूजैं हारी। जानौं मां बहन कौं हाथ पसारी।
येकादसी आहि देवठांनीं। ता दिन दक्ष्या लीनी रानी।।6।।
पून्यूँ कै दिनि झगरा भइया। झाली देसि आपनैं गईया।
सांझी बार सेन्य रैदासू। चलि आये कबीर के पासू।।7।।
आदर करि कबीर बैसारे। समाचार सब सुनें तुम्हारे।
करत परसपरि असतुति भाऊ। और भगत सब बंदै पाऊ।।8।।
साँचे हरि साँचे हरि दासा। हरि समरथ सगरे दुख नासा।
ता पीछें कीरतन कराई। निरभै भये काहू नहीं डराई।।9।।
अरध रात री सुमिरन जागे। तब बैरागी सेवा लागे।
तीन्यूँ भगत जु बैठे जब ही। दीयौ चतुरभुज दरसन तब ही।।10।।
उठि रैदास परे जब चरनां। सेनि कहै हूँ तुम्हरे सरनां।
कबीर दरसन बैठे पायौ। रूप चतुरभुज हिरदै न नायौ।।11।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबीर कौ मन त्रिगुन राचा। और मतो सब कहिये काचा।
इतनौं सुनि रैदास रिसानौं। श्रगुंन त्रिगुन येक करि जांनौं।।12।।
श्रगुन थापै सेनि रैदासा। कबीर कै त्रिगुन की आसा।
पहर येक लग कथियौ ग्यांनूं। टीकै भयौ कबीर कौ ध्यांनूं।।13।।
निरगुन कथा तै भयौ मन थीरू। गुरु समांन करि थपे कबीरू।
करि बंदना सेनि रैदासू। पहुचैं अपनैं मंदिर पासू।।14।।
निरगुन सरगुन येक बमेका। जिनि को करै आपनी टेका।
निरगुन ब्रह्म न हालै चालै। सरगुन धरि भगतन प्रतिपालै।।15।।
दास अनंत क्रिपा तैं भाख्या। भगत भेद याही मैं राख्या।
तीनि बार जब बोली साखी। तब मैं भगत परचई भाखी।।16।।
अखिर ऐको झूठौ नांही। जानैं साध असाध घरि जाँहीं।
कोटि बरस लौं जीवै कोई। रसना कोटिक पावै सोई।।17।।
दिन प्रति नवत हरि गुन गावै। तउ न करता की गति पावै।
हरि सागर मैं बूँद समानां। कोई न जानैं कहाँ हिरानां।।18।।

दोहा—हरि गुन कौंन बरनि सकै। हारै सुर नर नाग।
दास अनंत बिचारि कै। सरन गहै बड़ भाग।।

।। रैदास की प्रचई संपूरण समाप्तं।।

141341

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Access on	21-3-07
Class on	20.4.07
Cat on	
Tag etc	7-5-07
Filing	
E.A.R	
Any others	
Checked	

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

Recommended By.. प्रो० सन्तराम वैश्य

Entered in Database

Signature with Date
27/03/07

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉ० गोविंद रजनीश

जन्म

10 सितंबर, 1938 को राजस्थान के वैर कस्बे में

शिक्षा

राजस्थान विश्वविद्यालय से एम०ए०
आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० और डी०लिट्०

सैंतीस वर्षों तक विश्वविद्यालयों में अध्यापन
1 जुलाई, 1999 को प्रोफेसर-पद से सेवानिवृत्त
इस दौरान उत्तर प्रदेश सरकार के भाषा-सलाहकार तथा क० मुं० हिंदी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ के निदेशक रहे। जाने-माने साहित्यकार। तीस पुस्तकें प्रकाशित। पत्र-पत्रिकाओं के लिए नियमित लेखन

प्रमुख रचनाएँ

'समकालीन हिंदी कविता की संवेदना', 'साहित्य का सामाजिक यथार्थ', 'पुनश्चिंतन', 'समसामयिक हिंदी कविता : विविध परिदृश्य', 'रांगेय राघव का रचना-संसार', 'नयी कविता : परिवेश, प्रवृत्ति और अभिव्यक्ति' *(आलोचना)* • 'रहीम ग्रंथावली', 'सत्यनारायण ग्रंथावली', 'रैदास रचनावली', 'नामदेव रचनावली', 'पंचामृत और पँचरँग', 'बखना रचनावली', 'हिंदी की आदि और मध्यकालीन फागु कृतियाँ' *(संपादन)* • 'लोक महाकाव्य : आल्हा', 'हरदौल लोकगाथा', 'राजस्थान के पूर्वी अंचल का लोकसाहित्य', 'ब्रज की लोकगाथाएँ' *(लोकसाहित्य)*

साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन लिट्रेचर' के छह खंडों के लिए लेखन

सहस्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन, केंद्र सरकार, उ०प्र० सरकार, उ०प्र० हिंदी संस्थान, सत्यनारायण-स्मारक-समिति, आगरा विश्वविद्यालय तथा लोक परिषद् से सम्मानित एवं पुरस्कृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar